स्व० श्री० रत्नसावजी परवार, नागपुर

निधन ता. २७-४-३९

आयु ७९

निवेदन

१—इस पुस्तक की कई न्यूनताओं को जानते हुए भी अपनी वर्तमान परिस्थिति में, इसे हिन्दी जनता के सामने रखने में हमें कुछ सन्तोष ही है। हम तो इस बहाने भिन्न भिन्न विषयों के विद्वानों से अनुरोध-पूर्वक निवेदन करते हैं कि वे हिन्दी साहित्य के अन्य विविध अङ्गों पर इसी प्रकार प्रकाश डालें, और हिन्दी लेखकों तथा पाठकों के लिये विचार-सामग्री देने का अनुग्रह करें, जिससे राष्ट्र-भाषा हिन्दी के भंडार की अधिकाधिक वृद्धि होने का मार्ग प्रशस्त हो।

२—अर्थशास्त्र साहित्य सम्बन्धी लेख चार वर्ष पहिले 'गङ्गा' (सुलतानगञ्ज) में प्रकाशित हुआ। 'गङ्गा' संचालकों ने यथा-समय हमें उसको पुस्तकाकार प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान करदी। श्री० गदाधरप्रसादजी अम्बष्ट ने राजनीति की बहुतसी पुस्तकों की सूची बनायी, तथा कितनी ही पुस्तकों का कुछ कुछ परिचय भी लिखने की कृपा की। हनुमान पुस्तकालय, सलकिया, हवड़ा के प्रबन्धकों ने हमें बहुतसी पुस्तकें देखने तथा उनका परिचय लिखने की सुविधा प्रदान की। इन सब सज्जनों की इस सहायता के लिये हम बहुत कृतज्ञ हैं।

३—पुस्तक की कुछ सामग्री संकलित की जाने के बाद हमारे मन में यह विचार आया कि यदि इसमें उल्लिखित पुस्तकों

का मूल्य, पृष्ठ संख्या और प्रकाशन-तिथि भी दीजाय, तो पाठकों को उनका कुछ अधिक परिचय मिले। जो पुस्तकें उस समय हमारे सामने रहीं; उनके विषय में ही यह जानकारी दी जा सकी, शेष के विषय में नहीं।

४—इस पुस्तक में ७३ ट्रैक्टों के उल्लेख के अतिरिक्त, अर्थ-शास्त्र की १४१ और राजनीति की २११ पुस्तकों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। हमारे सामने न होने से, अन्य पुस्तकों के नाम के साथ केवल उनके लेखक और प्रकाशक का ही उल्लेख हो सका है, और कुछ का तो वह भी नहीं हो सका; इनके लेखक और प्रकाशकों से हम क्षमा प्रार्थी हैं। जो पुस्तकें हमारे पास (भारतीय ग्रंथमाला की पुस्तकों के परिवर्तन में) आएंगी, तथा जिन्हें देखने का हमें अवसर मिलेगा, उनका यथा-समय परिचय देने का प्रयत्न किया जायगा।

५—सुहृद्वर श्री० पूनमचन्दजी रांका की प्रेरणा से उदार-विचारक रईस और मालगुज़ार स्व० श्री० रतनसावजी परवार, नागपुर, ने इस ग्रन्थमाला को गतमास आर्थिक सहायता देना स्वीकार किया था, उसके आठ दस दिन बाद ही श्री० परवारजी का स्वर्गवास होगया। विशेषतया, आपकी सहायता से यह पुस्तक प्रकाशित की जारही है। भारतीय ग्रंथमाला में १६ पुस्तकें छप चुकी हैं, कुछ कारणवश इस पुस्तक पर बीच की संख्या डाली जा रही है।

विनीत

भगवानदास केला

हिन्दी में
अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य

उपोद्घात

'हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्र भाषा है'—इस विषय पर अब उन सज्जनों में मत-भेद नहीं है, जो विवेकशील हैं, और भारतवर्ष की वर्तमान परिस्थिति को अच्छी तरह समझते हैं। परन्तु इस बात पर हमें केवल अभिमान कर लेना उचित नहीं है। हिंदी भाषा के राष्ट्र-भाषा मान लिये जाने से हिन्दी-भाषा-भाषियों, हिन्द-प्रेमियों और हां, राष्ट्र-प्रेमियों का उत्तरदायित्व बहुत बढ़ गया है। यदि इस बात का समुचित विचार न रखा जायगा तो बड़ी हानि होगी।

हमारे चिन्तन और मनन का विशेषतया यह विषय होना चाहिये कि क्या भारतवर्ष की राष्ट्र-भाषा मानी जाने वाली हिन्दी में भारतीय राष्ट्र की, विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करने की सामग्री है? क्या इस भाषा का ग्रंथ-भण्डार इतना है कि साहित्य, गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति, भूगोल, इतिहास आदि सब पाठ्य विषयों की ऊँची से ऊँची शिक्षा इस भाषा द्वारा दी जा सके? क्या हमारे यहां के जिज्ञासुओं, अन्वेषकों और आविष्कारों तथा नेताओं और सूत्रधारों का कार्य विदेशी भाषा का

आश्रय लिये विना चल सकता है? फिर, जबकि हमारी उस भाषा के जानकारों के प्रतिनिधियों में गणना होती है, जो संसार की पंचमांश जनता की राष्ट्र-भाषा है तो हमारे पास संसार की वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये कितना साहित्य है? और, यदि यह अभी दूर की बात समझी जाय, तो हमें यह तो सोचना ही चाहिये गुजराती, बङ्गला, मराठी आदि भारतवर्ष की प्रान्तीय भाषाओं को देने के लिये हमारे पास क्या है? क्या हमें अपने यहां के विविध प्रांतों की, एवं संसार के अन्य देशों की विभिन्न साहित्य-धाराओं का यथा-समय तथा यथेष्ट परिचय भी मिलने के समुचित साधन विद्यमान हैं? धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक आदि स्वातन्त्र्य प्राप्ति के प्रयत्नों के साथ, भाषा और साहित्य सम्बन्धी स्व तन्त्रता के लिये हमारा 'आन्दोलन' कहां तक पर्याप्त या सन्तोषप्रद माना जा सकता है।

जहां हमें अपनी कमी, त्रुटियों या दोषों को स्वीकार करने में संकोच न होना चाहिये, वहां, इन बातों को कैसे दूर किया जाय, इस सम्बन्ध में भी खूब विचार होने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में पूर्ण रूप से प्रकाश डालने के लिये यह आवश्यक है कि भिन्न भिन्न विषयों में अनुराग रखने वाले लेखक अपने अपने विषय पर स्वतन्त्र लेख लिखकर ब्यौरेवार विचार प्रकट करें। दस वर्ष हुए, सन् १९२५ ई० में भारतीय ग्रन्थमाला के अन्तर्गत भारतीय निबन्धमाला का आयोजन किया गया था, जिसका एक उद्देश्य यह था कि हिन्दी भाषा में अर्थशास्त्र, राजनीति, विज्ञान,

इतिहास, काव्य, उपन्यास, कृषि, दर्शन आदि सम्बन्धी साहित्य का सम्यग् परिचय दिया जाय। उक्त निबन्धमाला में इस प्रकार के केवल अर्थशास्त्र और राजनीति सम्बन्धी निबन्ध ही प्रकाशित हो सके, पहिला श्री० भगवानदास जी केला लिखित, और दूसरा स्व० श्री देवीप्रसाद जी सकसेना लिखित। पहिले लेख को संशोधित और परिवर्द्धित करके हमने सन् १९३१ ई० में 'गङ्गा' में प्रकाशित कराया। और, अब उसे पुनः संशोधित और परिवर्द्धित करके राजनीति साहित्य के लेख सहित, पुस्तक-रूप में पाठकों की सेवा में उपस्थित करते हैं।

देश की उन्नति के लिये विविध प्रकार की सेवाओं की जरूरत होती है। साहित्य सेवा के लिये भी वैसे ही त्याग और परिश्रम की आवश्यकता होती है, जैसी अन्य किसी प्रकार की सेवा के लिये। साहित्य के विविध भेद हैं—और सबकी देश कालानुसार उपयोगिता होती है। निर्धन और पराधीन देश के उत्थान के लिये अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य की बहुत अधिक आवश्यता होती है—यह प्रत्येक विचारशील व्यक्ति स्वीकार करेगा।

अर्थशास्त्र साहित्य

भारतवर्ष के उन शास्त्र-स्मृतिकारों, और गम्भीर विचारकों को शतशः नमस्कार है जिन्होंने धर्म और अर्थ (एवं काम मोक्ष) का सुन्दर समन्वय किया है। कुछ लोगों का मत है कि धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिये धन से तथा धन सम्बन्धी विविध प्रयत्नों से घृणा करनी आवश्यक है, एवं आर्थिक कार्यों में धर्म के विचार मात्र को तिलांजलि दे देनी चाहिये, दुनियां में सफल होने के लिये जैसे-बने धन कमाने में जुटे रहना चाहिये। इसके विपरीत, भारतीय आदर्श यह है कि जीवन यात्रा के लिये धनोपार्जन करो, और ख़ूब करो; हां, वैसा करते समय धर्म का समुचित विचार रखो, अनीति से, छल-कपट से, लूट-खसोट से दूसरों का स्वत्वापहरण करना सर्वथा निन्द्य है।

बात ठीक ही है; भला, धन बिना किसी भी सामाजिक मनुष्य का कार्य कैसे चल सकता है। प्रत्येक आदमी को पेट भरने के लिये अन्नादि खाद्य पदार्थ चाहिये, सर्दी गर्मी के निवारण के लिये वस्त्र और मकान आदि चाहिये। फिर, हमारी मानसिक तथा अन्य शारीरिक आवश्यकताओं का क्या ठिकाना है ! सबकी पूर्ति के लिये धन चाहिये। कुछ तो ऐसी हैं कि यदि उनको पूर्ति न हो तो जीवन निर्वाह ही न हो। इस से स्पष्ट है कि धन की उपेक्षा करने वाले मनुष्य की ऊँची उड़ान और धर्म पुण्य की बातों का कुछ उपयोग नहीं हो सकता। कौन नहीं जानता कि निर्धन भारतवर्ष

में अनेक माई के लालों को रोटी के दो टुकड़ों के लिये नाना प्रकार के झूठ-सच, खुशामद, दासता और हां-हजूरी करनी पड़ती हैं! ये अपनी आजीविका की रक्षा में वहुधा अपनी आत्मा के विरुद्ध कार्य करते हैं। इनमें स्वाभिमान का प्रायः लोप हो जाता है।

भारत भूमि अनन्त काल से लेकर, अब से केवल एक-डेढ़ शताब्दी पूर्व तक संसार भर में स्वर्ण भण्डार, रत्न-गर्भा, और सोने की चिड़िया आदि प्रसिद्ध रही है,तो अवश्य ही यहां आर्थिक साहित्य प्रचुर मात्रा में रहा होगा। इस कथन में कुछ भी सार नहीं है कि प्राचीन भारतवासी केवल आध्यात्मिक विषयों में लगे रहते थे, लौकिक विषयों में उनकी कुछ गति न थी। यह स्मरण रहना चाहिये, कि हमारे चार उपवेदों में एक अर्थ वेद रहा है, और अठारह प्रधान विद्याओं में अर्थशास्त्र की गणना होती रही है, शुक्र नीति, महाभारत, मनुस्मृति आदि में अर्थशास्त्र सम्बन्धी अनेक वातों की विशद चर्चा की गयी है। कौटलीय अर्थशास्त्र के अनुसंधान ने तो इस वात का जीता जागता वृहद् तथा अखण्डनीय प्रमाण उपस्थित कर दिया कि अब से सवा दो हजार वर्ष पूर्व अर्थनीति और दण्डनीति सम्बन्धी व्यवस्था और विचारों में इतना वढ़ा हुआ था कि उसकी अनेक वातें आधुनिक काल के सभ्य और उन्नत कहे जाने वाले राष्ट्रों के लिये भी शिक्षा-प्रद हैं। अस्तु, यहां हमें अपने राष्ट्र-भाषा के आधुनिक अर्थशास्त्र साहित्य पर विचार करना है।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य का प्रारम्भ—अर्थशास्त्र को स्वतन्त्र शास्त्र का स्थान आधुनिक काल में ही दिया गया है; प्राचीन काल में भारतवर्ष में अर्थशास्त्र सम्बन्धी विवेचन तो हुआ, पर उस समय के अर्थशास्त्रों में बहुत सा अंश ऐसा है जो आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र के अन्तर्गत नहीं माना जाता। अर्थशास्त्र को स्वतन्त्र विषय मानकर इसका साहित्य तैयार करने का कार्य पाश्चात्य देशों ने आरम्भ किया; यद्यपि वहां भी कुछ प्रारम्भिक लेखकों ने इसका अन्य शास्त्रों के साथ सम्मिश्रण किया है।

निदान, पाश्चात्य देशों—विशेषतया इंगलैण्ड—के संसर्ग के कारण यहां अर्थशास्त्र के, आधुनिक रूप में प्रवेश करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अंगरेज़ी शिक्षा के प्रचार की वृद्धि होने से यहां उच्च परीक्षाओं की पाठ-विधि में यह विषय भी सम्मिलित किया गया। देश के भिन्न भिन्न विद्वानों ने इस विषय पर अपने महत्व-पूर्ण विचार प्रकट किये। परन्तु, उन्होंने प्रायः अंगरेज़ी में ही लिखा; इस लिये सर्वसाधारण हिन्दी-पठित जनता उनसे लाभ न उठा सकी। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में यहां राष्ट्रीयता के भावों की वृद्धि होने से देश-हितैषियों का ध्यान राष्ट्र-भाषा के साहित्य के विकास की ओर आकृष्ट हुआ। फल-स्वरूप बीसवीं शताब्दी में हिन्दी की भी कई पुस्तकों के दर्शन हुए।

अर्थशास्त्र साहित्य के भाग—अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य का विचार करने के लिये यह आवश्यक है कि पहले

इसके मुख्य मुख्य भागों का उल्लेख कर दिया जाय। सुभीते के लिये हम निम्न लिखित भाग करते हैं:—

[१] सिद्धान्त।

[२] भारतीय अर्थशास्त्र।

[३] प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र।

[४] आर्थिक विचारों का इतिहास।

[५] अर्थशास्त्र की भिन्न शाखाएं।

(क) मुद्रा और करैन्सी।

(ख) वैंक।

(ग) विदेशी विनिमय।

(घ) स्टाक एक्सचेञ्ज।

(च) व्यापार तथा व्यापार नीति।

(छ) आर्थिक और व्यवसायिक भूगोल।

(ज) माल भेजना।

(झ) कम्पनियां।

(ट) उद्योग धन्धे।

(ठ) वाणिज्य चक्र।

(ड) वीमा।

(ढ) वहीखाता और जांच।

(त) राजस्व।

(थ) ग्राम्य अर्थशास्त्र।

(द) सहकारिता।

(ध) म्यूनिसिपल अर्थशास्त्र और नगर निर्माण ।

(न) गणितात्मक अर्थशास्त्र ।

(प) अंकशास्त्र ।

(फ) मज़दूर समस्या ।

(ब) साम्यवाद ।

(भ) विविध ।

(म) छोटी पुस्तिकाएं ।

[६] अर्थशास्त्र सम्बन्धी मासिक पत्रिकाएं आदि ।

[७] अर्थ शास्त्र सम्बन्धी कोष ।

सिद्धान्त—बीसवीं शताब्दी में अर्थशास्त्र के विषय की बहुत उन्नति होगयी है । खेद है कि हिन्दी भाषा में सिद्धान्त सम्बन्धी वर्तमान पुस्तकों में प्रायः पुराने विचारों का ही समावेश है । अंगरेज़ी में 'मार्शल', 'पीगू', 'चेपमेन', आदि विविध लेखकों के उच्च कोटि के बड़े बड़े ग्रन्थ हैं । हिन्दी में उनके समान अभी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई । ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है, जो अंगरेज़ी के इस विषय की किसी पुस्तक से कम दर्जे की न हो ।

अब हम यह बतलाते हैं, कि इस विषय में हमारा वर्तमान साहित्य क्या है । इस सम्बन्ध में छोटी बड़ी निम्न लिखित पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं:—

<u>१—बालोपयोगी अर्थ शास्त्र</u>—ले०—श्री० ब्रजनन्दन सहाय । यह पुस्तक सन् १९०६ ई० में नागरी प्रचारणी सभा, आरा, द्वारा

प्रकाशित हुई। यह हिन्दी में सम्भवतः सबसे पहली—परन्तु बहुत ही छोटी—पुस्तक है। इसमें आठ पाठ हैं, उनमें कुछ मोटी मोटी बातों की चर्चा की गयी है। मूल्य ≈) है।

२—अर्थशास्त्र प्रवेशिका—ले०-पं० गणेशदत्त पाठक। यह सन् १६०७ ई० में इण्डियन प्रेस,प्रयाग,में छपी। इसकी कई आवृत्तियां हो चुकी हैं। यह कई शिक्षा संस्थाओं में पढ़ायी जाती है। इससे इसकी लोकप्रियता स्पष्ट है, तथापि इसके संशोधित संस्करण को आवश्यकता है। मूल्य ।≈) है।

३—पैसा—ले०—पं० चन्द्रशेखर शर्मा। यह 'पाटलीपुत्र' कार्यालय,पटना,से प्रकाशित हुई। इसकी भाषा अच्छी मनोरञ्जक है। इसमें विशेषतया उत्पत्ति, वितरण और राज्य-कर पर ही संक्षेप में विचार किया गया है। विनिमय पर बहुत कम, और उपभोग पर तो प्राय कुछ भी नहीं है। मूल्य ।≈), पृष्ठ सं० ६१।

४—सम्पत्ति शास्त्र—ले०—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। यह अपने विषय की पहली बड़ी पुस्तक है। सरल और सुबोध भी है। इसमें स्थान स्थान पर भारतीय उदाहरण दिये गये हैं। आवश्यक पारिभाषिक शब्दों के उपयोग में भी सुयोग्य लेखक ने, अच्छा परिश्रम किया है। यह पुस्तक कई वर्ष तक इस विषय के लेखकों के लिये बहुत लाभकारी रही है। पर, अब इसमें आधुनिक,नवीन विचारों और आविष्कारों का अभाव प्रतीत होता है। यदि इसके नये संस्करण में इस ओर ध्यान दिया जाय, तो अच्छा हो।

५—अर्थशास्त्र—अनु०-पं० गिरिधर शर्मा। यह श्रीमति फ़ौसेट की अंगरेज़ी पुस्तक का, सरल उदाहरणों सहित अनुवाद है। अंगरेज़ी की उपर्युक्त पुस्तक विशेष प्रामाणिक नहीं मानी जाती, तथापि अनुवादक महाशय का परिश्रम सराहनीय है। मू० १।), पृष्ठ २४६।

६—अर्थशास्त्र (प्रथम भाग)-इसके लेखक श्री० राजेन्द्रकृष्ण कुमार जी इस विषय के शिक्षक रहे हैं; आपने इस रचना को बड़े परिश्रम तथा अनुभव से प्रस्तुत किया है। इसमें केवल उत्पत्ति और उपभोग का ही विवेचन है। इसे प्रकाशित हुए नौ वर्ष होगये। अभी तक इसके दूसरे भाग देखने में नहीं आये। अच्छा हो, वे शीघ्र प्रकाशित किये जांय। मूल्य २॥) पृष्ठ ३१८।

७—अर्थविज्ञान—लेखक-श्री० मुक्तिनारायण। यह मोरलैंड साहब की अंगरेज़ी की एक सरल सुबोध पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है, और साधारणतः प्रारम्भिक विद्यार्थियों के लिये अच्छी उपयोगी है। पृष्ठ संख्या ४१४ है। मूल्य ३), सम्वत् १६८०।

८—नवीन सम्पत्ति शास्त्र—अनु०-पं० सोमेश्वरदत्त शुक्ल। यह पुस्तक सुप्रसिद्ध और प्रभावशाली लेखक जान रस्किन के कुछ लेखों का अनुवाद है। यद्यपि आधुनिक अर्थशास्त्रियों के मत से उनका मत नहीं मिलता, और वे इस विषय के प्रामाणिक लेखक नहीं माने जाते, पुस्तक पठनीय और विचारणीय है मूल्य ।–)

९—उत्पत्ति—ले०—श्री बालकृष्णजी एम० ए०। यह पुस्तक स्वाध्याय-पूर्वक खोज से लिखी गई है। क्या ही उत्तम होता, यदि

अब तक उसका नवीन संशोधित संस्करण प्रकाशित होने का अवसर आता, और साथ ही लेखक महाशय अर्थशास्त्र के अन्य भागों पर भी ऐसी ही उपयोगी रचनाएं हिन्दी संसार को भेट कर सकते। पृष्ट ५३३। मूल्य १॥)

१०—सम्पत्ति का उपभोग—ले०—श्री० दयाशंकर जी दुबे एम० ए०, और मुरलीधर जोशी एम० ए०। उपभोग के विषय पर एक मात्र अच्छी स्वतंत्र रचना है। इसमें उपयोगिता, मांग, रहन सहन, बचत, अपव्यय, दानधर्म और दुरुपयोग आदि पर प्रकाश डाला गया है। तृष्णाओं से मुक्ति, सादा जीवन और उच्च विचार आदि पर भी एक अध्याय है। मूल्य १।), प्र०-साहित्य मन्दिर, दारागञ्ज।

११—अर्थशास्त्र (अप्रकाशित)। पंण्डित जगतनारायणलाल जी, पटना, ने सिद्धांत विषयक एक सविस्तर ग्रंथ लिखा है। जब यह पूरा होकर छप जायगा तो आशा की जाती है कि इससे एक बड़े और प्रामाणिक ग्रंथ के अभाव की बहुत कुछ पूर्ति होजायगी, जिस के लिये इस समय जिज्ञासुओं को अंगरेजी ग्रन्थों का आसरा लेना पड़ता है।

भारतीय अर्थशास्त्र—इस विषय पर अभी तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं :—

१—देश का धन—ले०-श्री० राधामोहन गोकुलजी। यह भारतीय अर्थशास्त्र के सम्बन्ध में सम्भवतः सबसे पहली पुस्तक है।

आधुनिक दृष्टि से यह बहुत छोटी है। इस में अंकों का प्रायः अभाव है, इसका दूसरा संस्करण होने का अवसर नहीं आया, अन्यथा, सम्भव था कि लेखक महाशय इस का आवश्यक संशोधन और परिवर्तन कर देते। मूल्य ॥), पृष्ठ ११२ सम्वत् १९६५।

२—भारतीय सम्पत्तिशास्त्र—ले०-श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार। यह पुस्तक छपने से कई वर्ष पहले लिखी गयी थी, प्रकाशित होने के समय इस का आवश्यक संशोधन नहीं हुआ। इससे उसके अनेक स्थानों के अंश पुराने पड़ गये, तथा उन अंकों के आधार पर प्रकट किये हुए विचार भी ठीक न रहे। पुस्तक ख़ासी बड़ी और साधारणतः अच्छी है। मूल्य ५) है।

३—भारतीय अर्थशास्त्र—ले०-प्रो० अमरनाथ वाली, और मोहन लाल। इस पुस्तक में व्यापार का अंश बहुत संक्षिप्त है। उपभोग पर तो कुछ भी नहीं लिखा गया। उन पर विशेष रूप से लिखने की आवश्यकता थी। वैसे पुस्तक अच्छी और उपयोगी है। मूल्य २), पृष्ठ संख्या बड़े साइज़ की २७५। प्राप्तिस्थान, विरजानन्द प्रेस, लाहौर।

४—भारत की साम्पत्तिक अवस्था—ले०-स्व० श्री राधाकृष्ण झा। इस पुस्तक में सैद्धान्तिक विवेचन न होने पर भी बहुत विचारणीय सामग्री है, हां कई स्थानों के अंक पुराने होगये हैं, और उन अंकों के आधार पर की गई आलोचना में भी संशोधन

की आवश्यकता है। लेखक महाशय का स्वर्गवास होजाने से उनकी रचना को समयोपयोगी बनाने का उत्तरदायित्व विशेष रूप से इसके प्रकाशकों पर है। मूल्य ३॥), पृष्ठ ६३४। प्रकाशक हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता, सम्वत् १९७७।

५—भारतीय अर्थशास्त्र—(दो भाग)—ले०-श्री भगवान दास केला। यह पुस्तक भारतीय हिन्दी अर्थशास्त्र परिषद् द्वारा संशोधित और सम्पादित है। इस में अर्थशास्त्र के विविध भागों पर समान प्रकाश डाला गया है, 'उपभोग' को भी अच्छा स्थान मिला है। मूल्य २॥) है। अब इसका दूसरा संस्करण छप रहा है। प्रकाशक है, गंगा ग्रन्थागार, लखनऊ।

प्राचीन भारतीय अर्थशास्त्र—भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त विदेशी लेखक और यात्री भी इस बात को स्वीकार करते हैं कि प्राचीन काल में भारतवर्ष धन-धान्य से पूर्ण था, और यहां की जनता सुखमय जीवन व्यतीत करती थी। बड़े बड़े विद्वानों की भी कमी न थी। ऐसी दशा में यह स्वाभाविक प्रतीत नहीं होता कि यहां अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की रचना में उपेक्षा की गयी हो। परन्तु, हमारा बहुत सा पुस्तक-भण्डार नष्ट हो चुका है, और जो कुछ बचा है, उसे भी प्रकाश में लाने के लिये यथेष्ट प्रयत्न नहीं किया गया। इस समय केवल निम्न लिखित पुस्तकें पाठकों के सामने हैं :—

१-२—कौटलीय अर्थशास्त्र—इसके हिन्दी में अभी तक दो

अनुवाद प्रकाशित हुए हैं, एक श्री प्राणनाथ विद्यालंकार का, दूसरा श्री उदयवीर शास्त्री का। प्रायः दूसरा अनुवाद अधिक शुद्ध,स्पष्ट और उत्तम माना जाता है, यद्यपि इसमें भी कुछ स्थानों पर विद्वानों का मत भेद है। कहीं कहीं तो मूल प्रति में ही भूलें मालूम होती हैं, जिनके संशोधन की आवश्यकता है। निस्सन्देह मूल प्रति का यथेष्ट सम्पादन न होने तथा लेखक के आशय को पूरी तरह न समझ सकने से, अनुवाद में बड़ी भयंकर त्रुटियों का होजाना स्वाभाविक है। तथापि इस ग्रन्थ से उस समय की समाजनीति, अर्थनीति, एवं शासननीति आदि का परिचय मिलता है। इसमें सदाचार, सैनिक संगठन, रणनीति, सैनिक इमारतें, गुप्तचर, धातु विद्या आदि अनेक ऐसे विषयों का भी समावेश है जो आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र के विषय ही नहीं हैं। भिन्न भिन्न प्रकार के इतने विषयों पर एक वृहत् तथा पांडित्य-पूर्ण ग्रन्थ की रचना करना कोई साधारण कार्य नहीं है। कौटिल्य की इस प्रसिद्ध रचना की प्रशंसा पाश्चात्य देशों के बड़े बड़े विद्वानों तक ने की है। हिन्दी पाठकों को चाहिये कि अपनी इस प्राचीन सम्पत्ति का महत्व समझें, तथा इसका सम्यक् अवलोकन करें।

३—वार्हस्पत्य अर्थशास्त्र— यह अपेक्षाकृत एक छोटा सा ग्रन्थ है। इसका अनुवाद श्री० कन्नोमलजी एम. ए. ने किया है। अनुवादक महाशय ने अपनी भूमिका तथा टिप्पणियों आदि में कई विचारणीय प्रश्नों पर प्रकाश डाला है, तो भी कई स्थल

पर्याप्त रूप से स्पष्ट नहीं हैं। और अधिक विचार किये जाने की आवश्यकता है।

<u>४—कौटिल्य के आर्थिक विचार</u>-ले०—श्री० जगनलाल गुप्त और भगवान दास केला। मूल्य ॥।=), हम पहले कह आये हैं कि कौटलीय अर्थशास्त्र में आधुनिक दृष्टि से केवल अर्थशास्त्र का ही विवेचन नहीं है वरन् उसमें और भी कितने ही विषयों का समावेश है। (यही बात बार्हस्पत्य अर्थशास्त्र के विषय में कही जा सकती है।) एक मात्र अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों के लिये यह बहुत कुछ अनावश्यक और अप्रिय प्रतीत हो सकता है। अतः आवश्यकता थी कि इसमें भिन्न भिन्न स्थानों से मिलने वाली एक एक आर्थिक विषय की सामग्री एकत्र की जाय, और उसे सरल तथा सुबोध रूप में पाठकों के सामने रखी जाय। इस दृष्टि से आलोचनीय पुस्तक की अपनी विशेष उपयोगिता है। इसमें विषय विवेचन उस क्रम से रखा गया है, जिससे कि आज कल अर्थशास्त्र सम्बन्धी पुस्तकों में रहता है, इससे आधुनिक विद्यार्थियों को इसे समझने में मूलग्रन्थ की सी कठिनाई नहीं होती, तथा उन्हें केवल उन्ही बातों पर विचार करना होता है, जो वर्तमान अर्थशास्त्र का अंग होती हैं।

आर्थिक विचारों का इतिहास—भिन्न भिन्न लेखकों के अर्थशास्त्रों के अतिरिक्त हमें विदेशों तथा भारतवर्ष के भिन्न भिन्न समय के आर्थिक विचारों के इतिहास के भी अध्ययन करने की

बड़ी आवश्यकता है। भारतवर्ष के आर्थिक विचारों को हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं (१) पूर्व कालीन, (२) मध्य कालीन और (३)आधुनिक। पूर्व कालीन आर्थिक विचारों के इतिहास में कौटलीय अर्थशास्त्र तथा वार्हस्पत्य अर्थशास्त्र से बड़ी सहायता मिल सकती है। इसी प्रकार वेद, शास्त्र, स्मृति और पुराणों के विषय में अध्ययन करना चाहिये। पिछले वर्षों में बाबू साधुचरण प्रसादजी ने चवालीस स्मृतियों को एकत्रित करने का महान कार्य सम्पादित किया। उनके इस परिश्रम से बहुत लाभ उठाया जा सकता है।

आधुनिक काल के इस सम्बन्ध के इने गिने लेखकों और प्रकाशकों में श्रीमान् दामोदर सातवलेकर, औंध, (सतारा) प्रमुख हैं। आप वैदिक साहित्य के विशेष रूप से अध्ययन और अनुशीलन करने वाले हैं, आपकी रचनाओं में प्राचीन संस्कृति प्रेमियों के लिये पर्याप्त सामग्री रहती है। आपकी निम्न लिखित पुस्तकें जनता के सामने हैं, (क) वेद में कृषि विद्या, (ख) वेद में चर्खा और (ग) वेद में लोहे के कारखाने। इनका मूल्य क्रमशः ॥), ।-), और ≡) है।

मध्यकालीन आर्थिक विचारों में विशेषतया, शेरशाह, अकबर, औरङ्गजेब और शिवाजी की आर्थिक नीति पर बहुत कुछ लिखे जाने की जरूरत है। खेद है कि अभी तक हिन्दी लेखकों का ध्यान इस ओर नहीं गया। इस विषय की एक भी अच्छी पुस्तक

हमारे साहित्य भंडार में नहीं है। इस विषय के सम्बन्ध में अंगरेज़ी और मराठी में कई उत्तमोत्तम पुस्तकें हैं। यदि हिन्दी लेखक स्वतंत्र खोज न भी करें तो उनके आधार पर ही वे अच्छी सामग्री का संकलन कर सकते हैं। आधुनिक काल के आर्थिक विचारों के सम्बन्ध में भी बहुत कम साहित्य विद्यमान है। स्व० दादाभाई नौरोज़ी, स्व० महादेव गोविन्द रानाडे, स्व० गोपालकृष्ण गोखले तथा वर्तमान भारतीय अर्थशास्त्रियों के आर्थिक विचार हिन्दी जनता के सम्मुख लाये जाने की बड़ी आवश्यकता है। हमारे सामने केवल ये पुस्तकें हैं :—

१—जब अंगरेज नहीं आये थे। यह ब्रिटिश पार्लियामैंट की एक कमेटी की रिपोर्ट का अनुवाद है, और चिरस्मरणीय स्व० दादाभाई नौरोज़ी के सुप्रसिद्ध अंगरेज़ी ग्रन्थ 'भारत में निर्धनता और अ-ब्रिटिश शासन' से ली गई है। अनुवादक हैं, श्री० शिव-चरण लाल वर्मा। प्रकाशक हैं, सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। इसमें बताया गया है कि अंगरेज़ों के इस देश में आगमन से, तथा, भारतीय हितों के प्रति उनकी निन्दनीय उदासीनता से, यहां की सम्पत्ति किस प्रकार शनैः शनैः विलीयमान होगई। पुस्तक अखण्डनीय प्रमाणों के आधार पर लिखी गयी है। मूल्य ।) पृष्ठ ७४+१८।

२—ब्रिटिश भारत का आर्थिक इतिहास। यह स्व० श्री रमेश-चन्द्र दत्त की अंगरेज़ी पुस्तक का संक्षिप्त अनुवाद है। अनुवादक

हैं श्री केशवदेव सहारिया, और प्रकाशक है ज्ञान मण्डल कार्यालय, काशी। मूल्य १), पृष्ठ २१६। यह एक प्रामाणिक पुस्तक है, इस का विषय बहुत विचार और मनन करने योग्य हैं। इसके पढ़ने से भारतीय निर्धनता के कारणों को समझने और राजनैतिक असन्तोष का निवारण करने में प्रचुर सहायता मिल सकती है।

३—गरीब भारत या भारतवर्ष का आर्थिक इतिहास (अप्रकाशित)--ले०—श्री० कृष्णचन्द्रजी बी० एस-सी०, वृन्दावन। पृष्ठ लगभग १२००। इसमें ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन काल से अब तक—सन् १९३५ तक—का विवेचन है। इसमें निम्न लिखित विषय वर्णित हैं:—भारतीय दस्तकारी, व्यापार, टेरिफ़, रेलपथ, नहर, राजस्व, ऋण, भूमिकर, अफ़ीम कर, आबकारी कर, नमक कर, करेन्सी और विनिमय, सैनिक व्यय, होमचार्ज, इंगलैंड और हिन्दुस्तान के पारस्परिक लेन देन का हिसाब, भारत में विदेशी पूँजी। आशा है, यह पुस्तक छपने पर हिन्दी साहित्य में अच्छा स्थान प्राप्त करेगी।

यह तो हुई, भारतीय लेखकों के सम्बन्ध की बात। इसी प्रकार भिन्न भिन्न समय के अन्य-देशीय अर्थशास्त्रों के विचारों के अनुशीलन की भी आवश्यकता है, क्योंकि आधुनिक दृष्टि से अर्थशास्त्र में विशेष उन्नति पाश्चात्य विद्वानों ने ही की है। उन के विचारों के इतिहास का अपना विशेष महत्व है। आशा है, राष्ट्र-भाषाभिमानी लेखक इस ओर यथेष्ट ध्यान देंगे।

अर्थशास्त्र की भिन्न भिन्न शाखाओं सम्बन्धी साहित्य—अर्थशास्त्र की विविध शाखाओं में से एक एक के सम्बन्ध में स्वतंत्र पुस्तकें अभी बहुत कम हैं, कितनी ही शाखाएं तो ऐसी हैं जिन पर एक भी महत्व-पूर्ण ग्रन्थ नहीं है। बहुत सी शाखाओं पर केवल एक एक रचना से ही संतोष कर लेना पड़ता है। लेखकों के लिये बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा है। वे यदि अपने हिन्दी-प्रेम, स्वाध्याय और साहित्य-सेवा का परिचय दें तो हिन्दी का बड़ा उपकार हो।

मुद्रा और करेन्सी—इस महत्व-पूर्ण विषय पर केवल दो ही पुस्तकें देखने में आती हैं, दोनों नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, द्वारा प्रकाशित हैं:—

१—प्राचीन मुद्रा—ले०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्राचीन मुद्राओं से किसी देश के लुप्त इतिहास की अनेक बातें जानने में बड़ी सहायता मिलती है। इसलिये जिस रचना में उनका आलोचनात्मक विवरण हो, उसका महत्व स्पष्ट है। हिन्दी की इस विषय की उपर्युक्त एक मात्र पुस्तक बंगला पुस्तक का अनुवाद है। इस में भारतवर्ष के सब से प्राचीन सिक्कों के अनुकरण पर बने हुए तथा पूर्वकालीन भिन्न भिन्न सम्राटों एवं स्थानों के सिक्कों का ब्यौरा देते हुए यह बताया गया है कि इन सिक्कों से किन किन बातों पर प्रकाश पड़ता है। आवश्यकता है कि ऐसी पुस्तक का समय समय पर नया संस्करण होता रहे, जिससे उसमें नयी से नयी खोज के परिणामों का यथेष्ट समावेश हो सके।

२—मुद्रा शास्त्र—ले०—डा० प्राणनाथ विद्यालंकार । इसमें बतलाया गया है कि मुद्रा का उद्देश्य क्या होता है, इसका प्रारम्भ में क्या स्वरूप था, फिर किस प्रकार क्रमशः इसका विकास हुआ। भिन्न भिन्न धातुओं की मुद्रा की क्या उपयोगिता तथा क्या गुण दोष होते हैं। काग़ज़ी मुद्रा से क्या और किस किस सीमा तक लाभ होता है। इस पुस्तक में यह भी विचार किया गया है कि मुद्रा के चलन के सम्बन्ध में किन किन सिद्धांतों को ध्यान में रखना आवश्यक है; और भारतवर्ष को स्थिति कैसी है।

बैंक—प्रत्येक देश की आर्थिक उन्नति में बैंकों का बड़ा भाग होता है। अतः यहां एसी पुस्तकों की वड़ी आवश्यकता है जिनमें इस विषय का विवेचन हो कि यहां बैंकों को स्थिति कैसी है, उन्नति और वृद्धि में क्या वाधाएं हैं, उन बाधाओं को किस प्रकार दूर किया जासकता है, अन्य देशों में बैंकों के विस्तार के लिये क्या सरकारी और ग़ैर-सरकारी प्रयत्न किये जाते हैं, और उनके अनुभव से यहां क्या लाभ उठाया जाना चाहिये। यद्यपि अर्थशास्त्र की इस शाखा से मिलती हुई अन्य शाखाओं के साहित्य में थोड़ा बहुत विचार इस विषय का भी होता है,तथापि इस विषय सम्बन्धी स्वतंत्र पुस्तकों की आवश्यता रहती है। हिन्दी में गत वर्ष ही इस विषय की एक पुस्तक का प्रादुर्भाव हुआ है।

भारतीय बैंकिंग—ले०—श्री० द्वारकालाल गुप्त, मैनेजर, कोटा

स्टेट को-आपरेटिव बैंक लिमिटेड। प्र०—रायसाहब रामदयाल अग्रवाल, इलाहाबाद। मूल्य १।), पृष्ठ २६७ + १५। इस में वैदिक काल से लेकर अब तक के प्राचीन तथा अर्वाचीन बैंकिंग धंधे का इतिहास है, और वर्तमान विविध बैंकिंग संस्थाओं के संगठन तथा कार्यों पर प्रकाश डाला गया है। यह भी बताया गया है कि वे संस्थाएं किस प्रकार भारतीय उद्योग धन्धों और कृषि आदि के लिये अधिकतम उपयोगी हो सकती हैं। पुस्तक में आवश्यक अंक तथा कोष्टक आदि दिये गये हैं; बहुत उपयोगी है।

विदेशी विनिमय—इस विषय पर इसी नाम की पहली पुस्तक प्रो० दयाशंकर दुबे की सं० १६८३ में प्रकाशित हुई थी। तब से अब तक न तो उसका दूसरा संस्करण हो पाया और न इस विषय की किसी दूसरे लेखक की ही कोई और रचना देखने में आयी। इस पुस्तक में यथा सम्भव सरल भाषा में यह बताया गया है कि विभिन्न देशों का पारस्परिक लेन देन किस प्रकार चुकाया जाता है, विनिमय की दर पर किन बातों का प्रभाव पड़ता है और वह किन दशाओं में स्थिर रहती है। इस में भारतवर्ष की विनिमय सम्बन्धी स्थिति पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। मूल्य १), पृष्ठ संख्या १६०।

स्टाक एक्सचेञ्ज—इस विषय पर अभी तक केवल दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:—

१—<u>स्टाक एक्सचेञ्ज</u>—इसके रचयिता व्यापारिक साहित्य के

अनुभवी लेखक श्री० गौरीशंकर शुक्ल 'पथिक' हैं। औद्योगिक कारखानों के संचालनार्थ धन संग्रह करने के लिये स्टाक एक्सचेञ्ज सम्बन्धी संस्थाओं के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये ऐसी पुस्तक का बहुत प्रचार होना चाहिये। इस पुस्तक में भिन्न भिन्न प्रकार के व्यापारियों के विचारार्थ बहुत उपयोगी सामग्री दीगयी है।

२—स्टाक बाज़ार या सट्टा—इस पुस्तक के लेखक हैं, श्री० सियारामजी दुबे बी. ए., और प्रकाशक है श्री मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। मूल्य ॥≈) है। लेखक आर्थिक विषयों के अच्छे जानकार तथा उनमें रुचि रखने वाले थे। दुःख है आप का युवावस्था में ही देहान्त होगया, और १९२४ के बाद अब तक पुस्तक का नया संस्करण नहीं छपा।

व्यापार तथा व्यापार नीति—इस विषय की निम्न लिखित पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं :—

१—व्यापारी पत्र व्यवहार—ले०—श्री. कस्तूरमल बांठिया। पत्र व्यवहार से ही दूर दूर के आदमियों में सम्बन्ध स्थापित होता है। व्यापार के लिये तो यह एक मुख्य सहायक है। इस पुस्तक में आने वाले पत्र, जाने वाले पत्र, डाक के नियम, तार, व्यापारी कोड, रेल के नियम आदि पर भली भांति विचार किया गया है। पिछले दिनों डाक, तार और रेल के नियमों में परिवर्तन होजाने से पुस्तक का इन विषयों वाला अंश पुराना पड़गया है। अच्छा

हो, इसका संशोधित संस्करण जनता के सामने आवे, और व्यापारी इससे यथेष्ट लाभ उठावें।

२—दूकानदारी—ले०—श्री० नारायणप्रसाद। इस में दूकानदारी के मूल सिद्धान्त, हिसाब किताब, माल की ख़रीद, माल की लागत और नफ़ा, विज्ञापन, नक़द या उधार, आदि विषयों पर विचार किया गया है। पुस्तक, कई अंगरेज़ी ग्रन्थों की सहायता से परिश्रम-पूर्वक लिखी गयी है। सफल दूकानदार बनने के लिये इस से लाभ उठाया जासकता है। मूल्य ।॥) । प्रकाशक, गान्धी हिन्दी पुस्तक भंडार, बम्बई, सम्वत् १९७८।

३—व्यापार संगठन—ले०-श्री. गौरीशंकर शुक्ल बी० काम०। इस में व्यापार के तत्वों के अतिरिक्त कम्पनी का संगठन और संचालन, दुकानों का प्रबन्ध, विक्रय करना, और बीमे के सम्बंन्ध में विचार किया गया है। आधुनिक पद्धति का बड़े पैमाने का व्यापार इस प्रकार के साहित्य के अनुशीलन बिना नहीं चल सकता। पुस्तक बहुत उपयोगी है।

४—व्यापार दर्पण—ले०—पं० छविनाथ पांडेय एल-एल० बी०। इस में अन्यान्य बातों के साथ-साथ यह भी बतलाया गया है कि भारतवर्ष में कौन कौन वस्तु कहां किस परिमाण में मिलती है, और कौन वस्तु कितने परिमाण में विदेशों को जाती है। भारतवर्ष की व्यापारिक मंडलियों, बन्दरगाहों तथा रेलों के सम्बन्ध में भी बहुतसी आवश्यक और उपयोगी बातें दीगयी हैं। मूल्य २). पृष्ठ ४६६; प्रकाशक, मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, कलकत्ता।

५—व्यापार शिक्षा—ले०-पं० गिरिधर शर्मा। यह एक छोटी और सरल पुस्तक है। इस के कुछ विषय ये हैं, साख, विज्ञापन, साझे का व्यापार, बीमा, तेज़ी मन्दी का ज्ञान, व्यापारी ज्ञान के साधन, व्यापार के सुभीते, पत्र व्यवहार प्रमाणिकता आदि।

६—वाणिज्य या व्यवसाय शिक्षा—ले०—श्री० शिवसहाय चतुर्वेदी। प्र०-हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता। मू० ।।।=); पृष्ठ १६८; सम्वत् १९८२। इस के कुछ वर्णित विषय ये हैं:—वाणिज्य सुलभ गुण, प्रकृति और साधन, वैश्योचित शिक्षा, व्यवसाय का चुनाव, ख़रीद और बिक्री, कर्मचारी, पेटेन्ट औषधियां। पुस्तक प्रारम्भिक व्यापारियों के लिये अच्छी है।

७—व्यापार शिक्षा—ले० और प्र०—पण्डित क्षेत्रपाल शर्म्मा, मथुरा। इस पुस्तक में व्यापार विषयक कुछ उपयोगी बातों पर छोटे छोटे नोट हैं। अनेक बातों के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

८—विज्ञापन विज्ञान और उसका उपयोग—ले० और प्र०-पं० कन्हैयालाल शर्मा, कलकत्ता। इस में विज्ञापन का मनोविज्ञान से सम्बन्ध, ग्राहकों का ध्यान आकृष्ट करना, विज्ञापन किस प्रकार के होने चाहियें, कैसे विज्ञापन कहां लगाने चाहियें, आदि बातों पर अच्छी तरह विचार किया गया है। पुस्तक सचित्र है। पदार्थों की बिक्री जल्दी और अच्छे भाव से तभी होसकती है, जब विज्ञापन में कुशलता दिखाई जाय। आज कल विज्ञापन देना भी एक सुन्दर कला है। अंगरेज़ी में इस के एक एक अंग

पर कई कई पुस्तकें हैं। हिंदी-भाषा-भाषी व्यापारियों को उक्त पुस्तक से लाभ उठाना चाहिये। मूल्य १॥), पृष्ठ ११७।

९—व्यावहारिक पत्र बोध (पहिला भाग)-ले०-पं०लक्ष्मणदास चतुर्वेदी। मूल्य ॥=), पृष्ठ १०३। इस में पत्रों के लिखने की रीतियां बतायी गयी है, तथा व्यापारिक पत्रों, प्रार्थना पत्रों, प्रशंसा पत्रों और सरकारी पत्रों के तरह तरह के नमूने दिये गये हैं। भाषा सरल है।

१०—वारदाना व्यापार-इसके प्रकाशक, और शायद लेखक भी, श्री० गजानन्द रामचन्द्र इंग्रेजी, कलकत्ता हैं। मूल्य १०), पृष्ठ ५८२। इसमें वोरों और हैसियन के रोज़गारियों के जानने योग्य सब आवश्यक बातें बतायी गयी है। लगभग ४०० पृष्ठ में कोष्टक और तालिकाएं ही हैं। अपने विषय की, अपने ढंग की, एकमात्र और अच्छी पुस्तक है।

११—वनारस के व्यवसायी—ले०-बाबू भगवतीप्रसाद सिंह, प्रकाशक, ज्ञान मण्डल, काशी। सम्वत् १९७७, मूल्य ॥=) पृष्ठ ८०। पुस्तक में बनारस के भिन्न भिन्न काम करने वाले या विविध वस्तुओं के बनाने वालों पर प्रकाश डाला गया है। सामग्री संग्रह में अच्छा परिश्रम हुआ है। पुस्तक दूसरे व्यवसायी स्थानों के लिये नमूने का काम देने वाली है।

१२—व्यापार तत्व अर्थात् व्यापार शिक्षक—ले० और प्र०—

श्री० मेवालाल चौधरी, भरतपुर। इसमें व्यापार सम्बन्धी बहुत से विषयों पर छोटे छोटे लेखों में, प्रारम्भिक व्यापारियों के लिये अच्छी सामग्री दीगयी है। मूल्य ॥) आना।

१३—व्यापार समाचार—ले०-श्री० शिवप्रताप हर्ष। प्र०—खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई। पृष्ठ ५२, सं० १९६८, मूल्य लिखा नहीं। इस में हुंडी तथा सर्राफ़ी सम्बन्धी आवश्यक बातों का संकलन है, और यह भी बताया गया है कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न स्थानों में विविध वस्तुओं के तोल माप क्या होते हैं, तथा उनके व्यापार में किन किन बातों का विचार होता है।

१४—संसार के व्यवसाय का इतिहास—मूल लेखक--श्री० फ्रेडरिक लिस्ट; अनु०-श्री० हरिहरनाथ बी. ए., प्र०-ज्ञानमण्डल, काशी। मूल्य ॥≈), पृष्ठ ७८ + २१ बड़ा आकार। इस में इटली, फ्रांस, जर्मनी, रूस, अमरीका, हालैंड आदि देशों के व्यवसाय का इतिहास देते हुए सूक्ष्म तत्वों का विचार किया है। यह सिद्ध किया गया है कि किसी भी देश के व्यवसाय की प्रारम्भिक अवस्था में स्वतन्त्र या मुक्तद्वार वाणिज्य हानिकर और प्रतिबद्ध वाणिज्य लाभदायक होता है। यह बात भारतवर्ष के लिये विशेष रूप से विचारणीय है। पुस्तक प्रामाणिक है।

१५—आर्थिक सफलता—अनु०—पं० शिवसहाय चतुर्वेदी। प्र०—हिन्दी साहित्य प्रकारक कार्यालय, नृसिंहपुर। मूल्य ।≈), पृष्ठ ८८; सन् १९१७ ई०। यह एक अंगरेज़ी पुस्तक के गुजराती

अनुवाद का भाषान्तर है। इसमें कुछ मानसिक तथा नैतिक विषयों के विचारों के साथ पैसे का महत्व, पैसे को अच्छे काम में लगाने आदि का विचार किया गया है।

आर्थिक और व्यवसायिक भूगोल—इस सम्बन्ध में बहुत कम साहित्य है। हमें केवल एक ही अच्छी पुस्तक का ज्ञान है। वह है 'औद्योगिक और व्यापारिक भूगोल'। ले०—श्री० प्रोफ़ेसर शंकरसहाय सकसेना, एम. ए. विशारद, बरेली। प्रकाशक हिन्दुस्थानी एकेडेमी, प्रयाग। मूल्य ५) पृष्ट ५५२, बड़ा आकार। यह सात भागों में विभक्त है। पहिले भाग में औद्योगिक तथा व्यापारिक भूगोल के सिद्धांत दिये गये हैं। इस में मनुष्य पर भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव, भोज्य पदार्थ, औद्योगिक कच्चा माल, शक्ति के साधन, खनिज पदार्थ, पशु जगत, श्रमजीवी समुदाय तथा जनसंख्या, व्यापार मार्ग, तथा गमनागमन के साधनों का विचार है। शेष छः भागों में भारतवर्ष, एशिया, योरुप, उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका, अफ़रीका और ओशीनिया के देशों में ऊपर लिखी बातों का सविस्तर विवरण है। पृथ्वी की पैदावार तथा खनिज पदार्थ सम्बन्धी मानचित्र भी दिये गये हैं। भारतवर्ष के विषय में स्वतन्त्र विचार किया गया है। पुस्तक में ५७ परिच्छेद हैं।

कुछ समय हुआ श्री० जगन्नाथलाल गुप्त मुख़तार, बुलन्दशहर, ने 'भूगोल' पर एक वृहद् ग्रन्थ लिखा था, जिसके अन्तर्गत आर्थिक और व्यवसायिक भाग को भी अच्छा स्थान मिला

था। बड़ी मुश्किल से एक प्रकाशक ने उसे छापना आरम्भ किया था, परन्तु उसने भी सम्भवतः यह सोचकर कि ऐसी पुस्तक के ग्राहक कम मिलेंगे, उसमें पैसा फंसाना उचित न समझा। काम रोक दिया गया। हस्तलिखित प्रति पड़ी ख़राब होरही है।

माल भेजना—माल पशुओं, मोटरों, रेलों, नौकाओं, और हवाई जहाज़ों आदि द्वारा भेजा जाता है। हमारे हिन्दी लेखकों ने अभी तक केवल रेल द्वारा ही माल भेजने के सम्बन्ध में विचार किया है। इस विषय की दो पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:—

१—भारत में रेल पथ—ले०—श्री० रामनिवास पोद्दार, मथुरा। यह पुस्तक यथेष्ट परिश्रम से लिखी गई है। लेखक ने अपने वक्तव्य की पुष्टि में स्थान स्थान पर प्रमाण उद्धृत किये हैं। पुस्तक में बताया गया है कि भारत में रेलवे लाइन खोलने का वास्तविक उद्देश्य क्या था, रेलों से यहां जो थोड़ासा लाभ हुआ है तो उसके साथ प्रत्यक्ष तथा गौण हानि भी बहुत अधिक हुई, रेलें किस प्रकार भारतीय जनता के स्वास्थ्य तथा सम्पत्ति में विघ्नकारिणी हुईं। पुस्तक राष्ट्रीय दृष्टि से लिखी गयी है, और देश हितैषियों के लिए इसमें पर्याप्त विचार सामग्री है। पृष्ठ संख्या ४२३ है।

२—रेल से माल भेजने का क़ायदा—ले०—श्री० रघुनाथ नृसिंह काले। यह पुस्तक भी अपने ढंग की बहुत उत्तम है। इसके विषय

की जानकारी प्राप्त कर यात्री तथा सौदागर प्रति दिन होने वाली बहुत सी हानियों से बच सकते हैं।

कम्पनियां—बड़े पैमाने के व्यापार व्यवसाय चलाने के लिये साझेदारी की पद्धति से काम लेना और कम्पनियां स्थापित करना आवश्यक है। यहां कम्पनियों की संख्या तथा क्षेत्र क्रमशः बढ़रहा है। तथापि अभीतक इस विषय का साहित्य बहुत अल्प है। यह भी एक कारण है कि हम इस दिशा में पर्याप्त रूप से आगे नहीं बढ़ रहे हैं। इस विषय की निम्न लिखित पुस्तकें हमारे सामने आयी हैं:—

१—कम्पनी व्यापार प्रवेशिका—ले०-श्री० कस्तूरमल बांठिया। इस पुस्तक के अवलोकन करने से कम्पनियों की स्थापना तथा उनके नियम आदि के सम्बन्ध में बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त होता है। इससे कम्पनी सम्बन्धी कार्य में बहुत सुविधा तथा बचत होती है।

२—लिमिटेड कम्पनियां—ले०—बाबू ईश्वरदास जालान। इस पुस्तक से कम्पनी क़ानून के अनुसार, नई कम्पनियां खोलने वालों को इस कार्य के लिये, तथा पूर्व स्थापित कम्पनियों को सुचारु रूप से चलाने के लिये, बहुत कुछ सहायता मिल सकती है। विवेचन-शैली अच्छी है।

उद्योग धन्धे—भिन्न भिन्न उद्योग धन्धों पर बहुत सा साहित्य तैयार किये जाने की आवश्यकता है। प्रधान उद्योग

धन्धों में से प्रत्येक पर कम से कम एक तो अच्छी पुस्तक होनी ही चाहिये। खेद है कि बहुत से आदमी उद्योग धन्धों के नाम पर चाहे जैसी पुस्तक छाप कर सर्वसाधारण के पैसे ऐंठने के अभिलाषी रहते हैं। हमारे देखने में निम्न लिखित पुस्तकें आयी हैं:—

१—खद्दर का सम्पत्ति शास्त्र—अनु०—श्री० रामदास गौड़। यह श्री० ग्रेग की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद है। ग्रेग साहब का अमरीका की मिलों के कार्य से कई वर्ष घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, उन्होंने भारतवर्ष के खद्दर आन्दोलन का भी खूब अनुभव किया है। यहां जितना विदेशी माल आता है, उसमें कपड़े का खास स्थान है। लेखक ने वैज्ञानिक दृष्टि से विषय का विवेचन किया है और अन्य विचारकों के विविध सन्देहों का भली भांति निवारण भी किया है। पुस्तक प्रामाणिक है। अनुवाद भी अच्छा हुआ है मूल्य ।||=), पृष्ठ संख्या ३२३। प्रकाशक, सस्ता साहित्य मण्डल अजमेर; सन् १९२९ ई०।

२—वस्त्र निर्माण शिक्षा—ले०—श्री० विश्वम्भरसहाय वकील, चतरा, हज़ारीबाग़। इस पुस्तक में सूत को रील में या नरी में लपेटना, करघे में ताना बांधकर कपड़ा बुनना आदि विविध क्रियाओं का वर्णन किया गया है। भाषा सरल है, परन्तु शुद्ध नहीं है। चित्र भी सब पुराने ढंग से एक ही जगह इकट्ठे कर दिये गये हैं। थोड़ा और ध्यान देकर पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ायी जा सकती थी। पृष्ठ ६४, मूल्य लिखा नहीं।

३—रुई और उसका मिश्रण—ले०—श्री० कस्तूरमल बांठिया।

यह एक अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है। इस में संसार के भिन्न भिन्न स्थानों में पैदा होने वाली विविध प्रकार की रुई तथा इसकी खेती आदि के विषय में अच्छी जानकारी दी हुई है। इस में रुई के मिश्रणपर व्यापारिक दृष्टि से विचार किया गया है। आवश्यक चित्र और कोष्टक भी दिये गये हैं। पुस्तक अपने विषय की अच्छी है।

४—खद्दर शिक्षा—ले०—श्री० भगवतसिंह। इस में खद्दर तैयार करने के विषय में बहुत सी महत्वपूर्ण बातें दीगयी हैं। पुस्तक उपयोगी है।

५—तीसी—ले०—श्री० गौरीशंकर शुक्ल। यह अपने ढंग की निराली पुस्तक है। इस में तीसी अर्थात् अलसी की पैदावार, तेल खली, रेशा तैयार करने कातने आदि का सचित्र वर्णन है। बढ़िया कागज़ पर छपी है। अग्रवाल महासभा ने इसे प्रकाशित कर अन्य व्यापारिक संस्थाओं के लिये आर्थिक साहित्य वृद्धि का अच्छा आदर्श रखा है।

६—गृह शिल्प—ले०—श्री० गोपालनारायणसेन सिंह। यह पुस्तक छोटी होते हुए भी बड़े काम की है। इस में गृह शिल्प की दृष्टि से ग्रामों के जीर्णोद्धार प्रश्न पर अच्छा प्रकाश डाला गया है इस में कहां क्या होरहा है, और कहां क्या बनता है तथा बनना चाहिये, शीर्षक लेखों में विचारणीय सामग्री है। ग्राम-प्रधान भारत की जनता में ऐसी पुस्तकों का अच्छा प्रचार होना चाहिये।

पृष्ठ संख्या ६२+६ । मूल्य ॥), प्र०—ज्ञान मंडल काशी; सं० १९७८।

७—विदेशी कपड़े का मुक़ाबला कैसे किया जाय ? ले०—श्री० मनमोहन पुरुषोत्तम गांधी । प्रकाशक—सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर । मूल्य दस आने, पृष्ठ १३३। कई आवश्यक तालिकाओं और नक़शों से युक्त है। लेखक, केवल अर्थशास्त्री ही नहीं, व्यापार व्यवसाय के अच्छे अनुभवी हैं । इस में हाथ बुनाई और हाथ कताई के धन्धे का भविष्य अच्छा बताते हुए वे उपाय सुझाये गये हैं, जिनसे हाथ बुनैयों को आर्थिक तथा क़ानूनी सुविधाएं और सहायता दीजानी चाहिये ।

८—अमरीका का व्यवसाय और उसका विकास—ले०—श्री० जगन्नाथ खन्ना बी. एस-सी. । प्रेम महाविद्याविद्यालय प्रेस, वृन्दावन से प्रकाशित । मूल्य ।≈), यह इस विषय की सब से प्रथम प्रकाशित पुस्तकों में से है, बहुत सी पुस्तकों की सहायता से लिखी गई है । स्वयं लेखक ने अमरीका में कई वर्ष व्यवसाय सम्बन्धी अनुभव प्राप्त किया था । पुस्तक तथ्यांकों से पूरित है, पर अब पुरानी पड़गयी है ।

९—आलोक चित्रण अथवा फ़ोटोग्राफ़ी—यह बाबू मन्मथनाथ चक्रवर्ती कृत पुस्तक का अनुवाद है; अनुवादक हैं, श्री० श्यामसुन्दरदास बी. ए. और नन्दलाल शर्मा । मेनेजर, फ्रेंड एण्ड कम्पनी, मथुरा, द्वारा प्रकाशित है । मूल्य ।–), पृष्ठ बड़े आकार के

७१। दूसरा संस्करण, सन् १६०५ ई०। अच्छी पुस्तक है। आवश्यक विविध यंत्रों का परिचय भी दिया गया है।

१०—सुलभ वास्तु शास्त्र—यह गुजराती पुस्तक का अनुवाद है। अनुवादक हैं, श्रीकृष्ण रामकान्त गोखले, ऐञ्जिनियर, पी० डब्ल्यू० डी०, संगमनेर। मूल्य ३)। इसमें भवन निर्माण सम्बन्धी विषयों का विवेचन है। हिन्दी में यह अपने विषय को एक मात्र पुस्तक है। हमने इसे देखा नहीं है।

११—व्यापार शिक्षा—ले०—श्री०रूपनारायण गुप्त, सूर्यनारायण गुप्त। प्र०—श्री० कन्हैयालाल, पटना सिटी। मूल्य ||।), पृष्ठ १४४। इस में विविध स्याही, गोंद, लेही, तेल, वार्निश, साबुन, औषधियां और कुछ यंत्र बनाने की विधि दीगयी हैं।

१२—शिल्प माला—ले०-श्रीमति विद्याधरी जौहरी 'विशारद', और प्र०-हिन्दी भवन, लाहौर। मूल्य ३), पृष्ठ बड़े आकार के २६१, एकसौ बीस चित्रों सहित। कुछ वर्णित विषय ये हैं:—बुनने की विधि, भिन्न भिन्न प्रकार की बुनाई, क्रोशिये की प्रारम्भिक विधि, बच्चों के, पुरुषों के और स्त्रियों के भांति भांति के कपड़े। पुस्तक अपने विषय की सबसे बड़ी और सबसे उत्तम मालूम होती है।

१३—प्रेक्टिकल फ़ोटोग्राफ़ी अर्थात् अभ्यासात्मक आलोक चित्रण—ले०-श्री हरिगुलाम ठाकुर, प्र०-भारत प्रकाश यंत्रालय, गोरखपुर। पुस्तक को यथा सम्भव सरल बनाने का यत्न किया

गया है। सिद्धान्त कम हैं। 'डिवेलपिंग', टोनिंग', 'एनलार्जमेंट' आदि पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। स्थान स्थान पर आवश्यक नुस्खे भी दिये गये हैं।

१४—फोटोग्राफ़ी; सिद्धांत और प्रयोग—ले०—श्री गोरख प्रसाद डी० एस-सी०; प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ संख्या ७६०। लेखक ने विषय का अध्ययन ही नहीं, प्रयोग भी खूब किया है। अच्छा परिश्रम किया गया है। चीज़ भी अच्छी तैयार हुई है। चित्रादि भी यथेष्ट दिये गये हैं। पुस्तकान्त में अकारादि विषय सूची के अतिरिक्त, उच्चारण सहित शब्दकोष भी दिया गया है।

१५—उद्योग शिक्षा—ले०—बाबू मुख़्तयारसिंह वकील, मेरठ। प्र०—भास्कर प्रेस, मेरठ। पृष्ठ बड़े आकार के २००, मूल्य १), कागज़ रफ़, छपाई मामूली। इसमें दूकानदारी और कारख़ाने चलाने के नियम, साबुन, लाख, सरेस, खांड़ तथा अन्य कितनी ही वस्तुएं बनाने के नियम आदि का अच्छा वर्णन है, लेखक ने वर्णित विषयों का खूब प्रयोग तथा परीक्षा करके देखा है।

१६—ख़ज़ाना रोज़गार अर्थात् दौलत की खान—संग्रहकर्त्ता-बाबू गङ्गाप्रसाद गुप्त—अलीगढ़। इसमें तेल, शाक, अर्क़, मंजन, सिगरेट आदि वस्तुएं बनाने के छोटे छोटे नुस्ख़े लिखे हैं। पृष्ठ ७२, छपाई घटिया, फिर भी मूल्य १) है, जो अत्यधिक है।

१७—गुणों की पिटारी—ले०—श्री० परमानन्द, काशी।

प्र०—खेमराज श्रीकृष्णदास, बम्बई। पृष्ठ बड़े आकार के १२०। मूल्य लिखा नहीं। इस में अनेक प्रकार की धातुओं को फूँकने व सेवन करने तथा सिंदूर आदि के बनाने, साबुन, पारा, गंधक, शिंगरफ़, आदि के बर्तन बनाने, तथा अन्य विविध औषधियों और क्रियाओं का वर्णन है।

१८—गुप्त व्यापार शिक्षक—ले०—पं० रामचन्द्र वैद्य शास्त्री, अलीगढ़। मूल्य ॥) पृष्ठ ६४। तीसरी बार, सम्वत् १९९६। इस में छोटी बड़ी विविध शिल्प विषयों की शिक्षा के नुस्खे हैं, यथा केसर, कस्तूरी, हुलास, तमाखू, साबुन आदि।

१९—चित्र लेखन—ले०—ओ० हलकूप्रसाद और दत्ताचन्द गणेश। प्र०—मिश्रबन्धु जबलपुर। मूल्य १।), सन् १९३०। शिक्षकों तथा नार्मल स्कूलों के लिये मध्य प्रान्तीय शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत पाठ्य ग्रन्थ। बहुत से आवश्यक चित्रों सहित। छपाई अच्छी, और लेखन शैली उपयुक्त है।

२०—तंतु कला—ले०—प्रो० लक्ष्मीचन्द। प्र०—विज्ञान हुनर माला आफ़िस, बनारस सिटी। पृष्ठ १२७। मूल्य १) सन् १९३२। लेखक कई औद्योगिक तथा वैज्ञानिक पुस्तकों के रचयिता हैं। इस पुस्तक में सूत तथा नक़ली और असली रेशम एवं ऊन आदि के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी दीगयी है।

२१—तेल की पुस्तक—लेखक तथा प्रकाशक उपर्युक्त। मूल्य

१); पृष्ठ १५८। इसमें विभिन्न प्रकार के तेलों के सम्बन्ध में सैकड़ों उपयोगी बातें बतायी गयी हैं, मोम, चर्बी, मक्खन आदि का भी वर्णन है।

२२—वार्निश और पेंट—लेखक और प्रकाशक उपर्युक्त। मूल्य १), पृष्ठ १६०। पुस्तक में लकड़ी, चमड़ा, जिल्द, जूता, कुर्सी, लोहे के सामान, कागज़, तसवीर, बाजा पर्दा, दीवार आदि के वार्निश तथा पालिश बनाने तथा चढ़ाने के अनेक नुस्खे दिये गये हैं। इस से पाठक बहुत सी फ़ालतू पड़ी हुई चीजों का बहुमूल्य उपयोग कर सकते हैं।

२३—रंग की पुस्तक—ले०, प्र० और मूल्य उपर्युक्त। पृष्ठ १५६। पूर्वोक्त पुस्तकों की भांति ज्ञान-गर्भित है। इस में स्थान स्थान पर अंगरेज़ी शब्दों का प्रयोग हुआ है, अतः आरम्भ में रासायनिक शब्दों की परिभाषा तथा वस्तुओं के हिन्दी और अंगरेज़ी नाम दे दिये गये हैं।

२४—रोशनाई बनाने की पुस्तक—ले० और प्र०—उपर्युक्त। मूल्य ॥), पृष्ठ ५७। इसकी शैली, और विषय-विवेचन लेखक की अन्य पुस्तकों की भांति सरल और उपयोगी है।

२५—साबुन बनाने की पुस्तक—ले० और प्र०—उपर्युक्त। मूल्य १) पृष्ठ १७६। इसमें भिन्न भिन्न प्रकार के साबुन बनाने की रीतियां बतायी गयी हैं, अन्य देशों में उपभोग में आने वाली विधि का भी वर्णन है।

२६—स्वदेशी रंग और रंगना—ले०-श्री० धीरजलाल शर्म्मा। प्र०—श्री० शिवप्रसाद शर्म्मा, अकबरपुर, पोस्ट सुरीर, ज़िला मथुरा। इस में थोड़ा पूँजी से सूत को देशी रंगों से रंगने की युक्तियां दी गई हैं। नील के विलायती वर्तमान प्रचलित ढंग से रंगने का तरीक़ा भी बताया गया है। कुछ वर्णित विषय ये हैं:- प्राकृतिक रंग, रंगने के औज़ार तथा आवश्यक शिक्षा, रंगना और रंगने के पश्चात् रंगों की पहिचान। साधारण काग़ज़ और छपाई की १२८ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य १॥) है, जो बहुत अधिक है।

२७—सीने की कल—ले० और प्र०-श्री० ठाकुरप्रसाद खत्री, बनारस। आप कई पुस्तकों के रचयिता तथा 'व्यापारी व कारीगरी' के सम्पादक हैं। प्रस्तुत पुस्तक में बताया गया है कि सोने की मशीनों में विविध पुर्ज़े कौन कौन से होते हैं, उन्हें काम में लाने में किन किन बातों की सावधानी करनी चाहिये, जिससे मशीन जल्दी न बिगड़े और काम होता रहे। पुस्तक में आवश्यक चित्र भी दिये गये हैं।

२८—सुघड़ दर्जिन—ले०-उपर्युक्त। मूल्य ॥) पृष्ठ ६८। इस में बालिकाओं के लिये सीने पिरोने, काढ़ने, कपड़े काटने-छांटने, आदि की रीतियों का वर्णन है। विषय को चित्रों द्वारा उचित रीति से समझाया गया है।

२९—दर्ज़ी (सिलाई और कटाई शिक्षक)—अनुवादित पुस्तक

है—अनुवादक हैं,पं० विश्वेश्वर शर्म्मा,और प्रकाशक है,हिंदी पुस्तक एजन्सी,कलकत्ता। पुस्तक अच्छी और उपयोगी है। इसमें पुरुषों एवं स्त्रियों के विविध वस्त्रों के विषय को चित्रों द्वारा स्पष्ट किया गया है। पृष्ठ १६०। बहुत से चित्रों से युक्त है; मूल्य २)।

३०—देशी रंग—सम्पादक—रसायनाचार्य श्री० प्रफुल्लचन्द्र राय। अनु०—पं० अम्बिकाप्रसाद त्रिपाठी। मूल्य २॥)। रंगे खद्दरों के नमूने भी दिये गये हैं। वर्णित विषय हैं:—रंगों के उपादान, रंगने का सरंजाम, वज़न और माप, रंगों को समता, साधारण नियम आदि। प्रत्येय विषय को यथावत परीक्षा कर के उपयोगी पद्धतियां ही दी गयीं हैं।

३१—देशी करघा यानी हैंडलूम—ले० और प्र०—श्री०ठाकुर-प्रसाद खत्री। मूल्य ॥), पृष्ठ बड़े आकार के १११। दूसरा संस्करण, १६०६ का हमने देखा है। यह अपने विषय की सर्व प्रथम पुस्तकों में से है। खूब विचार-पूर्वक लिखो गयी है। आव-श्यक पुर्ज़ों के चित्र भी हैं। बहुत उपयोगी है।

३२—नवीन उत्तम व्यवसाय—सम्पादक—बाबू शिवदान प्रसादसिंहजी बी० ए०। प्रकाशक, अरुणोदय आफ़िस, प्रयाग। मूल्य ३) छपा था, उसे काटकर १) किया गया है; यह भी ८६ पृष्ठ की पुस्तक के लिये बहुत अधिक ही है। इसमें कुछ विदेशी व्यवसायियों के भी अनुभव दिये गये हैं। कुछ वर्णित विषय ये हैं :—एक अच्छा व्यवसाय, एक लाभकारी औषधि, खांसी

की एक दवा, धन प्राप्ति के सरल उपाय, आदि। पाठ्य विषय के बीच में जहां तहां विज्ञापन दिये गये हैं; यह अच्छी प्रवृत्ति का सूचक नहीं।

३३—नारियल के रेशे का उद्योग—'मारवाड़ी अग्रवाल' से संकलित। प्रकाशक—मारवाड़ी अग्रवाल महासभा, कलकत्ता। मूल्य ।।), पृष्ठ २४। पुस्तक बढ़िया कागज़ पर अच्छी छपी है। काम में आने वाली विविध कलों के चित्र तथा भिन्न भिन्न आवश्यक अंक आदि दिये हैं। पुस्तक उपयोगी है। सस्ते संस्करण की आवश्यकता थी।

३४—पाट, हैसियन, और बोरे—ले०-प्रो०शिवनरायणलाल, प्र०—शंकर एण्ड को०, कलकत्ता। मूल्य १।), पृष्ठ १६५। बंगाल के व्यापार में पाट आदि का स्थान कितना ऊंचा है, यह सब-विदित है। प्रस्तुत पुस्तक सरल और सुबोध है, आवश्यक अंक सूचि और कोष्टक देकर इसे अधिकतम उपयोगी बनाया गया है।

३५—स्वतन्त्र होने के सहज उपाय—ले० और प्र०—श्री० राधाकृष्ण गुप्त एण्ड को०, कलकत्ता। मूल्य २), पृष्ट २४०, सन् १९२४। इसका विषय है, स्वतन्त्र आजीविका के उपाय। इस में सुगन्धित तेल, साबुन, लाइमज्यूस, ओटो सेंट, लवेंडर, इत्र, रोशनाइयां, वार्निश, पालिश, मञ्जन, खिजाब, शर्बत, सोने चांदी की कलई तथा बहुत सी औषधियों आदि के बनाने की विधि बतायी गयी है।

३६—सूच शिल्प शिक्षक—ले० और प्र०—श्री० विपिन-बिहारीलाल बी. ए., अलीगढ़। मूल्य ॥)। इसमें दो महिलाओं के वार्तालाप के रूप में सूत और सलाई के काम की शिक्षा दी गयी है। भाषा सरल है। पुस्तक उपयोगी है। जहां तहां विषय को स्पष्ट करने वाले चित्र हैं।

३७—सूई शिल्प शिक्षा—अनु०—श्री० रामनारायण जायस-वाल। प्र०--हिन्दी पुस्तक एजेन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ १३३। मूल्य १) इसमें सैमीज, गुलूबन्द, जांघिया, बच्चों का वेस्ट बनाना, मोजे बुनना, रफू करना आदि विषयों का अच्छा विवेचन है।

३८—सुगन्धित तेल—ले०-पं० प्रभुदयाल शर्मा वैद्य, इटावा। पुस्तक रचना का उद्देश्य स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार बताया गया है। ५६ पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥) रखा गया है। अन्त में बहुत से दवाइयों के पृष्ठ जोड़ दिये गये हैं।

३९—चर्खा शास्त्र (प्रथम भाग)—ले० और प्र०—श्री० मगनलाल खुशालचन्द गांधी, सत्याग्रह आश्रम, साबरमती। अनुवादक, आश्रम का एक विद्यार्थी; मूल्य ।॥)। इस पुस्तक की उपयोगिता के विषय में आश्रम का नाम ही पर्याप्त है, कारण कि यह संस्था इस विषय के प्रयोग के लिये अग्रसर और प्रभावशाली रही है। पुस्तक में कपास, कपास की खेती, रुई की परख, धनुआ, और चर्खा—सभी के विषय में महत्व-पूर्ण जानकारी है।

४०—प्रेस की कुँजी—ले०—स्वामीदीन, प्र०-रघुनन्दनलाल, कासगंज। मूल्य ।।), पृष्ठ २४, सम्वत् १६८२। लेखक और प्रकाशक दोनों अपने विषय के अनुभवी थे, पर पुस्तक छोटी तथा मंहगी है।

४१—हिन्दी मोटर गाइड—यह श्री० विनायक गंगाधर गोखले, मि० ऐञ्जिनियर और मोटर मिकेनिक, जमखंडी, की स्वानुभव से मराठी में लिखी पुस्तक का अनुवाद है। भाषा सरल रखने का प्रयत्न किया गया है। विषय को सुबोध करने के लिये चित्र पर्याप्त मात्रा में दिये गये हैं। मूल्य १।), पृष्ठ २४६, सन १६२३ ई०।

४२—हुनर संग्रह—संग्रहकर्ता—श्री० विश्रामसिंह तिवारी। प्रकाशक—अग्रवाल ट्रेडिंग कम्पनी, काशी। मूल्य ।।।) पृष्ठ १२७ सन् १६३३। इस में साबुन, तेल, ऐसेंस, अर्क़, स्याही, रोग़न, दियासलाई, शर्बत, आदि ऐसे व्यवसायों का वर्णन है, जो थोड़ी पूँजी से चलाये जासकते हैं। कितनी ही चीज़ों के बनाने के नुसखे दिये गये हैं।

४३—साबुनसाज़ी शिक्षा—ले०—पं० नन्दलाल, प्र०-बाबू किशनलाल गोवर्द्धनदास, मथुरा। मूल्य ।।); पृष्ठ केवल ५६। यह पुस्तक हमारे सामने नहीं है।

४४—हाथ की कताई बुनाई—राष्ट्रीय महासभा के सहकारी कोषाध्यक्ष श्री० रेवाशंकर जगजीवन मेहता ने कताई के बारे में

सब से उत्तम लेख पर एक हज़ार रुपया इनाम देने की सूचना की थी। प्रतियोगिता में आये निबन्धों की जांच करके निर्णायकों ने निश्चय किया कि श्री. एस. बी. पुन्ताम्बेकर और एन. एस. वरदाचारी में इनाम की रक़म बांटदी जाय और दोनों सज्जन अपने निबन्धों को मिलाकर एक लेख तैयार करें। उस सम्मिलित लेख का अनुवाद श्री० रामदास गौड़ ने किया है। परिणाम स्वरूप यह पुस्तक प्रस्तुत हुई है। मूल्य ॥=); पृष्ठ २७४। इस में सप्रमाण यह बताया गया है कि भारत के करोड़ों आदमियों को सहायक रोज़गार की अत्यन्त आवश्यकता है, और हाथ की कताई ही उत्तम, सुलभ सहायक रोज़गार है।

४५—व्यापार महोदधि—पृष्ठ ६८। हमारे सामने की पुस्तक में कवर फटा हुआ था, अतः लेखक और प्रकाशक का नाम तथा प्रकाशन काल और मूल्य ज्ञात न हुआ। पुस्तकांत में पं० महावीर प्रसाद मालवीय वैद्य,बनारस की औषधियों आदि के विज्ञापन हैं , सम्भव है, वेही इसके लेखक, नहीं,तो प्रकाशक हों। पुस्तक में विविध वस्तुओं के तैयार करने के छोटे बड़े नुस्ख़े दिये गये हैं।

४६—नवीन व्यापार शिक्षा—ले० और प्र०—श्री० पूरणमल अग्रवाल, गोहाटी। इस में सिंदूर, ख़िज़ाब, मिस्सी, मसाले, पाउडर, वार्निश, गुलकन्द आदि विविध वस्तुओं के बनाने के नुस्ख़े संग्रह किये गये हैं। केवल ८० पृष्ठ की इस पुस्तक का मूल्य १।) है जो बहुत अधिक है।

वाणिज्य चक्र—अनुभव तथा अनुमान द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि संसार के व्यापार में तेजी मन्दी एक निर्धारित क्रम से होती है। पहले व्यापार और उद्योग धन्धों की क्रमशः वृद्धि होती है, उनकी खूब धूम मच जाती है। चरम सीमा पर पहुँचने के बाद, उन में धीरे धीरे ह्रास होने लगता है। यहां तक कि कभी कभी बहुत से व्यापारों के एक साथ डूबने या दिवाला निकल जाने की नौबत भी आजाती है। ये बातें एक चक्र के रूप में हुआ करती हैं। अमरीका और इंगलैंड में इसका हिसाब लगाना भी एक विज्ञान होगया है। वहां इस विषय की अनेक पुस्तकों का प्रचार है। हिन्दी में इसके लिये एक भी पुस्तक नहीं। यहां, अधिकांश सज्जन यह भी नहीं जानते कि इस विषय की भी कोई विद्या है। अंगरेजी में इस विषय के पढ़ने वालों में से जो महाशय हिन्दी में रचना कर सकें, उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिये।

बीमा—व्यापार व्यवसाय में तरह तरह की जोखम हुआ करती हैं। न मालूम कब किस कारखाने में आग लग जाय, या कोई जहाज डूब जाय, ऐसी दशा में आर्थिक सहायता पाने के लिये बीमा करने की विधि निकाली गयी है। अब तो बीमे का एक बड़ा रोजगार हो गया है। अनेक शहरों में तरह तरह की बीमा कम्पनियां होती हैं। हिन्दी में इस विषय की स्वतंत्र पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है।

बहीखाता और हिसाब की जांच—व्यापारिक शिक्षा

प्राप्त करने के लिये बही खाते का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु, हमारे यहां अब से कुछ समय पहिले तक इस ज्ञान को प्राप्त करने का एक मात्र साधन दूकानों की बहियों की नक़ल करना समझा जाता था। अब अंगरेज़ी ढंग से बहीखाते की शिक्षा के लिये बहुत से स्कूलों में व्यवस्था है। हिन्दी में इस विषय की निम्न लिखित पुस्तकें ही हमारे देखने में आयी हैं:—

१—<u>हिन्दी बहीखाता</u>—ले०—श्री० कस्तूरमल बांठिया। इस पुस्तक में इस विषय की सैद्धांतिक विवेचना की गयी है। भिन्न भिन्न प्रकार की बहियों, बैंक तथा चैक, हुंडी चिट्ठी का लेखा, विदेशी हुंडी, आदि पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक के अन्तिम भाग में तोल माप तथा विदेशी सिक्कों का विषय लिया गया है, जिससे भिन्न भिन्न स्थानों में होने वाले व्यापार की 'पड़-तल' लगाने में सुविधा हो।

२—<u>हिन्दी बुक कीपिंग</u>—ले०-श्री० चतुरसेन जैन। यह एक अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। इस में अंगरेज़ी ढंग के ही बही खाते को समझाया गया है। यदि अगला संस्करण अच्छी तरह सम्पादित होकर निकले तो ठीक हो।

व्यापार के सम्बन्ध में लेखा परीक्षा कितना आवश्य कार्य है, यह सब जानते हैं। बड़ी बड़ी फ़र्म और कम्पनियां सुयोग्य और प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा नियमानुसार अपने हिसाब की जांच कराती हैं। इस के अभाव में सर्व साधारण में उनका विश्वास

नहीं रहता। सार्वजनिक संस्थाएं तो क़ानून द्वारा बाध्य हैं कि समय समय पर अपने हिसाब की जांच कराएं और परीक्षक के बताये दोषों को दूर करें। इस प्रकार हिसाब की जांच के सम्बन्ध में व्यापारियों को आवश्यक नियमों का ज्ञान होना आवश्यक है। खेद है कि अभीतक हिन्दी में इस विषय की एक भी पुस्तक नहीं है।

राजस्व—राजस्व वह धुरी है, जिस पर शासन चक्र घूमता है। सरकार की फ़ौज, पुलिस, अदालतें आदि सब प्रजा द्वारा प्राप्त पैसे के बल से चलती हैं, और आर्थिक स्वतन्त्रता राजनैतिक स्वतन्त्रा का एक बड़ा महत्वपूर्ण भाग है। इन बातों से राजस्व की, तथा राजस्व सम्बन्धी साहित्य की, उपयोगिता और महत्व स्पष्ट है। हिन्दी में इस विषय पर केवल निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं:—

१—राष्ट्रीय आय व्यय शास्त्र—ले०—श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार। ज्ञान मंडल कार्यालय, काशी, ने इस अच्छी पुस्तक को छपाकर प्रशंसनीय कार्य किया है। अच्छा होता, यदि लेखक महाशय अपने विषय को कुछ और सरल तथा स्पष्ट करके इसे पाठकों के लिये अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करते। मूल्य ३।), पृष्ठ संख्या ५२६ + १०।

२—हिंदुस्थान की कर संस्थिति—ले०—श्री० सियाराम दुबे। मूल अंगरेज़ी पुस्तक १९१० में लिखी गयी थी, और केवल ब्रिटिश भारत के विषय में थी। अनुवादक महाशय ने इस में दो परि-

शिष्ट और बढ़ा दिये हैं, पहिले का शीर्षक है रियासतों में टैक्स के नियम; दूसरे परिशिष्ट में वे परिवर्तन बताये गये हैं, जो योरपीय महायुद्ध के कारण हुए हैं। तथापि पुस्तक में कुछ दोष रह गये हैं। अनुवाद की भाषा शुद्ध, सरल और अच्छी नहीं, कई स्थानों पर फुट-नोट देकर विषय को अधिक स्पष्ट और उपयोगी करने की आवश्यकता थी। फिर, मूल पुस्तक भी अपने विषय की कोई प्रामाणिक पुस्तक नहीं है। अनुवाद के लिये पुस्तक छांटने में विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये था। मूल्य ॥≈), पृष्ठ १०७। प्र०—श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। सन् १६२४।

३—भारतीय राजस्व—ले०—श्री-भगवानदास केला। इस पुस्तक में कुछ सिद्धांत का विचार करने के बाद, भारत सरकार, प्रान्तीय सरकारों, स्थानीय संस्थाओं के वार्षिक हिसाब को, व्यय तथा आय सम्बन्धी अंक देते हुए, आलोचना की गयी है। ऐसी पुस्तक का प्रति वर्ष नया संस्करण होता रहे तभी पाठकों के लिये यथेष्ट उपयोगी हो सकती है। आशा की जाती है कि नवीन शासन विधान अमल में आना आरम्भ होने पर इसका अगला संस्करण छप सकेगा। मूल्य ॥।≈), पृष्ठ २१४। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन।

ग्राम्य अर्थशास्त्र—भारतवर्ष की ६० फ़ी सदी जनता देहातों में रहती है। यह देश वास्तव में देहातों का देश है। अतः

गांव वालों के विविध आर्थिक प्रश्नों पर यथेष्ट साहित्य होना अत्यन्त आवश्यक है। इस विषय की निम्न लिखित पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं :—

१—ग्राम संस्था—ले-श्री० शंकरराव जोशी। इसमें पाश्चात्य और प्राच्य ग्राम संस्थाओं के विषय में ऐतिहासिक तथा अन्य आवश्यक बातें बतला कर भारतीय ग्राम-रचना के विषय में विचार किया गया है और भारतवर्ष की ग्राम संस्थाओं के पुनरुद्धार पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। एक परिच्छेद 'भूमि का मूल्य और भूमिकर' भी है, जिस में अच्छी विचार-सामग्री दी गयी है। मूल्य १); पृष्ठ संख्या १७२। प्रकाशक-श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर।

२—ग्राम सुधार (दो भाग)-ले०-श्री० राजेन्द्र। इसमें भारतीय ग्राम्य जनता के विषय में कृषि, गोपालन, मुक़दमे बाज़ी, स्वास्थ्य आदि कई आवश्यक और उपयोगी लेखों का संग्रह है। पुस्तक की छपाई साधारण है, सम्पादन ठीक नहीं हुआ है। इसमें बहुत सुधार और संशोधन की आवश्यकता है। मालूम हुआ है है कि लेखक महोदय अब एक स्वतंत्र बड़ी पुस्तक लिख रहे हैं।

३—भारत में कृषि सुधार—ले०-प्रो० दयाशंकर दुबे। इस में हिसाब लगाकर यह बताया गया है कि वर्तमान दशा में भारत के अधिकांश आदमियों को प्रति दिन दो समय भरपेट भोजन नहीं

मिलता। उनकी दशा सुधारने के लिये सरकार को कृषकों से मिलकर किन किन उपायों को काम में लगाना चाहिये, इस विषय पर भी विचार किया गया है।

४—ग्रामीय अर्थ शास्त्र—ले०—प्रो० ब्रजगोपाल भटनागर, कामर्स डिपार्टमैंट, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्र०—हिन्दुस्थानी ऐकेडेमी प्रयाग। मूल्य ४); पृष्ठ संख्या बड़े आकार की ३१५। कई चित्रों और अंक-सूची सहित। यह इस विषय का अच्छा क्रमबद्ध ग्रंथ है। भारतवर्ष के गांवों और कृषि के विषय में सविस्तर विचार किया गया है। कुछ अन्य वर्णित विषय ये हैं:—पैदावार का विनियोग, पशुओं की समस्या, खेती का मूलधन, भूमि सम्बन्धी क़ानून, खेती के सहायक तथा खेती पर निर्भर व्यवसाय, ग्राम्य जीवन का पुनरुद्धार।

५—ग्राम सुधार—ले०—पं० गणेश दत्त शर्मा गौड़, "इन्द्र" विद्यावाचस्पति। प्र०—श्री म० भा० हि० सा० समिति, इन्दौर। मूल्य १) इसमें ग्राम शिक्षा, उद्योग धन्धे, पशु पालन, नशेबाज़ी, खाद आदि ग्राम सम्बन्धी विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। वर्तमान त्रुटियों के सुधार की योजना भी बताई गई है।

६—ग्राम्य संगठन—ले०—श्री० शिवलाल शर्मा, प्र०—ग्रामीण ग्रन्थमाला, वगदा (आगरा)। मूल्य ॥), पृष्ठ १२४। सं० १९८५। इस में वर्णित कुछ विषय ये हैं:—न्याय विभाग, सरकारी अदालतें, पंचायत और सामाजिक कुरीतियां, शूद्र और हिन्दू समाज,

सफ़ाई और शिक्षा प्रचार आदि। इस में शुद्धि आन्दोलन पर भी ज़ोर दिया गया है।

सहकारिता--कुछ समय से किसानों की आर्थिक दशा सुधारने के उद्देश्य से जगह जगह सहकारी (को-आपरेटिव) बैंकों की वृद्धि होरही है। संयुक्त प्रान्त तथा मध्य प्रदेश के सरकारी सहकारिता विभागों की ओर से इस विषय के मासिक पत्र निकलते हैं, तथा कुछ पुस्तकें भी प्रकाशित होती हैं। कुछ लेखकों ने अर्थ शास्त्र में, और कुछ ने शासन पद्धति सम्बन्धी पुस्तकों में थोड़ा बहुत प्रकाश इस विषय पर डाला है। परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। इस विषय पर अच्छी स्वतन्त्र पुस्तकों की आवश्यकता श्री० प्रोफ़ेसर शंकरसहाय सकसेना एम. ए., विशारद, बरेली, ने श्री० भगवानदास केला के अनुरोध से सहकारिता पर एक अच्छी पुस्तक लिखी थी, दुर्भाग्य से वह चुराली गयी। इससे आप कुछ हतोत्साह तो हुए, परन्तु कुछ समय बाद आप पुनः इस विषय की पूर्ति के लिये मनोयोग--पूर्वक लगगये और उसे पुनः समाप्त कर दिया। अब यह अनुकूल प्रकाशक की प्रतीक्षा में पड़ी है।* इसका संक्षिप्त परिचय आगे दिया जाता है।

भारतीय सहकारिता आन्दोलन—पृष्ठ लगभग ४००, परिच्छेद २०। इसमें वर्णित विषय हैं :—सहकारिता का सिद्धान्त,

* खेद है कि हम अपनी लिखवाई पुस्तक को भी, धनाभाव के कारण, भारतीय ग्रन्थमाला में प्रकाशित नहीं कर सकते।

—भगवानदास केला।

भिन्न भिन्न प्रकार की समितियां, भारतवर्ष में श्रीगणेश, सहकारिता क़ानून, ग्रामीण ऋण की समस्या, ग्रामीण और नागरिक साख समितियां, सेन्ट्रल बैंक, प्रान्तीय बैंक, भूमिबन्धक बैंक, मितव्ययिता समितियां; दूध, चकबन्दी, स्वास्थ, कृषि, सिंचाई, शिक्षा, ग्राम सुधार, और गृह निर्माण समितियां, संयुक्त सहकारी मज़दूर तथा कृषि समितियां; क्रय विक्रय समितियां, उत्पादक समितियां आदि। आन्दोलन की प्रगति, त्रुटियों तथा सफलता पर भी विचार किया गया है,साथ में इस बात का भी दिग्दर्शन कराया गया है कि विदेशों में उपर्युक्त समितियां किस प्रकार कार्य कर रही हैं।

म्युनिसिपल अर्थशास्त्र और नगर निर्माण—भारतवर्ष में म्युनिसिपैलिटियों का क्षेत्र तथा नगर निर्माण का कार्य क्रमश बढ़ता जारहा है। नगरों की उन्नति तथा उनके आय व्यय सम्बन्धी सिद्धांतों के विवेचन वाली पुस्तक अंगरेज़ी में अनेक हैं। हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का अभाव बहुत खटकता है लेखकों को एवं प्रकाशकों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

गणितात्मक अर्थ शास्त्र—अर्थशास्त्र के सिद्धांतों को मालूम करने तथा उन पर विचार करने की जो विविध पद्धतियां हैं, उनमें गणित का भी बहुत उपयोग किया जाता है, यहां तक कि इस प्रकार अर्थशास्त्र का एक स्वतन्त्र ही भाग बनगया है, जिसे गणितात्मक अर्थशास्त्र कहते हैं। अंगरेज़ी में इस विषय की बहुतसी पुस्तकें हैं, भारतवर्ष में अभी केवल मैसूर और

प्रयाग के विश्वविद्यालयों ने ही इसे अपने पाठ्य क्रम में स्थान दिया है। प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी जानने वाले प्रोफ़ेसरों तथा डिग्री लेने विद्यार्थियों को हिन्दी में इस विषय के साहित्य की पूर्ति करने का प्रयत्न करना चाहिये।

अंक शास्त्र—इस शास्त्र के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि अंकों का ठीक उपयोग किस प्रकार किया जासकता है। इससे न केवल अर्थशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान में वृद्धि होती है, वरन् अन्य कई शास्त्रों तथा विज्ञानों के विवेचन में भी बड़ी सहायता मिलती है। इस विषय पर हिन्दी में अभी छोटो या बड़ी एक भी पुस्तक नहीं है। श्री० दुबेजी की अंगरेज़ी पुस्तक के अनुवाद की बात चल रही है।

मज़दूर समस्या—आज कल संसार में मज़दूरों की समस्या अत्यन्त कठिन हो रही है; मुख्य व्यवसाय केन्द्रों में कहीं कहीं तो लाखों मज़दूरों को एकही स्थान में काम करना पड़ता है। इस प्रकार उनके रहन सहन, स्वास्थ तथा शिक्षा आदि के सम्बन्ध में अनेक समस्याएं उपस्थित होती हैं। नागरिक जनता में मज़-दूरों की संख्या का अच्छा अनुपात होने से, वे समस्याएं बहुत व्यापक रूप धारण करलेती हैं। उन पर विचार करने के लिये अन्य उन्नत भाषाओं में कई मासिक पत्र तथा रिपोर्ट निकलती हैं, एवं अनेक पुस्तकें भी हैं। हिन्दी प्रेमियों को भी हिन्दी के इस विषय के साहित्य की कमी को दूर करना चाहिये। हमारे

सामने इस विषय की केवल एक पुस्तक है:—

मालिक और मजदूर, अथवा शिल्प विधान—ले०—श्री० गौरी-शंकर शुक्ल, 'पथिक' । प्र०—कलकत्ता पुस्तक-भंडार, कलकत्ता। पृष्ठ १०२, मूल्य ।≈)। इसमें मजदूरों की अवस्था, स्त्री श्रम-जीवियों की समस्या, भारतवर्ष के कारखाने के क़ानून, मजदूरी, कारख़ानों की अवस्था, मजदूरों के रहने के स्थान, मजदूरों की शारीरिक अवस्था, मजदूरों का संगठन, हड़ताल आदि विषयों पर सरल सुबोध भाषा में अच्छा विचार किया है।

साम्यवाद—आधुनिक युग में श्रमजीवियों की शक्ति क्रमशः बढ़ती जारही है। वे धनिकवर्ग तथा शासकवर्ग पर कहीं प्रत्यक्ष और कहीं अप्रत्यक्ष विजय प्राप्त करते जा रहे हैं। इससे धनोत्पादन और धन वितरण पद्धति में पहले की अपेक्षा बड़ा अन्तर उपस्थित होता जारहा है। समाज का ढांचा ही बदल रहा है। हिन्दी में अभी इस विषय का साहित्य बहुत कम है। हमारे देखने में निम्न लिखित पुस्तकें आयी हैं:—

१—बोलशेविज्म—ले०—श्री० विनायक सीताराम सरवटे। इस में रूस का आधुनिक इतिहास देकर यह बतलाया गया है कि बोल्शेविज्म की उत्पत्ति कैसे हुई, इसका मुख्य सिद्धान्त क्या है, रूस की राज्य व्यवस्था और समाज व्यवस्था कैसी है। अन्त में बोल्शेविक कार्यक्रम और औद्योगिक व्यवस्था पर विचार करके इस प्रश्न पर भी प्रकाश डाला गया है कि क्या बोल्शेविज्म

भारत में आयगा। उपोद्घात श्री० बाबू भगवानदासजी, काशी, का लिखा हुआ है। पृष्ठ १८५, मूल्य १।=), सन् १९२१।

२—रूस की सैर—ले०—श्री० जवाहरलाल नेहरू। इसमें लेखक ने अपने प्रत्यक्ष अनुभव लिखे हैं। इस में आर्थिक विषयों से सम्बन्ध रखने वाले मुख्य परिच्छेद ये हैं :- सोवियट प्रणाली, साम्यवादी सोवियट प्रजातन्त्र संघ की शासन प्रणाली, केन्द्रवर्तीय कृषक भवन, शिक्षा तथा किसान, और भूमि।

३—वर्तमान रूस—ले०—श्री० देवव्रत शास्त्री। इस पुस्तक में रूस की आर्थिक दशा का अच्छा विवेचन किया गया है। इससे पता लगता है कि वर्तमान सरकार के समय में रूस की किस प्रकार कितनी उन्नति हुई है।

४—साम्यवाद—ले०—श्री० रामचन्द्र वर्मा। इस पुस्तक में भिन्न भिन्न देशों के विविध प्रकार के साम्यवादों की उत्पत्ति और विकास के इतिहास के साथ साथ यह भी बतलाया गया है कि समानाधिकार, राज्य की कार्य योजना, व्यक्ति स्वातन्त्र्य, कुटुम्ब, धर्म, साहित्य, सेना, और पर-राष्ट्रनीति के विषय में साम्यवादियों के क्या सिद्धान्त हैं। पुस्तक के अन्त बोल्शेविज्म तथा भारतीय परिस्थिति पर विचार किया गया है। पुस्तक का विषय यथा-सम्भव सरल और स्पष्ट किया गया है। बहुत अच्छी रचना है। मूल्य २॥), पृष्ठ ४९२, सं० १९७६।

५—साम्य तत्व—अनु०—श्री चन्द्रिकाप्रसाद वाथम। यह

स्व० बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय की बंगला पुस्तक का अनुवाद है। बंकिम बाबू की भाषा के विषय में कुछ कहना व्यर्थ है। आपने कठिन विषय को भी अपनी मनोरञ्जक भाषा द्वारा सरल और रोचक बना दिया है। अनुवाद अच्छा हुआ है। पुस्तक छोटी होने पर भी बहुत उपयोगी है।

६—वैज्ञानिक साम्यवाद—अनु० और प्र०—श्री० रामचन्द्र वर्मा, काशी। यह अंगरेजी के एक अच्छे विचार-पूर्ण निबन्ध का अनुवाद है। इसमें साम्यवाद की सिद्धांत-रूप से विवेचना की गई है। इसके कुछ विषय ये हैं:—क्रांन्ति का काम, पूँजीदारी का प्रश्न, शिल्पीय साम्यवाद। मूल्य ≡)

७—कम्यूनिज्म क्या है—ले०-श्री० राधामोहन गोकुलजी। इसमें यह बतलाया गया है कि कम्यूनिस्ट विचारों के अनुसार जीवन के प्रत्येक अंग और समाज की हर एक संस्था पर क्या प्रभाव पड़ता है। कुछ वर्णित विषय ये हैं:—शासन तृष्णा, असि नीति, धन, राष्ट्रीयता, सेना, न्याय, शिक्षा, धर्म, और कृषि।

८—हमारे ज़माने की गुलामी—मूल लेखक—म० टाल्सटाय; अनु०—श्री० सत्येन्द्र। पृष्ठ १०० । मूल्य ।), प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। इसके वर्णित विषय ये हैं:—साम्यादर्श का दिवाला, गुलामी की जड़ क़ानून, यंत्रालय, सरकार क्या है? सरकारें कैसे उठाई जांय?

९—बाइसवीं सदी—ले०—श्री० राहुल सांकृतायन। प्र०—

युगान्तर पुस्तक माला, महेन्द्रू, पटना। मूल्य १), पृष्ठ १८२। लेखक ने संसार के आर्थिक विचारों की प्रगति का विचार करके, विशेषतया भारत की भावी दशा का अनुमान किया है; कल्पना तथा वर्णन शैली प्रशंसनीय तथा विचारणीय है। सार्वभौम एकता, विश्व की शान्ति, या आर्थिक समस्याओं का अन्त हो कर साम्यावस्था का आगमन, किसे अच्छा न लगेगा!

१०—साम्यवाद ही क्यों?—ले० और प्र०—उपर्युक्त। मूल्य ॥), पृष्ठ ६४। छपाई आदि आकर्षक। इसमें पूँजीवाद की भयंकरता, साम्यवाद का जन्म, और साम्यवाद में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, आदि विविध प्रश्नों के हल, आदि पर सम्यग् और स्वतंत्र विचार किया गया है।

११—रोटी का सवाल—प्रिंस क्राप्टकिन की अंगरेज़ी पुस्तक के, भारतीय दृष्टि से आवश्यक भागों का अनुवाद। प्रकाशक—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। पृष्ठ २७३। मूल्य १) प्रिंस क्राप्टकिन ने साम्यवाद का खूब चिन्तन और मनन किया है। उन की लेखनी में ओज है, विचारों में प्रौढ़ता है। वह साम्यवाद—सब के सुख—को प्रत्यक्ष आते हुए देखते हैं, और उसके स्वागत की तैयारी के लिये सब से अनुरोध करते हैं। हिन्दी अनुवादक हैं, श्री० गोपीकृष्ण विजयवर्गीय। अनुवाद अच्छा है।

१२—रूस का पञ्च वर्षीय आयोजन—यह अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद है, परन्तु लेखक ने रूस का संक्षिप्त इतिहास भी जोड़

दिया है, जिससे पाठक रूसी प्रजा के मनोभावों, विचारों के परिवर्तन, आदर्शवाद, विशेषतया साम्यवादी कल्पनाओं को अच्छी तरह समझ सकें। रूस ने संसार को अपने पंचवर्षीय आयोजन से चकित कर दिया था, बहुत से देश उस का उपहास करते थे, किसी को उस कार्य के पूरा होने का विश्वास न था। अनेक शक्तियों ने उस में भरसक बाधा डाली। पर अब तो रूस ने उसे पूरा करके और आगे क़दम बढ़ा लिया है। पुस्तक विचारपूर्ण है, तथ्यांकों से भरी है, सामुहिक औद्योगिक साहस का जीता-जागता प्रमाण है। अनु०—ठाकुर राजा बहादुरसिंह; प्र०—साहित्यमण्डल, दिल्ली, मूल्य ४॥)

१३—साम्यवाद का संदेश—ले०—श्री० सत्यभक्त। मूल्य ॥), पृष्ठ १०५। प्र०—पं० काशीनाथ वाजपेयी, प्रयाग। पुस्तक का आधा भाग सुप्रसिद्ध योरपीय विद्वान प्रिंस क्राप्टकिन का 'नवयुवकों से दो बातें' शीर्षक निबन्ध है। अन्य लेखों में सरल सुबोध भाषा में साम्यवाद और बोलशेविज्म का अर्थ बताया गया है।

विविध—अर्थ शास्त्र से सम्बन्ध रखनेवाली कुछ पुस्तकें ऐसी हैं जो इस विषय की उपर्युक्त किसी शाखा विशेष से सम्बन्धित न होने पर भी उपयोगी हैं। उनमे से हमारे देखने में आयी हुई निम्न लिखित उल्लेखनीय हैं:—

१—मातृ-भूमि अब्द कोष—ले०—श्री० रघुनाथ विनायक धुलेकर। यह अपने ढंग की एक मात्र पुस्तक है। इसका प्रथम

संस्करण १९२९ और दूसरा १९३० सम्बन्धी प्रकाशित हुआ था। इसमें राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, साहित्य और शिक्षा सम्बन्धी परिस्थिति का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है। आर्थिक विषयों में आर्थिक कान्फ्रेंस, चेम्बर आफ़ कामर्स, किसान मज़दूर कान्फ्रेंस, ज़मींदार ऐसोसियेशन, मज़दूर आन्दोलन और भारत के उद्योग धन्धे आदि की उपयोगी चर्चा की गयी है। ऐसी पुस्तक का प्रति वर्ष नया संस्करण होता रहना चाहिये।

२—भारत में दुर्भिक्ष—ले०-पं० गणेशदत्त शर्मा। मूल्य १॥।), पृष्ठ २५२; सम्वत् १९७७। इस में इस देश की निर्धनता पर अच्छा विचार किया गया है। यहां के व्यापार, कृषि, पशु आदि की स्थिति के अतिरिक्त, लोगों की आर्थिक और सामाजिक दशा तथा विदेशी माल की आयात से होनेवाली हानि की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया गया है।

३—देश दर्शन—ले०—ठा० शिवनन्दनसिंह। इस में भारतीय जन संख्या के प्रश्न पर गम्भीर विवेचना पूर्ण विचार किया गया है, और यह कैसे रुक सकती है तथा सन्तान को किस प्रकार शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अधिक योग्य बनाया जाना चाहिये, इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। स्थान स्थान पर अन्य देशों की स्थिति का परिचय, अंक, चित्र और कोष्टक आदि दिये गये है। सन् १९२२ ई० में प्रकाशित इसका तीसरा संस्करण हमारे सामने है। मूल्य २), पृष्ठ संख्या २१९।

४—भारत दर्शन—ले०-श्री०सुखसम्पतिराय भण्डारी, इन्दौर। इसका कुछ विषय राजनैतिक तथा ऐतिहासिक है। उसके अतिरिक्त, इस में भारतवर्ष के प्राचीन वैभव और ऐश्वर्य का दिग्दर्शन कराते हुए बतलाया गया है कि मुग़ल शासन के अन्त तक भी यह देश साधारणतः कितना सुखी था, और ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासनकाल के आरम्भ से किस प्रकार यहां की आर्थिक दशा क्रमशः शोचनीय होती गयी।

५—व्यय—ले०—पं० श्यामविहारी मिश्र, और शुकदेवविहारी मिश्र। इस में पाठकों का ध्यान अपव्यय से बचने और सद्व्यय करने की ओर आकर्षित किया गया है। प्रत्येक बात उदाहरणों द्वारा अच्छी तरह समझायी गयी है। इसके कुछ विषय ये हैं:—द्रव्य गाड़ रखने से हानियां, बैंक में रुपये जमा करने से लाभ, कुपात्रों को दान देना, मादक पदार्थ, मुक़दमेबाज़ी आदि। पुस्तक के अन्त में स्वदेशी वस्तुओं को व्यवहार में लाने के लिये अपील की गयी है। मूल्य ।) पृष्ठ ६८।

६—व्यवहार शास्त्र—ले०-पं० रामानुग्रह शर्मा, व्यास। प्र०-'राम' कार्यालय, लंका, काशी। मूल्य १), पृष्ठ २५६। इस में ग्राम संगठन, समाज संगठन, धार्मिक संगठन, खेतीबारी, पशु पालन, गोरक्षा आदि विविध लेखों का संग्रह है। भाषा सरल है, और विचार व्यवहारोपयोगी हैं।

७—इन्कम् टैक्स क़ानून—अनु०-श्री० प्रबोधकमारदास गुप्त,

प्र०—बम्बई पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ संख्या ५२, मूल्य ।।=), पुस्तकांत में आवश्यक फ़ार्म आदि के नमूने दिये गये हैं।

८—हिन्दी में इनकम टैक्स ऐक्ट—ले०—श्री० कन्हैयालाल गार्गीय, ब्यावर। प्र०-श्री० भगवानदास गार्गीय, ब्यावर। मूल्य ।।), पृष्ठ ८०। पुस्तक में आवश्यक उदाहरण और परिशिष्ट हैं।

९—भारत का सरकारी ऋण—प्र०—काशी विद्यापीठ, बनारस। दो भाग, मूल्य ।।।)+।=),पृष्ठ बड़े आकार के ८८+३८। पुस्तक कांग्रेस कार्य समिति की ओर से प्रस्तुत इस विषय की रिपोर्ट का संक्षिप्त अनुवाद है;बहुत विचार और गवेषणा पूर्वक लिखी गयी है। विषय भी महत्व का है, सैकड़ों करोड़ रुपये का प्रश्न है।

१०—व्यापाररत्न संग्रह—ले०—श्री० मोतीलाल। मूल्य ।।) पृष्ठ ६१। कुछ वर्णित विषय ये हैं :—तार के कायदे, बाज़ार की हालत बताने वाले शब्द, घट-बढ़ बताने वाले शब्द, तार और सट्टा सम्बन्धी शब्द, अंगरेज़ी शब्दों का उच्चारण और समानार्थ-वाची शब्द, शेयर, हुंडी, रूई का बाज़ार आदि।

११—स्वदेशी रहस्य—ले० तथा प्र०-श्री० शिवनारायणसिंह, लहेरियासराय। मूल्य ।।) पृष्ठ ८७, सम्वत् १९८१। इसमें भारत के प्राचीन शिल्प की झलक दिखायी गयी है, तथा वर्तमान दशा में उसके उद्धार के उपायों पर विचार किया गया है।

१२—हिन्दी में अर्थ शास्त्र और राजनीति साहित्य—ले०—

श्री० दयाशंकर दुबे एम. ए., और भगवानदास केला। यह पुस्तक आपके हाथ में ही है।

छोटी पुस्तिकाएँ (ट्रैक्ट)—समय समय पर कुछ छोटी छोटी पुस्तिकाएं भी निकलती रहती हैं। ये या तो किसी बड़ी पुस्तक का कोई भाग होती हैं, या किसी मासिक आदि पत्र में प्रकाशित लेख या लेखमाला का पुस्तकाकार संग्रह होती हैं, अथवा लेखक की स्वतन्त्र छोटी रचना होती हैं। इनका विशेष परिचय देने की सुविधा नहीं है, तथापि कुछ का उल्लेख कर दिया जाता है,जिससे पाठकों को सामयिक प्रवाह का कुछ बोध हो सके।

सन् १९१८ ई० में श्री० प्रोफेसर बालकृष्णपति भीमपुरे, एम. ए., ग्वालियर, ने हिन्दी अर्थशास्त्र की दुअन्नी पुस्तक माला का कार्य आरम्भ किया था। इसके अब तक केवल चार ट्रैक्ट देखने में आये हैं :- (क) उत्पादकों का बटोतरा, (ख) रुपया, पैसा, धन, और (ग) सहकारिता; चौथा इस समय हमारे सामने नहीं है, और उसका नाम भी हमें स्मरण नहीं रहा। यह स्पष्ट है कि ग्राहकों की कमी अथवा संगठित व्यवस्था के अभाव से इस कार्य में बड़ी शिथिलता है।

अन्य कुछ ट्रैक्टों के नाम ये हैं:—

१—घर का रंगरेज़।

२—चर्खा प्रचारक।

३—एक मात्र घरेलू धन्धा; चर्खा।

४—खद्दर ही क्यों ?

५—खद्दर के बारे में।

६—मिल की माया।

७—दियासलाई और फ़ासफ़ोरस।

८—व्यापार शिक्षक।

९—व्यापार रत्नमाला।

१०—भारतीय किसान।

११—रंग कला।

१२—शिल्प ज्ञान और विज्ञान।

१३—किसानों का अधिकार।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी मासिक पत्रिका आदि—समय समय पर अर्थशास्त्र सम्बन्धी ऐसे प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिन पर नियमित रूप से विचार होने के लिये अनुकूल स्थान उन्हीं पत्र पत्रिकाओं में मिल सकता है, जो एक मात्र अथवा प्रधानतया अर्थशास्त्र-विषयक हों। यों तो कभी कभी अन्य साधारण पत्रों में भी इस विषय के कुछ लेख निकलते रहते हैं, परन्तु उनसे पाठकों को अर्थशास्त्र का यथेष्ट ज्ञान नहीं होता। कुछ विशेष रूप से अर्थशास्त्र विषयक लेख रखने वाले, हिन्दी के दो मासिक पत्र हमारे देखने में आये:—

(१) समाज

(२) स्वार्थ

'समाज' के तो हमें पूरे एक वर्ष भी दर्शन न हुए। खेद है कि

ज्ञान मण्डल, काशी, द्वारा सुसम्पादित पत्र भी ग्राहकों की कमी के कारण, बन्द होगया। फिर किसी ने इस अभाव की पूर्ति का समुचित प्रयत्न न किया। क्या हिन्दी-प्रेमी संसार अर्थशास्त्र सम्बन्धी एक भी मासिक पत्र का निर्वाह या भरण-पोषण नहीं कर सकता ? कुछ त्याग और परिश्रम की आवश्यकता है।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी कोश—अर्थशास्त्र सम्बन्धी विविध प्रकार के साहित्य की रचना के लिये पारिभाषिक शब्दों के कोष बड़ी ज़रूरत होती है। इस समय केवल निम्न लिखित पुस्तकें हमारे सामने हैं:—

१—वैज्ञानिक विश्व कोष—ले०—श्री मुखत्यार सिंह वकील, मेरठ। इसमें अंगरेज़ी वर्णमाला के क्रम के अनुसार एक एक पदार्थ अथवा आर्थिक शब्द के विविध पर्यायवाची शब्द देने के अनन्तर उस पर सविस्तर, कुछ दशाओं में तो कई कई पृष्ठ के, नोट दिये हुये हैं, साथ में प्रत्येक पदार्थ को तैयार करने में काम आने वाले विविध यंत्रों आदि के चित्र भी दिये गये हैं। इसका एक एक अंक सौ सौ पृष्ठ का निकालना आरम्भ किया गया था, परन्तु ग्राहकों और संरक्षकों की कमी के कारण उसे जल्दी ही बन्द कर देना पड़ा। इसके केवल दो अंक ही हमारे देखने में आये।

२—व्यापारिक कोष—ले०—पं० व्रजवल्लभ मिश्र। इसमें पांच अध्याय हैं:— (क) व्यापारिक साधारण शब्द और

वाक्य खंड, (ख) व्यापार धन्धों की शब्दावली, (ग) शिल्प और औद्योगिक शब्दावली, (घ) वाणिज्य द्रव्य और सौदागरी माल की शब्दावली, (च) व्यापारिक शब्दों के संक्षेप। यह कोष बड़े परिश्रम से तैयार किया गया मालूम होता है, फिर भी सन् १६२८ से इसका नया संस्करण न होना चिन्तनीय है। पृष्ठ संख्या ३४३। मूल्य १॥) छपा है, पर मिलता है अब सम्भवतः २॥) में।

३—हिन्दी वैज्ञानिक कोष—प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। यह कोष कई भागों में विभक्त है, जिन में से एक भाग अर्थ शास्त्र शब्दावली का भी है। यह सन १६०६ ई० में कई सज्जनों के सहयोग से तैयार हुआ था। अब इसका नया संशोधित संस्करण भिन्न भिन्न भागों में प्रकाशित होरहा है।

४—अर्थ शास्त्र शब्दावली—सम्पादक, श्री० दयाशंकर दुबे, गदाधरप्रसाद अम्बष्ट, और भगवानदास केला। मूल्य ॥।), पृष्ठ १४८। सन १६३२ ई०। पहले यह निश्चय किया गया था कि अर्थशास्त्र का कोष वृहद् रूप में तैयार किया जाय। प्रथम भाग में अंगरेज़ी के शब्द, उनकी अंगरेज़ी की परिभाषा, हिन्दी, वंगला, गुजराती, मराठी और उर्दू के पर्यायवाची शब्द, दिये जांय। दूसरे भाग में हिन्दी के अर्थशास्त्र सम्बन्धी शब्द हों, उनके आगे हिन्दी परिभाषा और फिर अंगरेज़ी पर्यायवाची शब्द रहें। इसी लक्ष्य से कार्य किया गया। इस वृहद् अर्थशास्त्र कोष को प्रकाशित करने के लिये कई प्रकाशकों से बात चीत की गयी, पर वह व्यय

साध्य होने के कारण कोई इसे प्रकाशित करने को तैयार न हुआ। परिणाम यह हुआ कि इसकी हस्तलिखित प्रति योंहीं पड़ी रही।* अन्ततः भारतीय ग्रन्थमाला ने अपनी परिमित शक्ति के अनुसार अर्थशास्त्र के अंगरेज़ी के पारिभाषिक शब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्द मात्र के रूप में इसे प्रकाशित किया। इसका अपेक्षाकृत अच्छा स्वागत हो रहा है।

शिक्षा संस्थाओं में अर्थ शास्त्र—साधारणतः प्रकाशक अर्थशास्त्रादि की अच्छी पुस्तकें बहुत कम प्रकाशित करते हैं। इसका कारण स्पष्ट है; इन पुस्तकों की मांग कम है, अभी यह विषय गुरुकुल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, विद्यापीठ आदि थोड़ी सी राष्ट्रीय तथा ग़ैर-सरकारी शिक्षा संस्थाओं को छोड़कर अन्यत्र हिन्दी में नहीं पढ़ाया जाता। सरकारी संस्थाओं में यह विषय एफ़. ए. (इंटरमीजियट) क्लास से पहिले आरम्भ नहीं किया जाता। आवश्यकता है कि उक्त श्रेणियों में शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो, तथा उससे नीचे को श्रेणियों में भी यह विषय पढ़ाया जाने लगे।

कुछ सज्जन इस विषय को उच्च श्रेणियों में पढ़ाये जाने के बारे में यह आपत्ति किया करते हैं कि इस विषय की यथेष्ट

* श्री० सुख सम्पत्तिराय जी भण्डारी एक वृहद् कोष तैयार कर रहे हैं, यह पुस्तक छपने के समय उपर्युक्त हस्तलिखित प्रति उनके उपयोग के लिये दी हुई है।

पुस्तकें नहीं मिलतीं। इस सम्बन्ध में शिक्षाधिकारियों को चाहिये कि शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने का निश्चय करके वे प्रत्येक श्रेणी के लिये पाठ्य-क्रम प्रकाशित करदें। फिर, विद्वान लेखक यथेष्ठ साहित्य तैयार करने में अवश्य लग जांयगे और साल दो साल में पाठ्य-क्रम के अनुसार पुस्तकें तैयार हो जांयगी। तब प्रकाशक भी उनके प्रकाशन से न हिचकेंगे। उन्हें अपने माल की खपत का, तथा कुछ लाभ-प्राप्ति का, आश्वासन रहेगा, तो वे कुछ जोखम भी उठा लेंगे। इस प्रकार पुस्तकों के अभाव की शिकायत शीघ्र ही दूर हो जायगी।

उपसंहार—अब हम संक्षेप में यह बतला देना चाहते हैं कि उपयोगिता तथा आवश्यकता की दृष्टि से अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की वृद्धि के लिये लेखकों तथा प्रकाशकों को क्रमशः क्या काम हाथ में लेना चाहिये। मोटे हिसाब से हमारी आवश्यकताओं का क्रम निम्नलिखित कहा जा सकता है:—

१—अर्थशास्त्र शब्द कोष।

२—अर्थशास्त्र—सिद्धांत।

३—उपभोग।

४—विनिमय।

५—वितरण।

६—बैंकिंग।

७—सहकारिता।

८—ग्राम्य अर्थशास्त्र।

९—म्यूनिसिपल अर्थशास्त्र और नगर-निर्माण।

१०—मज़दूर समस्या।

११—उद्योग धन्धे।

१२—व्यापार नीति।

१३—लेखा परीक्षा।

१४—बीमा।

१५—आर्थिक विचारों का इतिहास।

१६—अंकशास्त्र।

१७—गणितात्मक अंकशास्त्र।

१८—व्यापार चक्र।

देश की आर्थिक उन्नति कोरी भावुकता या इधर-उधर की बातों से नहीं हो सकती। जनता के सामने तथ्य बातें और अंक उपस्थित करके उन्हें प्रामाणिक ज्ञान कराना चाहिये, जिससे सुशिक्षित और समझदार राष्ट्र-सेवकों की संख्या बढ़ती जाय। ज्ञान-शून्य आदमी की सेवा से रोगी को कभी कभी लाभ की जगह हानि की सम्भावना होती है। यह बात देश के सम्बन्ध में भी कही जा सकती है। आशा है, हमारे साहित्य-नेता इस सचाई को ध्यान में रखते हुए, तन मन धन से अर्थशास्त्र सम्बन्धी साहित्य की रचना, प्रकाशन और प्रचार में समुचित प्रयत्न करेंगे।

राजनैतिक साहित्य

राजनैतिक साहित्य का महत्व—कहावत प्रसिद्ध है कि राजनीति राष्ट्रों का जीवन है। निस्सन्देह, यदि किसी बिखरे हुए जन समुदाय को सुसंगठित राष्ट्र के रूप में परिणत होना है, अथवा किसी राष्ट्र को अपना 'राष्ट्र' पद बनाये रखना है तो उस के लिये राजनीति और राजनैतिक साहित्य रूपी पुष्टिकर पदार्थों का सम्यग् सेवन करना अनिवार्य है। राजनैतिक साहित्य की उपेक्षा करने वाला देश चिरकाल में भी अपने उत्थान की आशा नहीं कर सकता। प्राचीन काल में समाज का जीवन धर्म-प्रधान होता था; तथापि कोई राष्ट्र जिसे आत्म-रक्षा और विकास की इच्छा होती थी, राजनीति तथा राजनैतिक साहित्य के प्रति विमुख नहीं होता था—नहीं होसकता था। इनका महत्व उस समय भी पर्याप्त था, यद्यपि ये धर्म और धार्मिक साहित्य के अन्तर्गत माने जाते थे। जिस भारतवर्ष की सभ्यता संसार के अन्य देशों के लिये चिरकाल तक शिक्षाप्रद रही, और अब भी मानव जाति के लिये कल्याणकारी सन्देश रखती है, वह भला राजनीति के महत्व को अच्छी तरह कैसे न समझता? महाभारत के शांतिपर्व में इस विषय का विशद विवेचन है। यहां यह बात खूब अच्छी तरह बतायी गयी है कि सब धर्मों में राजधर्म प्रधान है, सब वर्णों (वर्गों) का पालन इसी से होता है। दण्ड नीति (राजनीति)

के नष्ट होजाने से त्रयी अर्थात् तीनों वेद (अथवा आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक ज्ञान) डूब जाता है, सब धर्म-व्यवहार परस्पर विरोध करके क्षीण हो जाता है। क्षात्र धर्म (राज धर्म) नष्ट हो जाने पर सब आश्रमों के अर्थ और काम का, अर्थात् अभीष्ट वस्तुओं का, लोप हो जाता है।

महाभारत-रचयिता का उपर्युक्त कथन जितना उस प्राचीन धर्म-प्रधान काल में सत्य था, उसकी अपेक्षा आज दिन कहीं अधिक सत्य है। अब तो शिक्षा, स्वास्थ, व्यापार, धर्म, कर्म सब पर राजनीति का नियन्त्रण है। पराधीन देश के निवासी न अपना अविद्यांधकार दूर कर सकते हैं, न आजीविका के ही समुचित साधन प्राप्त कर सकते हैं। उनका स्वाभिमान, नैतिक उत्थान और धर्माचरण सब शंकास्पद रहता है। अस्तु, अपनी तथा स्वदेश की उन्नति के अभिलाषी प्रत्येक व्यक्ति का आवश्यक कर्तव्य है कि वह राजनैतिक ज्ञान प्राप्त करे, और उसका दूसरे बन्धुओं में प्रचार करे। जिस प्रकार वीरों का गद्दी-तकिया शर-शय्या (तीरों का पलंग) है, उसी प्रकार प्रत्येक विवेकशील और स्वाधीनता प्रेमी नागरिक के मनोरंजन की सामग्री राष्ट्रीय मुक्ति देने वाला राजनैतिक साहित्य है।

इस निबन्ध में हमें यह विचार करना है कि साहित्य के ऐसे महत्व-पूर्ण अंग की, हमारी प्यारी राष्ट्र भाषा हिन्दी में क्या स्थिति है।

राजनैतिक साहित्य का प्रारम्भ; पद्य भाग— हिन्दी भाषा में राजनैतिक साहित्य का प्रादुर्भाव उसके जन्मकाल के लगभग ही माना जा सकता है। प्रारम्भ का हिन्दी साहित्य पद्य रूप में है, और उस में राजनैतिक विचारों का सम्यग् समावेश है। चन्द्रवरदाई हिन्दी के आदि महाकवि कहे जाते हैं, और इन्होंने अपने पृथ्वीराज रासौ में तत्कालीन इतिहास के साथ राजा और मंत्रियों के कार्य, सैन्य सञ्चालन, व्यूह रचना आदि बातों पर भली भांति प्रकाश डाला है। इनके पश्चात् विविध सुकवियों ने समय समय पर अपनी प्रभावशाली वाणी से समाज को राजनैतिक ज्ञान प्रदान करने का प्रयत्न किया है। मध्यकाल में यद्यपि भक्ति-प्रधान रचनाओं की अधिकता रही है, तथापि राजनैतिक विषयों की चर्चा भी विलुप्त नहीं हुई। उदाहरणार्थ रामचरितमानस (रामायण) में भक्ति भाव के साथ-साथ विविध राजनैतिक विचारों का भी विवेचन है; हां, उस के लिये जिज्ञासु की सूक्ष्म दृष्टि की आवश्यकता है, साधारण पाठक के लिये तो वह केवल भक्ति और मनोरंजन की सामग्री है। कुछ समय हुआ 'रामायण में राजनीति' पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है, और हम रामायण की ऐसी कथाएं सुन चुके हैं, जिनमें तत्कालीन बातों को आधुनिक स्थिति पर घटा कर राजनीति सम्बन्धी अनेक शिक्षाप्रद बातें समझायी गयी हैं।

महाकवि भूषण ने पाठकों में स्वाभिमान, वीरता और देश, प्रेम के भाव भरने में चिरस्मरणीय प्रयत्न किया है। इनके शिव-

राज-भूषण, शिवाबावनी तथा छत्रसाल-दशक ग्रन्थ-रत्नों ने पदाक्रान्त हिन्दू जाति में अद्भुत् नवजीवन का संचार किया है। महाकवि केशवदासजी ने रामचन्द्रिका में श्री०रामचन्द्रजी सम्बन्धी राजनैतिक घटनाओं को भक्ति के आवरण से हटाकर विशुद्ध रूप में दर्शाया है। विभीषण के पर—पक्ष से मिलकर अपने वंश के मूलोच्छेदन की इन्होंने स्पष्ट भर्त्सना की है, अन्य श्रीराम-भक्तों की भांति उस की प्रशंसा नहीं की। इनकी उपर्युक्त रचना का वह भाग बहुत ही मनन करने योग्य है जिस में श्रीरामचन्द्रजी की अपने पुत्रों और भतीजों को राजनीति का उपदेश देने की बात है। कविवर गिरधरदास, कबीर और रहीम आदि के सरल और सुबोध राजनैतिक उक्तियां तो अनेक हिन्दी-प्रेमियों को कंठाग्र हैं। शृङ्गार—प्रधान कविताओं के भी कुछ रचयिताओं ने जहां-तहां राजनैतिक विषयों पर अच्छा विचार किया है। लाल कवि की कृतियों में तो राजनीति को ख़ासा स्थान प्राप्त है, इनका छत्रप्रकाश नामक ग्रन्थ अपनी ओजस्विता में एक उत्कृष्ट रचना है।

ये बातें उदाहरण मात्र के रूप में कही गयी हैं। सब कवियों की सब राजनैतिक रचनाओं का उल्लेख करना यहां न सम्भव है, और न अभीष्ट ही है। हमें केवल यही वक्तव्य है कि हमारे प्राचीन तथा माध्यमिक काल के कवियों ने भी राजनीति की ओर ध्यान दिया है। आधुनिक काल के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं, इस समय तो राजनैतिक जागृति अधिकाधिक होने से कवि महोदय उसकी उपेक्षा कर ही नहीं सकते। दृष्टान्त-

वत अन्याय सुकवियों में श्री० मैथिलीशरणजी की 'भारत भारती' और 'जयद्रथ वध' ने पाठकों को खूब प्रभावित किया है।

संस्कृत साहित्य से सम्बन्ध—हिन्दी के राजनैतिक साहित्य के सम्बन्ध में अन्य बातें कहने से पूर्व यह स्वीकार कर लेना आवश्यक है कि अन्य विषयों के साहित्य की भांति यह साहित्य भी संस्कृत साहित्य का बहुत ऋणी है। वास्तव में हमारी प्राचीन संस्कृति संस्कृत साहित्य में व्यक्त हुई है, अतः आधुनिक काल की अनेक धाराओं का मूल श्रोत संस्कृत साहित्य होना अनिवार्य है। ऊपर जिस रामायण सम्बन्धी साहित्य का उल्लेख हुआ है, उसका मुख्य आधार संस्कृत की वाल्मीकि रामायण है। इसी प्रकार संस्कृत के महाकाव्य महाभारत ने हिन्दी में अनेक कृतियों को जन्म दिया है। महाभारत का शान्ति पर्व और श्रीमद्भगवद्गीता तो राजनैतिक विचार, उपदेश और आदर्शों का उत्कृष्ट भण्डार है। उनकी व्याख्या और स्पष्टीकरण में अनेक ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। इसी तरह वेद, पुराण, स्मृति आदिक में भी विपुल राजनैतिक ज्ञान भरा है, हां, वह अन्य ज्ञान के साथ मिश्रित है, और उसे शोधन करके निकालने वाले की आवश्यकता है। पिछले वर्षों में इस दिशा में खासा प्रयत्न हुआ है, गद्य तथा पद्य की कितनी ही पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। धार्मिक तथा राजनैतिक जागृति ने बहुत से विद्वानों का ध्यान इस बात का अन्वेशन करने की ओर आकर्पित किया है कि हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में से हम क्या राजनैतिक तत्व ले सकते हैं। वेदों

के राजनैतिक आदर्श, राज्य पद्धति, राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी विचारों से युक्त पुस्तकें प्रकाशित हुई तथा होरही हैं; एवं पौराणिक आधार पर कितने ही उपन्यास, नाटक, कथा, कहानी और जीवन-चरित्रों आदि की रचना होती जारही है। विदुर नीति, चाणक्य नीति, शुक्र नीति, भर्तृ नीति शतक, किरातार्जुनीय, पंच तंत्र, मुद्रा राक्षस आदि के विविध अनुवाद हो चुके हैं। कौटलीय अर्थशास्त्र के विषय में पहिले लिखा जा चुका है, इसके आधार पर जो राजनैतिक साहित्य हिन्दी में प्रस्तुत हुआ है, उसकी चर्चा आगे प्रसंगानुसार की जायगी।

राजनैतिक साहित्य के भाग—अब हम हिन्दी के वर्तमान राजनैतिक साहित्य का परिचय देने के लिये, पहले इस के कुछ भाग कर लेते हैं। अनुभवी पाठक जानते हैं कि वर्गीकरण का कार्य बहुत कठिन एवं मत-भेद-मूलक रहता है। अस्तु; हम समझते हैं कि निम्न लिखित वर्गीकरण सुविधा-जनक एवं कामचलाऊ है :—

१—सिद्धान्त।

२—नागरिक शास्त्र।

३—राष्ट्र निर्माण।

४—शासन पद्धति।

(क) भारतीय।

(ख) अन्य देशीय।

५—शासन इतिहास।

६—राजनैतिक आन्दोलन।

(क) भारतीय।

(ख) अन्य देशीय।

७—राजनैतिक संस्थाएं।

(क) राष्ट्रीय।

(ख) अन्तर्राष्ट्रीय।

८—अन्तर्राष्ट्रीय विधान।

९—साम्राज्यवाद।

१०—प्रवासी भारतवासी।

११—वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति।

१२—राजनैतिक संधियां।

१३—मिश्रित।

१४—छोटी पुस्तकें।

१५—पत्र पत्रिकाएं।

१६—कोप।

सिद्धान्त—प्राचीन और राजनैतिक सिद्धान्त सम्बन्धी साहित्य हिन्दी में अत्यल्प है; आधुनिक सिद्धान्त पर क्रमशः कुछ अच्छे ग्रन्थ सामने आते जारहे हैं।

1—हिन्दुओं की राज कल्पना—ले०—पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी। पृष्ट ८८, मूल्य अज्ञात, भारतमित्र कार्यालय, कलकत्ता

यह वेद, रामायण, महाभारत और मनुस्मृति के आधार पर लिखी गई है। इसके कुछ विषय ये हैं:—राष्ट्र की उत्पत्ति, विराजकता, राज्य की उत्पत्ति, राजा का सम्बन्ध, अनियंत्रित राज्य, देशभक्ति आदि।

२—हिन्दू राज्य शास्त्र (अप्रकाशित)—पं० अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी इस पुस्तक का बहुत कुछ अंश लिख चुके हैं। इन पंक्तियों के लिखे जाने के समय, बड़े आकार का एक छपा हुआ फ़ार्म (आठ पृष्ठ) हमारे सामने है। यह लगभग ४०० पृष्ठ में पूरी होगी। आशा है, इससे राजनैतिक साहित्य में अपने ढंग की एक विशेष वस्तु की पूर्ति होगी। पुस्तक बहुत से प्राचीन ग्रंथों के अध्ययन और मनन पूर्वक लिखी गयी है।

३—राजनीति विज्ञान—ले०—सुखसम्पतिराय भंडारी; प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मूल्य १।=), पृष्ठ २१५, संवत् १९८०। इसका अभी तक दूसरा संस्करण नहीं हुआ, फिर भी बहुत उपयोगी है। मोटी मोटी बहुतसी बातों पर अच्छा विचार किया गया है।

४—राजनीति शास्त्र—ले०—प्राणनाथ विद्यालंकार; प्र०—ज्ञान मण्डल, काशी। सम्वत् १९७९। पृष्ठ ४२३, मूल्य २।=), इसके कुछ वर्णित विषय ये हैं:—राष्ट्रीय स्वरूप का विचार, राष्ट्र के समुत्थान में सामाजिक और प्राकृतिक स्थिति का भाग, राष्ट्र विषयक सिद्धांत और उनका इतिहास, प्रभुत्व शक्ति, अन्तर्जातीय

नियम, शक्ति संविभाग, नियामक विभाग, शासक विभाग, निर्णायक विभाग, निर्वाचन, स्थानीय राज्य। पुस्तक उच्च श्रेणियों के विद्यार्थियों के लिये बहुत उपयोगी है।

५—राज्य सम्बन्धी सिद्धान्त—ले०—पं० मातासेवक पाठक; प्र०—भारतीय पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सम्वत १६७७। पृष्ठ २०३। मूल्य १॥)। इसमें राज्य की उत्पत्ति और विशेषताओं, सार्वभौम राज्य, राष्ट्र और जनता, राज्य और दण्ड, राज्य और व्यक्ति, शासन, न्याय, सेना, पुलिस, राज्यों के प्रकार, आदि का वर्णन है। भाषा सरल है। स्थान स्थान पर भारतीय राजनैतिक विचारों का उल्लेख है।

६—स्वाधीनता—जान स्टुआर्ट मिल की अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद। अनु—पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। दूसरी आवृत्ति; सन् १६२१। पृष्ठ २२५। मूल्य २) श्री० द्विवेदीजी ने अनुवाद की भाषा यथा-सम्भव सरल रखी है। विचार और विवेचन की स्वाधीनता, व्यक्ति विशेषता भी सुख का एक साधन है, व्यक्ति पर समाज के अधिकार की सीमा और प्रयोग, शीर्षक परिच्छेदों में विषय पर भली भांति प्रकाश डाला गया है। पुस्तक उच्च कोटि की है।

७—प्रतिनिधि शासन—पूर्वोक्त लेखक की अंगरेजी की प्रामाणिक पुस्तक का अनुवाद। मू० २), प्र०—उपन्यास विहार कार्यालय, काशी। इस में प्रतिनिधि शासन के गुण दोषों का सम्यग्

विवेचन है। अन्तिम अध्याय है, स्वतन्त्र राज्य द्वारा अधीनस्थ राज्य का शासन होने के विषय में। इस में भारतवर्ष के विषय में भी अच्छी बातें कही गयी हैं।

८—राजसत्ता—यह श्री० हरिनारायण आपटे की मराठी पुस्तक का अनुवाद है। अनुवादक हैं श्री० हीरालाल जालोरी। प्र०—राजस्थान साहित्य माला कार्यालय, कोटा। पृष्ठ ६५। मूल्य ॥) सं० १९७८। इसमें एक सत्ता, अनेक सत्ता, मंत्री मण्डल, प्रतिनिधि मण्डल, स्थानिक राज्य, सेना, व्यवस्था, न्याय, सम्पत्ति आदि पर प्रकाश डाला गया है। स्थान स्थान पर सरल सुबोध उदाहरण है। भाषा रोचक है।

९—राजनीति प्रवेशिका—यह एक अंगरेजी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। लेखक का नाम नहीं है, प्रकाशक है अभ्युदय प्रेस, प्रयाग; सन् १९१७। पृष्ठ ८६; मूल्य ।=)। इसमें राजनैतिक आदर्श क्या है, तथा स्वाधीनता, व्यवस्था, समानता, अन्तर्राष्ट्रीय एकता, प्रभुता, स्वत्व, राष्ट्रीयता, साम्राज्य, व्यक्तिवाद और समष्टिवाद के आदर्श पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण रखते हुए प्रकाश डाला गया है।

१०—स्वाधीनता के सिद्धान्त—आयर्लैंड के सुप्रसिद्ध हुतात्मा मेक्स्विनी की पुस्तक का कुछ संक्षिप्त अनुवाद। अनु०—श्री० हेमचन्द्र जोशी बी. ए.। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। पृष्ठ १७८। मूल्य ॥)। कुछ वर्णित विषय निम्न लिखित

हैं:—स्वाधीनता का मूल, शक्ति का रहस्य, दृढ़ भक्ति, साम्राज्य-वाद, सशस्त्र प्रतिरोध, क़ानून का सच्चा अर्थ। पुस्तक की उपयोगिता के लिये मूल लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

११—क़ानून भंग—ले० और प्र०—श्री० मातादीन शुक्ल, छात्र सहोदर कार्यालय, जबलपुर। सन् १६२१। मूल्य ॥) पृष्ठ ११६। इसमें बताया गया है कि क़ानून का आधार क्या होता है और किस दशा में वह दूषित एवं अमान्य होजाता है। भिन्न भिन्न देशों की ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्राकृतिक नियमों का उदाहरण देकर विषय को स्पष्ट किया गया है। सामाजिक और धार्मिक क़ानूनों के विषय में भी विचार किया गया है।

१२—गुलामी से उद्धार—सम्पादक—श्री० मूलचन्द अग्रवाल, प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। मूल्य १),पृष्ठ २०७। पुस्तक में अहिंसात्मक क्रांति तथा असहयोग के आचार्य महर्षि टाल्सटाय के प्रभावशाली विचार हैं। वे किसी भी सरकार की रचना को—चाहे वह प्रजातंत्र ही क्यों न हो—अस्वाभाविक और शान्ति-नाशक मानते हैं; और भूमि को सरकारी न समझ कर उसको सार्वजनिक की जाने का आदेश करते हैं।

१३—पराधीनता—किसी भी पौदे, जीव,या प्राणी के विकास में पराधीनता बाधक होती है; सब को स्वाधीनता की आवश्यकता होती है। इसका वैज्ञानिक विवेचन किया गया है। मूल्य ।―); प्र०—मज़दूर आश्रम, इलाहाबाद।

१४—योरुप के राजकीय आदर्शों का विकास—ले०-गोपाल दामोदर तामस्कर। प्र०—मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। प्रथम संस्करण,सन् १९२४। मूल्य २), पृष्ठ ३६४। पुस्तक अंगरेज़ी ग्रन्थ के आधार पर होते हुए भी सरल है। इसमें स्वतंत्रता, शिष्टि और स्वराज्य, समता, एकता, राष्ट्रवाद,साम्राज्य-वाद, व्यक्ति स्वातंत्र्यवाद, समाज सत्तावाद, लोकतंत्र, राष्ट्र संघ आदि का विवेचन है। छापे की कुछ अशुद्धियां होते हुए भी पुस्तक बहुत उपयोगी और विचारणीय है।

१५—खूनी शासन—इसमें संसार-प्रसिद्ध महर्षि टाल्सटाय के विचार हैं। लेखों में ठंडे कलेजे अत्याचार करना, जनता का चरित्र नाश, शान्ति के नाम पर पाप, क्रान्तिकारी दल, जल्लाद का अन्तःकरण, आदि हैं, जिनमें रूसी ज़ार के शैतानी शासन और अहिन्सा के महत्व आदि का विवेचन है। मूल्य।), पृष्ठ ४०, प्र०—ठाकुर लक्ष्मणसिंह, जबलपुर।

१६—गुलामी—यह भी महात्मा टाल्सटाय की पुस्तक का अनुवाद है। अनु०—श्री० कृष्ण विहारी मिश्र, प्र०—हिन्दी ग्रंथ भण्डार कार्यालय, काशी। मूल्य ।||=), पृष्ठ १०१। इसमें आधुनिक काल की कल कारख़ानों से होने वाली गुलामी का विवेचन है,साम्यवाद के प्रचार तथा सरकारों का अस्तित्व हटाने के सम्बन्ध में गम्भीर विचार है।

१६—आधुनिक राजनीति का क ख ग—ले०—सर्व-श्री०

ज्योतिर्भूषण, लक्ष्मीकान्त झा, और रघुनाथसिंह। प्र०—रचना निकेत, काशी। पृष्ठ ११७, मूल्य ॥~)। इसमें व्यष्टिवाद, समाज वाद, समष्टिवाद, संघवाद, गिल्ड सोशलिज्म, कम्यूनिज्म, अराजकतावाद आदि के विषय में संक्षिप्त परिचय है। अपने ढंग की अच्छी चीज़ है।

<u>१८—राज्य विज्ञान</u>—ले०—श्री०—गोपाल दामोदर तामस्कर प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य २)। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है।

नागरिक शास्त्र—इस विषय पर हिन्दी साहित्य क्रमशः बढ़ रहा है, और कुछ अच्छी पुस्तकें हिन्दी संसार के सामने आगयी हैं; हां, उनकी संख्या और प्रचार में अभी बहुत वृद्धि की आवश्यकता है:—

<u>१—नागरिक शिक्षा</u>—ले०-श्री० भगवानदास केला; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। दूसरा संस्करण सन् १९३२। पृष्ट १४६+८। मूल्य ॥~), इस में सामाजिक जीवन और नागरिकता सम्बन्धी मोटी मोटी बातें बतलाकर, साधारण नागरिकों के जानने योग्य सेना, पुलिस, जेल, अदालत, डाक, तार, रेल, मोटर कृषि, व्यापार, सहकारिता, स्वास्थ रक्षा, नागरिकों के कर्तव्य, नागरिकता की व्यवहारिक शिक्षा आदि विषयों पर छोटे छोटे सरल सुबोध लेख दिये गये हैं। यह कई शिक्षा संस्थाओं में पढ़ायी जाती है।

२—नागरिक शास्त्र—ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र०—श्री० मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। मूल्य १॥), पृष्ठ ३३२ + १० । सन् १९३२ । इसमें, विषय प्रवेश में नागरिक शास्त्र तथा नागरिकता सम्बन्धी आवश्यक बातों का विवेचन है। दूसरे खंड में नागरिकों के चौदह अधिकारों पर प्रकाश डालते हुए उनकी प्राप्ति तथा सदुपयोग का विचार किया गया है। तीसरे खण्ड में नागरिकों के कर्तव्यों और आदर्शों का विचार है । अन्त में दो परिशिष्ट हैं, कर्तव्याकर्तव्य विचार, और कर्तव्य सम्बन्धी भारतीय विचार। अधिकांश बातें सिद्धान्त रूप से सर्व-मान्य हैं। पुस्तक में भारतीय दृष्टिकोण रखा गया है।

३—इतना तो जानो—मराठी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—पं० रामनरेश त्रिपाठी। प्र०—सस्ती साहित्य पुस्तक माला, कानपुर। सम्वत् १९७९, मूल्य ।–), पृष्ठ १३१ । असहयोग, राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज्य, पंचायत, स्वदेशी, हिन्दू मुस्लिम एकता आदि पर सरल भाषा के लेख हैं । पुस्तकान्त में श्री० देसाईजी का 'हिन्दुस्थान कैसे बरबाद हुआ' लेख है।

४—मनुष्य के अधिकार—ले०—श्री० स्वामी सत्यदेव; प्र०—श्री० रामप्रसाद गर्ग, आगरा। मूल्य ।≡), चतुर्थ संस्करण सं० १९७८, पृष्ठ ८६। इस में मुख्य मुख्य अधिकारों के सम्बन्ध में गम्भीर सिद्धान्तों में न जाकर रोचक शैली से, और मनोरञ्जक भाषा में लिखा गया है।

५—प्रजा के अधिकार—ले०-श्री० सत्यमूर्ति एम.ए.; अनु०—'प्रजावादी'। प्र०—हिन्दी साहित्य कार्यालय, कलकत्ता। पृष्ट, छोटे आकार के १३६, मू० ॥), सं० १९७९। नागरिकों के अधिकारों का विवेचन करते हुए यह भी बताया गया है कि वर्तमान स्थिति में भारतीय जनता के अधिकारों में क्या क्या क़ानूनी बाधाएं हैं, जिन्हें हटाए जाने की अत्यन्त आवश्यकता है।

६—राजा और प्रजा—श्री० रविन्द्रनाथ टैगोर के निबन्धों का संग्रह। अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। मू० १), द्वितीय संस्करण १९७९। पृष्ट २००। निबन्ध पुराने होजाने पर भी नये हैं, उनके भावों में स्थायित्व है पुस्तक विचारणीय और मननीय है। कुछ निबन्धों के शीर्षक हैं:—अंगरेज़ और भारतवासी, राजनीति के दो रुख़, साम्राज्यवाद, बहुराजकता, राजभक्ति, आदि।

७—भारतीय नागरिक और उनकी उन्नति के उपाय—ले०-श्री० भगवानदास केला, प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। मू० ॥), पृष्ट ११०+८। इसमें नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य बतलाकर इस बात का विचार किया गया है कि भिन्न भिन्न नागरिक श्रेणियां या समूह—किसान, मज़दूर, कारीगर, व्यापारी और दूकानदार, सार्वजनिक नौकर, मनोरंजन करने वाले, तथा लेखक सम्पादक और अध्यापक आदि मानसिक कार्य करने वाले एवं महन्त, महिलाएं, बालक, विद्यार्थी, देशी नरेश, पूँजीपति और

जमींदार आदि किस प्रकार देश के लिये अधिकतम उपयोगी होसकते हैं।

८—भारतीय लोकनीति और सभ्यता (प्रथम भाग) ले०—श्रीकृष्ण व्यंकटेश पुणताम्बेकर, एम. ए., मूल्य ३), पृष्ठ ३५०। प्र०—हिंदू विश्वविद्यालय, काशी। यह पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी।

९—इंगलेंड के सांगठनिक क़ानून—ले०—श्री० सुपार्श्वदास गुप्त बी. ए.। प्र०—कुमार एण्ड सन्स, आरा। सम्वत् १९८१। पृष्ठ १५७, मूल्य १॥)। इसके कुछ वर्णित विषय ये हैं:—क़ानून की प्रभुता, शारीरिक स्वाधीनता, वाक् स्वतन्त्रता, सार्वजनिक सम्मेलन का अधिकार, अशान्ति दमन क़ानून, रूढ़ियों की शक्ति का प्रादुर्भाव, आदि। इसके अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि इंगलेंड के क़ानून कितने स्वाभाविक, और नागरिक स्वतन्त्रता के रक्षक हैं।

१०—देशभक्त मेज़िनी के लेख—मेज़िनी इटली की एकता और स्वतन्त्रता का प्रमुख जनक था। उसके विचारों में उदारता गम्भीरता और विश्वबन्धुत्व था। इस पुस्तक में उसके मनुष्य के कर्तव्य, स्वार्थ और सिद्धान्त, तथा आशा और विश्वास शीर्षक निबन्धों का संग्रह है। पुस्तक विचारणीय और मननीय है। अनु०—श्री० छविनाथ पांडेय, प्र०—हिन्दी पुस्तक ऐजन्सी, कलकत्ता। मल्य २), पृष्ठ २२४।

मेज़िनी का 'मनुष्य के कर्तव्य' निवन्ध अलग भी पुस्तकाकार छपा है। उसका अच्छा प्रचार हुआ है।

राष्ट्र निर्माण—भारतवर्ष में राष्ट्रनिर्माण की ओर जनता का ध्यान कुछ समय से निरन्तर बढ़ता जारहा है। पर अभी तक, जैसा चाहिये, इस विषय का साहित्य हिन्दी में तैयार नहीं हुआ। राष्ट्र निर्माण सम्बन्धी विविध समस्याओं का हल अन्य देशों में किस प्रकार किया गया, इस विषय पर सम्यग् प्रकाश डालने वाली एक भी पुस्तक नहीं है। हिन्दी विद्वानों को इस ओर वहुत ध्यान देने की आवश्यकता है, जिससे यहां राष्ट्र निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो, भारतीय जनता अन्य देशीय वन्धुओं के अनुभव से लाभ उठावे और हां, इस सम्बन्ध की बुराइयों तथा त्रुटियों से भी वचे।

१—भारतीय राष्ट्र निर्माण—ले०-श्री० भगवानदास केला, प्र०-भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। दूसरा संस्करण, सन् १९२३, मूल्य ।॥=), इस में राष्ट्र निर्माण के सिद्धांत, तथा भारतवर्ष में इस कार्य की प्रगति और साधनों पर विचार करते हुए राष्ट्रीय एकता वृद्धि के विविध उपायों पर विचार किया गया है। इन पंक्तियों के लिखते समय इसका तीसरा संशोधित संस्करण तैयार है, आर्थिक अनुकूलता होते ही प्रकाशित किया जायगा।

२—भारतीय राष्ट्र—ले०—श्री० देवीप्रसाद द्विवेदी। प्रकाशक राष्ट्रीय पुस्तक भण्डार, कानपुर। सं० १९७५। पृष्ठ २१४ मू० १)

भारत के एक राष्ट्र होने के प्रमाण, भारतीय राष्ट्रीयता का विवरण, वर्तमान शासन प्रणाली की त्रुटियां, स्वराज्य की आवश्यकता आदि विषयों पर अच्छा प्रकाश डाला गया है। भाषा और विचार प्रभावयुक्त हैं।

३—जातीयता—तपस्वी अरविंद घोष के लेखों का अनुवाद। अनु०—श्री० शिवदयालजी। प्र०—विश्व साहित्य भंडार, मेरठ। पृष्ठ ६४, मूल्य ।–), प्रथम संस्करण, सन् १९२२। इसमें जातीय उत्थान, स्वाधीनता का मार्ग, देश और जातीयता, प्राच्य और पाश्चात्य, आदि शीर्षकों में विविध विषयों पर स्वतन्त्र विचार हैं।

४—हिन्दुस्थान का राष्ट्रीय झण्डा—प्र०—हिन्दी साहित्य मंदिर, आगरा। मू० १) सन् १९२१, पृष्ठ १४४। महात्मा गान्धी के राष्ट्रीय झण्डे सम्बन्धी, तथा कुछ अन्य लेखों का संग्रह।

५—स्वामी रामतीर्थ का राष्ट्रीय सन्देश—इस में सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों, कुसंस्कारों तथा अन्ध विश्वासों को छोड़ने और राष्ट्रीय दृष्टि-कोण से विचार करने की जोरदार अपील की गयी है। यज्ञ तथा सन्तानोत्पत्ति आदि के विषय में स्वामी राम ने प्रचलित विचारों के विरुद्ध निर्भीक आलोचना की है। पुस्तक मननीय है।

६—देशभक्त की पुकार—देशभक्त लाला लाजपतराय के विचारों का संग्रह। अनुवादक और संग्रहकर्ता—श्री० नारायण

प्रसाद अरोड़ा, बी. ए., कानपुर। मू० १), पृष्ठ २०२। कुछ लेख ये हैं:—मुक्ति का मार्ग (अमरीका से म० गांधी के नाम भेजे हुए पत्र), देश भक्ति, जीवन का उद्देश्य, स्वदेशी आन्दोलन, हिंदू राष्ट्रीयता का अध्ययन, पञ्जाब की दुर्दशा का मूल कारण, भारतीय नेताओं का भावी कर्तव्य, क़ौमी सरगरमी की रूह। विचारों की गम्भीरता और प्रौढ़ता के विषय में मूल लेखक का नाम ही पर्याप्त है।

७—भारतीय नवयुवकों को राष्ट्रीय सन्देश—संग्रहकर्ता—श्री० रघुनाथप्रसाद। प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ॥।), पृष्ठ ११६। देशी विदेशी विविध विद्वानों के शिक्षाप्रद संदेश हैं। राष्ट्र निर्माण के सम्बन्ध में भी एक लेख है।

८—हिन्दू राष्ट्र का नव निर्माण—ले०—आचार्य चतुरसेन शास्त्री, प्र०—हिन्दी साहित्य मण्डल, दिल्ली, मूल्य २), पृष्ठ ३०२। लेखक ने भारतीय राष्ट्र को हिन्दू राष्ट्र का नाम दिया है, उनकी इच्छा है कि इस देश का प्रत्येक प्राणी अपने को हिन्दू कहे। उनका मत है कि नव राष्ट्र निर्माण में सबसे बड़ी बाधक हिन्दू जाति है, अन्य जातियां बहुत कुछ बढ़ी हुई हैं—यदि हिन्दू जाति उनके बराबर पहुंच जायगी तो अन्य जातियां खुशी से मिल जांयगी। इस लिये पुस्तक हिन्दुओं को लक्ष्य करके लिखी गयी है। इसके कुछ परिच्छेद हैं, ब्राह्मणत्व का नाश, जात पांत तोड़ डालो, धर्म पाखण्ड का नाश, अछूतपन का नाश, स्त्रियों को

निर्भय करो, कुरीतियों और रूढ़ियों को नष्ट करदो, तथा भाषा भाव और भेष।

९—हिन्दी राष्ट्र या सूबा हिन्दुस्थान—ले०—श्री० धीरेन्द्र वर्मा; प्र०—लीडर प्रेस, प्रयाग; मूल्य १), पृष्ठ ८५। भारतवर्ष में विविध प्रान्तों की सीमा निर्धारण तथा कुछ नवीन प्रान्तों के निर्म्माण के प्रश्न पर विचार होते देख लेखक को यह पुस्तक छपाने की प्रेरणा हुई, इसके अन्तर्भूत निबन्ध पहिले लिखे जा चुके थे। इस पुस्तक में राष्ट्र के लक्षण बताकर यह सिद्ध किया गया है कि भारत एक राष्ट्र नहीं है वरन् कई राष्ट्रों का संघ है, और इसके मध्य में समस्त हिन्दी भाषा भाषी लोगों का देश एक राष्ट्र माना जा सकता है। लेखक का मत है कि इस दस करोड़ जनता के सूबे का नाम हिन्दुस्थान हो, और इसे विविध प्रयत्नों से दृढ़ बनाया जाना चाहिये।

१०—हमारे राष्ट्र निर्म्माता—ले०—श्री० रामनाथलाल सुमन; प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, देहली। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है।

शासन पद्धति; (क) भारतीय—शासन पद्धति सम्बन्धी बातों की ओर सर्व साधारण जनता का विशेष ध्यान योरपीय महायुद्ध आरम्भ होने के बाद आकर्षित हुआ है। इस विषय के साहित्य में हमें आधुनिक, मध्यकालीन, और प्राचीन शासन व्यवस्था सम्बन्धी पुस्तकों का विचार करना है। शासन

सुधार अथवा स्वराज्य प्राप्ति के आन्दोलन के समय ऐसे साहित्य का कितना महत्व है, यह पाठक भली भांति जानते हैं।

सन् १९१५ में प्रायः एक ही साथ तीन पुस्तकें भारतीय शासन पद्धति सम्बन्धी प्रकाशित हुईं—(१) स्व० श्री राधाकृष्ण जी झा की भारत शासन पद्धति, (२) श्री अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी की भारतीय शासन पद्धति, और (३) श्री० केलाजी की भारतीय शासन। पहली पुस्तक के विद्वान लेखक श्री० झा महोदय का स्वर्गवास होगया। आपकी पुस्तक की विशेषता यह थी कि उसमें भारत की आधुनिक शासन पद्धति का वर्णन करने से पूर्व हिन्दुओं, मुसलमानों तथा मराठों की शासन पद्धति का अच्छा परिचय दिया गया था। इसका दूसरा संस्करण हो चुका है, पर अब और नवीन, संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण की बड़ी आवश्यकता है। इन पंक्तियों को लिखते समय हमारे सामने इसकी प्रथम ही आवृत्ति है, इसमें बड़े आकार के ३१६ पृष्ठ हैं, मूल्य केवल १॥), प्र०—खड्गविलास प्रेस, बांकीपुर। दूसरी पुस्तक दो भागों में प्रकाशित हुई। मूल्य १≈), पृष्ठ २२५। इसके वयोवृद्ध लेखक इस पुस्तक सम्बन्धी यथेष्ट मांग न होने से, हतोत्साह होगये, और उन्होंने जैसे तैसे इसकी दूसरी आवृत्ति छपाई, फिर इस ओर से विमुख ही हो रहे। तीसरी (श्री० केलाजी की) पुस्तक का छटा संस्करण इस समय सर्वसाधारण के सामने है। नवीन शासन विधान अमल में आने के समय इसका सातवां संस्करण होने वाला है।) पृष्ठ १९६ + ९। मूल्य

।।।≥)। इसके बीस परिच्छेदों में भारतीय शासन सम्बन्धी सब आवश्यक विषयों का संक्षेप में समावेश है। अन्त में उपयोगी परिशिष्ट एवं पारिभाषिक शब्द भी हैं। बहुत सी राष्ट्रीय तथा कुछ सरकारी संस्थाओं में इसका उपयोग होता है।

४—शासन व्यवस्था की प्रारम्भिक पुस्तक—ले०—श्री० लाड़िलीप्रसाद सकसेना बी. ए.। मूल्य ।।।), पृष्ठ ६२। यह संयुक्त प्रांत के नार्मल और ट्रेनिङ्ग स्कूलों के लिये लिखी गयी है। इसमें शासन पद्धति संक्षेप में बतायी जाकर, शिक्षा, स्वास्थ, कृषि और सहकारिता आदि की चर्चा है।

५—शासन और सहयोग—ले०—श्री० रामलोचनशरण; प्र०-श्री० वैदेहीशरण,लहेरियासराय। पृष्ठ ३०। मूल्य ≥)।।; यह सन् १६२५ में छटी बार छपी थी। यह बिहार के अपर प्राइमरी वर्गों के लिये नियत है, इसके शासन सम्बन्धी भाग में वे ही बातें बतायी गयी हैं, जिनका सम्बन्ध ज़िले या उसके भाग से होता है।

६—सरल राज्य शासन--ले० और प्र०-श्री० पण्डित नर्मदा प्रसाद मिश्र, जबलपुर। तीन भाग। सन् १६२६ और २७। मूल्य ।-), ।=) और ।।≥)।; पृष्ठ क्रमशः ७२, ६८, और १३४। यह मध्यप्रांत की छटी, सातवीं और आठवीं क्लास के लिये स्वीकृत हैं। प्रथम दो भागों में विद्यार्थियों के अभ्यासार्थ आवश्यक प्रश्न भी हैं।

७--नवीन राज्य शासन—ले०-श्री० रामचन्द्रजी संघी एम.

ए.। प्र०—नर्वदा बुकडिपो, जबलपुर। तीन भाग, पृष्ठ ५६, ८६, और १२४। मू० ।), ।-) और ।।); सन् १९२८ और २९। तीनों भागों में अभ्यासार्थ प्रश्न हैं। मध्य प्रान्त के मिडल स्कूलों के लिये स्वीकृत हैं। तीसरे भाग का 'विषय प्रवेश' इतिहास पाठकों के लिये अच्छा उपयोगी है।

८—सरल भारतीय शासन-ले०-भगवानदास केला; प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। सन १९२८। पृष्ठ १३२। मू० ।।), यह लेखक की भारतीय शासन का छोटा संस्करण है, जो साधारण योग्यता वाले प्रारम्भिक पाठकों को लक्ष्य में रख कर लिखी गयी है। नया शासन विधान अमल में आने के समय इस का दूसरा संस्करण होने की आशा है।

९—हिन्द स्वराज्य—महात्मा गान्धी ने मूल पुस्तक गुजराती में लिखी थी। आपके शब्दों में, इसमें वैर के बदले प्रेम की शिक्षा, उद्दंडता को हटा कर स्वार्थ त्याग को स्थान दिया गया है। प्र०—हिन्दी पुस्तक ऐजन्सी, कलकत्ता। पृष्ठ ९४, मूल्य ।-), इसकी कई आवृत्तियां हो चुकी हैं। इसमें महात्माजी के मशीनों और आधुनिक सभ्यता सम्बन्धी विचारों का भी समावेश है। पुस्तक वार्तालाप के रूप में है।

१०—निर्वाचन नियम—ले०—प्रो० दयाशंकर दुबे एम. ए., और भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन, पृष्ठ १३०, मल्य ।।-), सन् १९२६। अपने विषय की एक मात्र

पुस्तक है। इसमें कुछ सिद्धान्त की भी चर्चा है, तथा इस बात का भी विचार किया है कि निर्वाचन नियम भविष्य में कैसे होने चाहियें। अभी तक दूसरा संस्करण नहीं हो पाया। आशा है अगले वर्ष हो सकेगा।

११—भारतवर्ष की शासन पद्धति—ले०—श्री० दयाचन्द गोयलीय बी. ए.। प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। यह १६१६ में छपी थी। तब से देश में शासन विधान सम्बन्धी भारी परिवर्तन होगये, पर इस पुस्तक का नया संस्करण नहीं हुआ। मूल्य ॥), पृष्ठ १२२। प्रकाशन समय के अनुसार खासी अच्छी है।

१२—भारतीय शासन सुधार—सम्पादक—श्री० मातासेवक पाठक। मूल्य ॥), प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। सन् १६१८। इसमें तत्कालीन शासन पद्धति तथा उसके सुधार के लिये विविध प्रस्तुत योजनाएं दी गयी हैं, साथ में सम्पादकीय वक्तव्य भी है।

१३—स्वराज्य या सरकारी मसविदा (दो भाग)-सम्पादक—श्री० श्रीप्रकाश बी. ए.; प्र०—ज्ञान मण्डल, काशी। पृष्ठ ५८७, सं० १६७५। सन् १६१६ के सुधारों का आधार यह मसविदा था। इसे तत्कालीन भारत मंत्री श्री० मांटेग्यू और वायसराय चेम्सफ़ोर्ड ने मिल कर लिखा था। पहले भाग में ख़ास सरकारी मसविदा है, और दूसरे में भारत की भूत और वर्तमान परिस्थिति की

सरकारी आलोचना। भाषा सरल है, अन्त में शब्द कोष भी दिया गया है। प्रचारार्थ इसका मूल्य आधा अर्थात् ।।।~) कर दिया गया है।

१४—भारतवर्ष के लिये स्वराज्य—मूल अंगरेज़ी पुस्तक के लेखक श्री० श्रीनिवास शास्त्री हैं। प्र०—भारत सेवक समिति, प्रयाग। मूल्य ।~), सन् १९१७। पुस्तक तथ्यांकों और प्रामाणिक उदाहरणों से पूर्ण है। लेखक भारतवर्ष के लिये ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य के समर्थक हैं।

१५—राष्ट्रीय मांग—ले०-भगवतीप्रसाद पांडे, बी. ए.; मूल्य १।), पृष्ठ २४४। प्र०—लीडर प्रेस, प्रयाग। इसमें नेहरू कमेटी की, तथा सर्वदल सम्मेलन, कलकत्ता, की संक्षिप्त रिपोर्ट एवं विभिन्न राजनैतिक दलों और जातियों के तत्सम्बन्धी विचार हैं। भारत-वासियों के शासन विधान सम्बन्धी रचनात्मक विचारों के साहित्य में इस पुस्तक का बड़ा महत्व है।

१६—भारतीय जेल—ले०-श्री० महताबसिंह वर्मा। प्र०-देशभक्त कार्यालय, मैनपुरी। मूल्य ।।), पृष्ठ १०२, सं० १९७९। लेखक जेल जीवन के अनुभवी हैं। पुस्तक में जेल नियम, जेल भोजन, जेल दंड, जेल अधिष्ठाता, सेंट्रल जेल के विभाग, आदि सभी मुख्य विषयों पर प्रकाश डाला गया है। आवश्यक चित्र या फ़ार्म आदि के नमूने भी दिये गये हैं। पस्तक जेल पद्धति के सुधार में सहायक हो सकती है।

१७—गांधी सिद्धांत—सम्पादक और प्रकाशक-श्री० लक्ष्मण नारायण गर्दे, कलकत्ता, सं० १९७७। मूल्य ?।), पृष्ट १२४+२७। यह महात्माजी की 'हिन्द स्वराज्य' गुजराती पुस्तक का अनुवाद है (देखो 'हिन्द स्वराज्य')। अन्त में कुछ उपयोगी बातें परिशिष्ट रूप से दी गयी हैं।

१८—राजस्थान और देशी राज्य दर्शन—ले० और प्र०—कुँवर मदनसिंह। मूल्य १), पृष्ट २८७। इसमें राजस्थान और देशी रियासतों में प्रजा पर होने वाली स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता का दिग्दर्शन कराया गया है, साथ ही उसके निवारण के लिये प्रजा का कर्तव्य बताया गया है। कुछ लेख सामाजिक और आर्थिक विषयों के हैं, औरों में से कुछ के शीर्षक ये हैं:—अमात्य, पार्टियां, नज़राना, ठिकानेदार या जागीरदार, बेगार, गुलामी, कृपापात्र, आदि।

१९—अकबर की राज्य व्यवस्था— ले०—शेषमणि त्रिपाठी बी. ए. साहित्यरत्न। सं० १९७९। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाशित; रत्नपरीक्षा का स्वीकृत ग्रन्थ। मूल्य ॥) पृष्ट २८७। प्रारम्भिक भाग में पठान शासन पद्धति और अंत में अकबर के पीछे की मुग़ल शासन पद्धति तथा उसका वर्तमान शासन पद्धति से सम्बन्ध और उससे तुलना-सूचक विचार दिये जाने से इसकी उपयोगिता बहुत बढ़गई है।

२०—वेदोक्त राज्य तथा प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली—

ले० और प्र०—प्रो० बालकृष्ण एम. ए., गुरुकुल, हरिद्वार। मूल्य ॥), पृष्ठ १५६, सन् १६१४। इसमें आर्यों की उन्नति तथा अवनति के कारण, तथा उनकी राज्य कल्पना के गुण दोषों का विवेचन है। पाश्चात्य सिद्धान्तों पर विचार करते हुए, वेदोक्त राज्य पद्धति की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है।

२१—प्राचीन भारत में स्वराज्य—ले०—श्री० धर्मदत्त जी विद्यालंकार; गुरुकुल कांगड़ी, मूल्य १॥), पृष्ठ २००, सन् १६२०। इसमें दृढ़ प्रमाणों के आधार पर बताया गया है कि प्राचीन भारत में राजसत्ता, प्रजाके अधीन थी, तथा प्रतिनिधिसत्ताक एवं परिमित राजसत्ताक शासन पद्धति प्रचलित थी, शासन में राजा का स्वार्थ गौण विषय था, उसका अधिकार सभा समितियों द्वारा नियंत्रित था।

२२—स्वामी दयानन्द का वैदिक स्वराज्य—ले० तथा प्र०—श्री० चन्द्रमणि विद्यालंकार, साहित्य रत्न, जालंधर। पृष्ठ ७५, मूल्य ॥)। इसमें श्री० स्वामीजी के स्वराज्य विषयक संदेशों का विषयवार संग्रह है, जो उनके विविध ग्रन्थों में सन्निहित हैं।

२३—वैदिक राज्य पद्धति—प्र०—स्वध्याय मण्डल, औंध। मू० ।—)। इसमें बताया गया है कि वेदों के अनुसार, राज्य विस्तार तथा राज्य शासन की दृष्टि से राज्यों के कितने भेद हैं, और उनके क्या लक्षण होते हैं।

२४—हिन्दू राजतंत्र—(दो भाग)—श्री० काशीप्रसाद

जायसवाल की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—श्री० रामचन्द्र वर्मा, प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। हिन्दुओं की प्राचीन राज्य प्रणाली कैसी थी, इस विषय की यह बहुत प्रामाणिक पुस्तक है। लेखक ने यह जानने के लिये विशेष रूप से अध्ययन किया कि यदि प्राचीन भारतवासियों ने वैध शासन सम्बन्धी कोई उन्नति की थी, तो उन में प्रचलित पद्धति कब, कहां, और कैसी रही।

२५—कौटिल्य की राज्य शासन व्यवस्था—ले०—श्री० गोपाल दामोदर तामस्कर। प्र०—इंडियन प्रेस,प्रयाग, मूल्य १॥)। इसका उल्लेख पहले होचुका है। इस में वर्णित विषय ये हैं :— राजा अमात्य और मंत्री, जनपद; दुर्ग और नगर, भिन्न भिन्न विभाग और उनके अध्यक्ष, कर्मचारी, न्याय शासन व्यवस्था, राज्य का आय व्यय, कौटिल्य का षाड्गुण्य, कौटिल्य की कुटिल नीति, और राज्य का स्वरूप।

२६—कौटिल्य के राजनैतिक विचार (अप्रकाशित)—ले०—श्री० भगवानदास केला, वृन्दावन। लेखक की 'कौटिल्य के आर्थिक विचार' की चर्चा पहले की जा चुकी है, उसी की तैयारी के सिलसिले में उसने उपर्युक्त पुस्तक की भी सामग्री जुटाना आरम्भ कर दिया था, पीछे धीरे धीरे यह कार्य पूरा होगया, यद्यपि ऐसे विषय पर तर्क वितर्क करने की गुँजायश अभी बहुत समय तक रहेगी। प्रकाशन की सुविधा होने पर यह पाठकों की सेवा में उपस्थित की जायगी।

२७—हमारी स्वतन्त्रता कैसी हो?—मूल लेखक—श्री० योगीवर अरविन्द घोष । अनु०—देवनारायण द्विवेदी। मूल्य १), पृष्ठ केवल ११४। प्र०—एस. वी. सिंह एण्ड को०, काशी। इस में भारत की राष्ट्र-नीति का परिचय देकर बताया गया है कि पूर्व काल में यहां जो राजतंत्र था, वह वास्तव में एक प्रकार से प्रजा तंत्र ही था। विषय गवेषणा-पूर्ण और विचारणीय है।

शासन पद्धति; (ख) अन्य देशीय-शासन संबंधी विषयों से अनुराग रखने वालों के लिये अपनेही देश की शासन पद्धति का विचार पर्याप्त नहीं होता। उन्हें अन्य देशों की शासन पद्धति का भी विचार करना होता है। कहां कौनसी बात अधिक सुविधाजनक या लाभकारी है, और उसका स्वदेश में कहां तक उपयोग किया जा सकता है, यह ज्ञान बड़े महत्व का है। हिन्दी भाषा में अभी इस प्रकार का साहित्य बहुत कम है। हमें केवल निम्न लिखित पुस्तकों के ही होने की बात ज्ञात है:—

१—शासन पद्धति-ले०—श्री० प्राणनाथ विद्यालंकार; प्र०—नागरी प्रचारणी सभा, काशी। मूल्य १।); इसमें बहुत से देशों की शासन पद्धति संक्षेप में दी हुई है। इन पंक्तियों के लिखते समय, हमारे सामने न होने से हम इस के सम्बन्ध में विशेष लिखने में असमर्थ हैं। इसे हमने बहुत समय हुए देखा था; तब से कितने ही देशों की शासन पद्धति बदल गयी है। मालूम नहीं, इसका दूसरा संस्करण हुआ या नहीं। इसका नया संस्करण पाठकों के लिये बहुत उपयोगी होगा।

२—ब्रिटिश साम्राज्य शासन—ले०—प्रो० दयाशंकर दुवे, एम० ए०, और भगवानदास केला। प्र०—भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। सन् १६२६। पृष्ठ १८८+८। मूल्य चौदह आने। इस के पहले भाग में कुछ ऐतिहासिक परिचय के साथ ग्रेटब्रिटेन तथा उत्तरी आयर्लैंड की शासन पद्धति बतायी गयी है। दूसरे खंड में आयरिश फ्री स्टेट, स्वाधीन उपनिवेशों, भारतवर्ष, उपनिवेश विभाग के अधीन भू-भागों, रक्षित राज्यों, और आदेशयुक्त राज्यों आदि के शासन का वर्णन है।

२—स्वराज्य—ले०—प्रो० बालकृष्ण एम. ए.। प्र०—के. सी. भल्ला, प्रयाग। सन् १६१७। पृष्ठ २६५। मूल्य १।)। इसमें संसार के स्वराज्य भोगी राज्यों—इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी संयुक्त राज्य अमरीका, और स्विटज़रलैंड की शासन पद्धति का अच्छा विचारपूर्ण विवेचन है। कुछ सिद्धांत का भी समावेश है भाषा भी अच्छी है। हां, नये संस्करण की आवश्यकता है।

४—जर्मनी की राज्य व्यवस्था—ले०—श्री० माता सेवक पाठक। पुस्तक अपने प्रकाशन के समय अच्छी उपयोगी थी, पर योरपीय महाभारत के बाद जर्मनी की शासन पद्धति का काया-पलट ही होगया है; नवीन संशोधित संस्करण की आवश्यकता है

५—संसार की संघ शासन प्रणालियां—प्र०—मध्यभारत हिन्दी साहित्य समिति, इन्दौर। मूल्य १।)। यह पुस्तक हमारे सामने नहीं है।

शासन-इतिहास—प्रायः प्रत्येक देश की, किसी भी समय की शासन पद्धति पूर्वकालीन शासन पद्धति से बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं, बहुधा वह उस का थोड़ा बहुत रूपान्तर या विकसित स्वरूप होती है। अनेक बार तो किसी क्रांति के बाद प्रचलित होने वाली शासन पद्धति में भी उसके पूर्ववर्ती के थोड़े-बहुत लक्षण पाये जाते हैं। इस प्रकार किसी देश का शासन-इतिहास जानना बहुत मनोरंजक, शिक्षाप्रद और उपयोगी होता है। इस से हमें मालूम होता है शासन पद्धति सम्बन्धी कौनसी व्यवस्था कब और किस दशा में ऐसी होगयी कि उस में परिवर्तन की आवश्यकता ज्ञात हुई, और फिर उसका परिवर्तित स्वरूप क्या हुआ। यद्यपि शासन पद्धति की कुछ पुस्तकों में प्रसंगानुसार ऐसा वर्णन मिलता है, खेद है कि हिन्दी में अभी तक इस विषय की एक भी अच्छी पुस्तक देखने में नहीं आयी। सुयोग्य लेखक और प्रकाशकों के ध्यान देने का विषय है।

राजनैतिक आन्दोलन; (क) भारतीय—राजनैतिक आन्दोलन सम्बन्धी साहित्य का राजनीति-साहित्य में एक विशेष स्थान होता है। भारतवासी सदैव स्वतन्त्रता-प्रेमी रहे हैं, और जब कभी उन्हें किसी शत्रु ने पददलित करने का प्रयत्न किया है, उन्होंने उसके प्रतिकार का भरसक आन्दोलन किया है। दसवीं ग्यारहवीं शताब्दी तक तो हिंदू प्रायः स्वतन्त्र ही रहे। पीछे मुसलमानों के शासन काल में भी उन्होंने कभी सामुहिक रूप से पराधीनता स्वीकार नहीं की, कभी एक भाग में उनकी

बेचैनी दिखायी दी, कभी दूसरे में। राजपूत, सिख और मराठों की वीरता और त्याग से इतिहास भरा हुआ है तथापि उन के राजनैतिक आन्दोलन का साहित्य हिन्दी में बहुत कम है। हां, अंगरेज़ों के शासनकाल में जो आन्दोलन हुआ, उसके सम्बन्ध में अपेक्षाकृत अच्छा साहित्य है, तथा तैयार हो रहा है।

भारतीय राष्ट्र-सभा अर्थात् कांग्रेस का जन्म सन १८८५ ई० में हुआ। तब से देश में राजनैतिक विषयों की चर्चा की क्रमशः वृद्धि हुई। परन्तु आरम्भ के तीस वर्ष उसका अधिकांश कार्य अंगरेज़ी भाषा में होने से, हिन्दी के राजनैतिक साहित्य की उस से विशेष प्रगति न हुई। सन १९१६ ई० से इस में क्रमशः सुधार हुआ, कांग्रेस कुछ थोड़े से अंगरेज़ी जानने वालों की सभा न रह कर, सर्वसाधारण से अधिकाधिक सम्पर्क में आने तथा हिन्दी में काम करने लगी। उसके सभापतियों के भाषणों में राजनैतिक परिस्थिति का सम्यग् दिग्दर्शन, और उसके प्रस्तावों में राष्ट्रीय मांग का समुचित परिचय, होता रहता है। अब इन का हिन्दी जनता को अच्छा लाभ मिलने लगा। ज्यों ज्यों राष्ट्रीय आन्दोलन बढ़ा, राष्ट्र-भाषा हिन्दी के राजनैतिक साहित्य को अधिकाधिक प्रोत्साहन मिलना स्वाभाविक था।

जनता की राजनैतिक जागृति का आभास पाकर सरकार ने जन-साधारण के सामने अपने कार्यों का उज्वल पक्ष खूब बढ़ा कर, तथा अपना दूषित पक्ष घटा कर, उपस्थित करने का भरसक

प्रयत्न किया। योरपीय महायुद्ध के समय सरकार का इस प्रकार का प्रकाशन कार्य खूब ज़ोर शोर से हुआ। सन् १६१६ ई० की शासन सुधार योजना का हिन्दी (एवं अन्य भाषा) रूपान्तर नाम मात्र के मूल्य पर दिया गया। पीछे सन् १६२१-२२ ई० में सरकार ने असहयोग आन्दोलन के विरुद्ध भी अनेक ट्रैक्ट आदि प्रकाशित करके बिना मूल्य वितरण किये। यद्यपि अब जनता पूर्वापेक्षा अधिक विचारवान होगयी है, और वह सरकारी प्रकाशन पर आंख मींचकर विश्वास नहीं करती, फिर भी सरकार ने अपना प्रयत्न त्याग नहीं दिया है, और उसे कभी कभी अपने ट्रैक्टों आदि के प्रचार से थोड़ी बहुत सफलता मिलने की आशा रहती है। अस्तु, अब हम आन्दोलन सम्बन्धी साहित्य का परिचय देते हैं।

१—हिन्दू जाति का स्वातन्त्र्य प्रेम—ले० — श्री० देशव्रत; प्र०—गांधी हिन्दी पुस्तक भंडार,बम्बई। मूल्य ।।।≈), पृष्ठ १३६। इसमें प्राचीन युग से लेकर पठान साम्राज्य, मुग़ल साम्राज्य और नवयुग तक हिन्दू जाति के त्याग और स्वाधीनता प्रेम का रोचक और उत्साह-वर्द्धक वर्णन है। भाषा सजीव है।

२—सिखों का परिवर्तन— मूल लेखक डाक्टर गोकुलचन्द्र एम. ए.; अनु०—श्री० स्वामी सोमेश्वरदास बी. ए.। प्र०—पुस्तक भण्डार,लाहौर। मूल्य १।।), पृष्ठ २६४ + ३३+१२। पुस्तक का मुख्य विषय यह है कि सिक्ख किस प्रकार धार्मिक सम्प्रदाय

से राजनैतिक शक्ति में परिवर्तित हुए। इस से सिक्खों की शासन प्रणाली और न्याय पद्धति का ज्ञान प्राप्त करने में भी अच्छी सहायता मिलती है। मूल पुस्तक खूब अध्ययन और मनन पूर्वक लिखी गयी है।

३—मराठों का उत्कर्ष—मूल लेखक, न्यायमूर्ति रानाडे; अनु०—श्री० भास्कर रामचन्द्र भालेराव। प्र०—तरुण भारत ग्रन्थावली, दारागंज। मूल्य १॥), पृष्ठ ३२६। मुख्य विषय ऐतिहासिक है, राजनीति-पाठकों के लिये इसमें शिवाजी का राज प्रबन्ध, चौथ और सरदेसमुखी, पेशवाओं के रोज़नामचों के कुछ वृत्तान्त, आदि पठनीय है।

४—मराठों का उत्थान और पतन—ले०—श्री० गोपाल दामोदर तामस्कर; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर। पृष्ठ ६३४, मूल्य २॥); यह इतिहास की एक बहुत उत्तम कृति है। शासन व्यवस्था के पाठकों के लिये इसके, शिवाजी की शासन व्यवस्था, मराठा राज्य का पुनः संगठन, पेशवा की शासन व्यवस्था, आदि अध्याय विशेष उपयोगी हैं।

५—तरुण भारत—यह स्व० लाजपतरायजी की अंगरेज़ी पुस्तक का संक्षिप्त अनुवाद है। प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, बनारस। मूल्य १।), सन् १९२३। अनुवादक हैं बाबू रामचन्द्र वर्मा, और कन्हैयालाल खन्ना। इसमें सम्राट् चन्द्रगुप्त के समय से आधुनिक काल तक की भारत की राजनैतिक अवस्था

का चित्र खींचा गया है और राष्ट्रीय आन्दोलन का वास्तविक इतिहास और स्वरूप बताया गया है। इसमें निम्न लिखित परिच्छेद भी हैं:—भारतीय राष्ट्रीयता और संसार की शक्तियां, भारतीय राष्ट्रीयता में धार्मिक और साम्प्रदायिक भाव, भविष्य। [यह पुस्तक चौधरी एण्ड सन्स, बनारस, से भी प्रकाशित हुई है।]

६—असहयोग—लेखिका—श्रीमती प्रियम्वदा देवी; प्र०—भारतीय भंडार, अलीगढ़; मूल्य ॥≈)। इस में असहयोग की आवश्यकता, उपयोगिता, स्वरूप और कार्यक्रम आदि सम्बन्धी साधारण लेख हैं।

७—भारत को स्वाधीनता का संदेश—म० गांधी, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, अरविन्द घोष, सरोजनी नायडू आदि देश नेताओं के कुछ चुने हुए लेखों और व्याख्यानों का संग्रह। मूल्य १।), पृष्ठ १६१।

८—स्वराज्य की योग्यता—मूल अंगरेजी लेखक, श्री० रामानंद चैटर्जी, अनु०—श्री० नंकिशोर द्विवेदी; प्र०—हिन्दी गौरव ग्रन्थमाला, बम्बई। मूल्य १।), पृष्ठ २१२, सन् १६१७। इसमें इतिहास की सहायता, तथा राजनीतिज्ञों की सम्मति के प्रमाण और युक्तियों से; उन निर्मूल मिथ्या और स्वार्थ-पूर्ण आक्षेपों का खंडन किया गया है, जो भारतीय स्वराज्य के विरुद्ध किये जाते हैं। इसमें यह सिद्ध किया गया है कि भारतवर्ष स्वराज्य के सर्वथा योग्य है, और स्वराज्य प्राप्त करने वाले देशों की उस समय की योग्यता

की अपेक्षा, जब उन्होंने स्वराज्य प्राप्त किया था, इसकी योग्यता कहीं अधिक है।

९—गोलमेज़ सभा—ले० श्री० चतुर्सेन जी शास्त्री; प्र०—गङ्गा पुस्तकमाला, लखनऊ। सं० १९८८। मूल्य १॥), पृष्ठ २४२। अंगरेज़ों और हिन्दुस्तानियों की पहली गोलमेज़ सभा का वृत्तांत। गांधी-इरविन सन्धि की शर्तें भी दी गयी हैं; भारतवर्ष की अवस्था, राजनैतिक अशान्ति, लाहौर कांग्रेस, म० गांधी की चेतावनी भी है।

१०—राष्ट्रीय आन्दोलन—ले०—श्री० प्रभूदयाल मीतल; प्र०-राष्ट्र भाषा पुस्तक भण्डार, मथुरा। पृष्ठ ३१६। मूल्य १॥), सं० १९७९। पुस्तक का नया संस्करण न होने से इस समय अधूरी-सी जान पड़ती है, तथापि आन्दोलन के सन् १९२२ ई० तक के क्रमबद्ध इतिहास की दृष्टि से उपयोगी है।

११—असहयोग दर्शन—महात्मा गान्धी के कुछ लेखों और व्याख्यानों का संग्रह। अनु०—श्री० हरिभाऊ उपाध्याय; प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, इन्दौर। पृष्ठ १५०, मल्य १।), सन् १९२१।

१२—यङ्ग इण्डिया—अनु०—श्री० छविनाथ पांडेय, बी. ए.। प्र०—हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता। तीन भाग, पृष्ठ ४४० + ७८९ + ९५४। मूल्य १) + १॥) + २), सम्वत् १९८९ और ८०। प्रथम भाग में महात्मा गांधी का संक्षिप्त जीवन चरित्र और 'यङ्ग इंडिया'

साप्ताहिक पत्र के इतिहास के अतिरिक्त डेढ़ सौ पृष्ठ की भूमिका है। जिसमें भारतवर्ष और कम्पनी के सम्बन्ध का तथा यहां के असहयोग आन्दोलन का इतिहास है। पुस्तक में, जिस दिन से महात्मा जी ने 'यङ्ग इण्डिया' का भार अपने हाथ में लिया, तब से लेकर उनकी जेल यात्रा तक के लेखों का विषयवार संग्रह है। प्रथम भाग के लेख सत्याग्रह आन्दोलन, पञ्जाब की दुर्घटना, और ख़िलाफ़त की समस्या सम्बन्धी हैं, दूसरे भाग में असहयोग और उसके कार्य-क्रम संबंधी, और तीसरे में असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा, स्वराज्य, कांग्रेस, तथा महात्माजी पर आरोपित राजविद्रोह अभियोग सम्बन्धी हैं। पुस्तक का सस्तापन 'सुलभ साहित्य सीरीज़' के नाम को सार्थक करने वाला है।

यह पुस्तक 'क्रांतिकारी विचार' आदि दूसरे नामों से भी बाज़ार में आयी है। यह सर्वथा निन्द्य है। इससे पाठकों को बहुत धोखा होता है।

<u>१३—विजयी बारडोली</u>—ले०—श्री० वैजनाथ महोदय। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। मूल्य २)। बारडोली में किसानों की जो अद्भुत विजय हुई, वह हमारे स्वाधीनता-संग्राम की चिरस्मरणीय और शिक्षाप्रद घटना है। पुस्तक प्रामाणिक है, और सचित्र भी। विषय विवेचन में स्पष्टता और निर्भीकता है, पर अत्युक्ति नहीं। आरम्भ में इस संग्राम के संचालक सरदार वल्लभ भाई का परिचय भी है। पृष्ठ कुल मिलाकर पांच सौ से अधिक हैं।

<u>१४—सन् १८५७ के गदर का इतिहास (दो भाग)</u>—ले०—श्री०

शिवनारायण द्विवेदी। मूल्य ३॥)+४॥), पृष्ठ १३३२, सं० १६७६। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। सन् १८५७ ई० की महान् घटना ने अपने बाद का भारतीय इतिहास एक ख़ास सांचे में ढाल दिया। इसके सम्बन्ध में लोगों में नाना प्रकार की भूंठी सच्ची बातें या किम्वदन्तियां प्रचलित हैं। पुस्तक में वहुत संयम तथा यथा-सम्भव स्पष्टता-पूर्वक बताया गया है कि इस घटना के कारण क्या थे, और इसके अन्तर्गत क्या क्या हुआ। पुस्तक का आधार कई प्रामाणिक ग्रन्थ हैं।

१५—अकालियों का आदर्श सत्याग्रह और उनकी विजय—ले०—बाबू सम्पूर्णानन्दजी बी. एस-सी.। प्र०—हिन्दी साहित्य मन्दिर, वनारस। मूल्य ॥)। सिक्खों के सत्याग्रह का भारतीय राष्ट्रीय संग्राम पर अच्छा प्रभाव पड़ा है। पुस्तक शिक्षाप्रद है। आरम्भ में सिक्खों के पूर्व इतिहास का संक्षिप्त परिचय होने से इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गयी है।

१६—पंजाब बीती या पंजाब हत्या कांड—ले०—डाक्टर सत्यपाल बी. ए.; प्र०—श्री० राजपाल, सरस्वती आश्रम, लाहौर। इसमें अमृतसर के जालियांवाला बाग़ की भीषण दुर्घटना सम्बन्धी छोटी छोटी प्रभावोत्पादक कहानियां हैं। मल्य १)।

१७—सन् ५७ का ग़दर—इसमें भारतीय असफल स्वातंत्र्य युद्ध की उत्पत्ति और दमन का अच्छा वर्णन है। पृष्ठ ३२६, मू० १॥)।

१८—सिपाही विद्रोह—ले०-पं० ईश्वरी प्रसाद शर्म्मा। प्र०-राष्ट्रीय ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, कलकत्ता। सं० १९७९। मूल्य ४); पृष्ठ ५२५। सचित्र है, कई प्रामाणिक ग्रंथों के आधार पर लिखी गयी है। वर्णन-शैली रोचक है। पुस्तकांत में, सिंहावलोकन बहुत विचार-पूर्ण है।

१९—ग़दर का इतिहास—ले०-श्री० पद्मराज जैन। प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। मूल्य १), पृष्ठ २९३। सन् १९२३। इसके आरम्भ में, भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना और विस्तार पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है।

२०—भारतीय युद्ध—मराठी का अनुवाद। अनु०—पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी। प्र०—चित्रशाला प्रेस, पूना। मूल्य १), पृष्ठ ३०२। सम्वत् १९७४; दूसरा संस्करण। प्रस्तावना में लो० तिलक ने महाभारत का महत्व, और विद्यार्थियों को इस विषय की क्रमशः शिक्षा दी जाने की आवश्यकता बतायी है। इसमें महाभारत-युद्ध की कथा मात्र नहीं है, नीति विषय पर भी ज़ोर दिया गया है।

२१—हिन्दू पाद वादशाही—मूल लेखक—विनायक दामोदर सावरकर। अनु०-श्री० पलटूसिंह मास्टर। मूल्य १।।।); पृष्ठ ३००, सन् १९२६। मूल लेखक अपनी योग्यता के लिये सुप्रसिद्ध है। इस इतिहास पुस्तक से मराठों की नीति, सैन्य संचालन, शासन पद्धति और राज्य व्यवस्था आदि का ज्ञान होता है, इसके अवलोकन के पश्चात् कोई उन्हें लुटेरा आदि कहने का दुस्साहस न करेगा।

२२—पंजाब की वेदना—इस पुस्तक में लाला लाजपतराय ने पञ्जाब पर किये गये अत्याचारों, और स्त्रियों बूढ़ों और बच्चों के साथ किये गये अमानुषिक व्यवहार का मर्मभेदी वर्णन किया है।

२३—सविनय अवज्ञा जांच कमेटी की रिपोर्ट—इस में असहयोग आन्दोलन का जन्म, उसका तीव्र गति से प्रसार, सरकार का दमन, कौंसिलों में भाग लेने न लेने के सम्बन्ध में विचार, आदि पर अच्छा प्रकाश डाला गया है।

२४—चम्पारण में म० गांधी—ले०-श्री० राजेन्द्रप्रसादजी। इसमें चम्पारण ज़िले के कष्ट-पीड़ित किसानों के उद्धार की कथा है। मूल्य ३)। पुस्तक हमने देखी नहीं है।

२५—भारतीय इतिहास में स्वराज्य की गूँज—यह भारतीय स्वराज्य (होमरूल) की सुप्रसिद्ध आन्दोलिका स्व० श्रीमति ऐनीबिसेन्ट की पुस्तक की प्रस्तावना का अनुवाद है। इसमें भारतवर्ष के आरम्भ से लेकर आधुनिक काल तक के इतिहास पर सूक्ष्म परन्तु स्पष्टवादिता-पूर्वक दृष्टिपात करते हुए बताया गया है कि भारतवर्ष स्वराज्य क्यों चाहता है।

२३—स्वराज्य संग्राम—ले०—श्री० भाई परमानन्द एम. ए.; प्र०—आकाशवाणी पुस्तकालय, लाहौर। पृष्ठ १८८, मूल्य ॥।≈)। इसमें भारतीय इतिहास की मध्य तथा आधुनिक कालीन घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए, वर्तमान स्वराज्य आन्दोलन पर विचार

किया गया है। कांग्रेस, और विशेषतया हिन्दू मुसलिम एकता के सम्बन्ध में श्री० भाईजी का अपना विशेष दृष्टि-कोण है।

२७—भारत माता का संदेश—ले० और प्र०—श्री० रासविहारीलाल, भागलपुर। मूल्य ।), पृष्ठ ५४। इसमें स्वदेशी, बहिष्कार, एकता, असहयोग आदि पर सरल भाषा में छोटे छोटे लेख हैं।

२८—अकाली दर्शन—प्र०—प्रताप पुस्तकालय, कानपुर। पृष्ठ १००, मूल्य ।।।)। पुस्तक में वीर अकालियों के सत्याग्रह संग्राम का सचित्र तथा शिक्षाप्रद वर्णन है।

२९—गांधी गीता—ले०—पं० नरोत्तम व्यास। प्र०—श्री० रामलाल वर्मा, कलकत्ता। मूल्य २), पृष्ठ २२९, सं० १९७९। आरम्भ में महात्माजी के कुछ उपदेशों का संग्रह है, फिर अवतार वाद पर विचार करके १८ अध्यायों में महात्माजी की एक युवक से वार्तालाप के रूप में, उनके विचारों तथा सिद्धांतों का सरल सुबोध वर्णन किया गया है।

३०—गांधीजी का बयान या सत्याग्रह मीमांसा—अनुवादक, कृष्णलाल वर्मा; प्र०—ग्रंथ भण्डार, माटुँगा, बम्बई। आरम्भ में सत्याग्रह के प्रारम्भ सम्बन्धी महात्माजी का एक लेख है। पश्चात् सर्वश्री० हंटर, रेंकिन, और सेतलवाड आदि से, महात्मा गान्धी का, पंजाब हत्याकांड सम्बन्धी प्रश्नोत्तर है।

३१—चम्पारन की जांच—सन् १९१६ में चम्पारन के किसानों

को करुण पुकार सुनकर म० गांधी वहां गये। एक जांच कमेटी की नियुक्ति हुई और अन्ततः किसानों का उद्धार हुआ। पुस्तक में जांच कमेटी की रिपोर्ट दी गयी है। विचारणीय है।

३२—जालियांवाला बाग़ या डायरशाही—ले०—दो 'न्याय प्रेमी', प्र०—तिलक ग्रन्थ माला, मथुरा। पृष्ठ ६०, मूल्य ।।)। पुस्तक असहयोग के भावों की प्रेरक है।

३३—देश पूजा में आत्म बलिदान—ले०-श्री० भाई परमानन्द प्र०—सरस्वती आश्रम, लाहौर। मूल्य १।), पृष्ठ १७५। हिन्दू वीराङ्गनाओं के वृत्तान्त के अतिरिक्त, इस्लाम से संघर्ष, आर्य जातीय जीवन, महाराष्ट्र राज्य स्थापन, अंगरेज़ों का अभ्युदय, सिक्खों और अंगरेज़ों का संघर्ष आदि विषय अच्छी प्रभावशाली भाषा में वर्णित हैं।

३४—नवयुवको! स्वाधीन बनो!—संकलयिता और प्र०—श्री० जीतमल लूणिया, हिन्दी साहित्य मन्दिर, आगरा। मूल्य ।।), पृष्ठ ८०। भिन्न भिन्न नेताओं के जोशीले लेखों या भाषणों का अच्छा संग्रह है। आरम्भ में सुप्रसिद्ध आयरिश वीर मेक्स्विनी का परिचय और उपदेश है।

३५—पञ्जाब रहस्य—पं० कृष्णकान्तजी मालवीय के शब्दों में यह ६ अप्रेल १६१६ ई० से अगस्त १६१६ तक का भारतीय ब्रिटिश शासन का इतिहास है; ब्रिटिश दमननीति, ओडायरशाही, और भारत में अ-ब्रिटिश शासन का यह स्मारक स्तम्भ है।

पुस्तक में पञ्जाब कांड सम्बन्धी पं० मदनमोहन मालवीय के प्रश्नों के अतिरिक्त 'पोलिटिकल साकीनामा' कविता है, जो जलियां-वाला बाग़ में गोली चलने के पूर्व पढ़ी गयी थी। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग; ले०—श्री० कपिलदेव मालवीय। मूल्य ।।।)।

३६—पञ्जाब का भीषण हत्याकाण्ड—इसका दूसरा नाम है, कांग्रेस कमीशन तथा हंटर कमेटी की रिपोर्ट का अनुवाद। अनु०—पं० चन्द्रशेखर पाठक; प्र०—निहालचन्द वर्मा, कलकत्ता। मूल्य १।।।), पृष्ठ ५३६। हंटर कमेटी की रिपोर्ट बहुमत, और अल्पमत दो भागों में विभक्त है। पुस्तक सचित्र है।

३७—लो० तिलक की ज़मानत—अनु०-श्री० व्रजनन्दनप्रसाद मिश्र, पीलीभीत। मूल्य १।), पृष्ठ १६०+१३६। वर्णित विषय हैं—राजद्रोह का क़ानून, ज़मानत का मुक़द्दमा, वैरिस्टरों की वहसें, हाईकोर्ट का फ़ैसला, स्वराज्य के व्याख्यान, सम्वादपत्रों की राय, और लोकमान्य की जीवनी। पुस्तक सन् १६१६ की होने पर भी ऐतिहासिक एवं राजनैतिक महत्व की है। अनुवादक की भूमिका विचार-पूर्ण है।

३८—ब्रिटिश सरकार और भारत का समझौता—ले०-श्री० केशवकुमार ठाकुर। प्र०—हिन्दी पब्लिशर्स एण्ड को०, प्रयाग। मूल्य ।।-), पृष्ठ १४६। कुछ प्रारम्भिक बातों के वर्णन के पश्चात् सन् १६३० की राजनैतिक घटनाओं, तथा कांग्रेस और सरकार के समझौते का वर्णन और उसकी आलोचना है।

३९—सत्याग्रह की मीमांसा—प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। पृष्ठ ९२। इसमें छोटी सी परन्तु विचारयुक्त भूमिका के बाद, सत्याग्रह सम्बन्धी महात्मा गांधी तथा अन्य नेताओं के लेख और भाषणों का संकलन है।

४०—सत्याग्रह और असहयोग—ले०-पं० चतुरसेन शास्त्री। प्र०—गान्धी हिन्दी पुस्तक भण्डार, बम्बई। मू० १॥), पृष्ठ २६३। इसके प्रथम खण्ड में सत्याग्रह का स्वरूप, प्रकार, प्रयोग तथा विविध भेदों पर विचार किया गया है। दूसरे खण्ड में अंगरेजी शासन पद्धति के दोष, प्रजा की दुर्दशा, असहयोग सिद्धि के उपाय, आदि का विवेचन हैं। शैली रोचक और प्रभावकारी है।

४१—स्वराज्य और हमारी योग्यता—अनुवादक, संग्रहकर्ता और प्र०—श्री० खूबचन्द मालवीय, गुरुकुल कांगड़ी। मूल्य ।) 'माडर्न रिव्यु' के आधार पर मराठी में लिखित पुस्तक का अनुवाद है।

४२—स्वराज्य सोपान—ले०-पं० भगवत प्रसाद शुक्ल; प्र०-सुलभ ग्रंथ प्रचारक मंडल, कलकत्ता। मू० १), छोटा आकार, पृष्ठ १३९। इसमें प्राचीन भारत की एक हलकी झलक, वर्तमान अधोपतित अवस्था का चित्र, और जनता के कर्तव्य की सरल विधि (विदेशी बहिष्कार) दर्शायी गयी है।

४३—स्वराज्य की धूम—इसमें राय वैकुँठनाथ, राजा साहब

महमूदाबाद, श्री० जिन्ना, सुरेन्द्र नाथ बेनर्जी, विपिनचन्द्र पाल, लो० तिलक, म० गान्धी आदि विविध नेताओं के भिन्न भिन्न अवसरों पर दिये गये भाषण संकलित हैं। प्र०—विश्वमित्र कार्यालय, कलकत्ता। मल्य ॥), पृष्ठ ११२।

४४—हम स्वराज्य क्यों चाहते हैं?—श्री० नृसिंह चिन्तामणि केलकर की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्र०—देव ब्रादर्स, काशी। सन् १९१८। मूल्य १), पृष्ठ २११। इसमें भारत की प्राचीन सभ्यता, अंगरेजी शासन में भारत, पार्लिसैंटरी शासन की विफलता, और भारत में सरकारी असफलता का विवेचन है। पुस्तक अच्छे प्रमाणों के आधार पर लिखी गयी है।

४५—हम असहयोग क्यों करें?—सम्पादक—श्री० रामराव सिंह सहगल; चांद कर्यालय, प्रयाग। दूसरा संस्करण, सन् १९२२। मूल्य ॥), पृष्ठ ९१। इसमें असहयोग के भिन्न भिन्न कारण, आवश्यक तथ्यों सहित बतलाकर पंजाब हत्याकांड आदि सम्बन्धी कुछ लेख तथा पत्रों का संकलन किया गया है।

४६—गांधी की आंधी—ले०—श्री० चतुरसेन शास्त्री। प्र०-संजीवनी इन्स्टीट्यूट, दिल्ली। मूल्य १।), पृष्ठ १३२। महात्मा गांधी विशेषतया सन् १९१९ ई० से १९३४ ई० तक भारतीय आन्दोलन के प्रधान सूत्रधार रहे। इस पुस्तक में उनकी नीति, कार्य-क्रम, तथा फलाफल की खरी आलोचना की गयी है। अनेक नेताओं

से भिन्न, लेखक का कुछ अंशों में अपना पृथक् दृष्टिकोण है, और उसे चलती हुई तीक्ष्ण भाषा में उपस्थित किया है।

४७—देहरादून और गढ़वाल के राजनैतिक आन्दोलन का इतिहास; १६१८—३१—सम्पादक—श्री० नरदेव शास्त्री, मू० ।≈), पृष्ठ १२८। सुयोग्य सम्पादकजी ने इसे प्रस्तुत कर ऐसी महत्वपूर्ण स्थानीय सेवा की है जो अन्य स्थानों के विद्वान कार्यकर्ताओं के लिये अनुकरणीय है। पुस्तक में संक्षेप में भारत में ब्रिटिश राज्य के इतिहास का भी परिचय है। एक तालिका में जिला देहरादून से कांग्रेस आन्दोलन में जेल यात्रा करने वालों की व्यौरेवार नामावली है।

४८—भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास–ले०–आचार्य नरेन्द्रदेव। प्र०—नवयुग प्रकाशन मन्दिर, बनारस छावनी। मूल्य ॥), पृष्ठ ८६। यह श्री० कन्हैयालालजी की पुस्तक 'कांग्रेस के प्रस्ताव; १८८५-१६३१' की भूमिका है। इसमें भारतीय राष्ट्रीय जीवन के विकास का शृङ्खलावद्ध सुन्दर वृत्तान्त है।

४६—राष्ट्रीय आन्दोलन और वैदिक धर्म—ले० और प्र०—श्री० महता रामचन्द्र शास्त्री। मूल्य ।≈)। इसमें बतलाया गया है कि वेद या धर्म वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन के विविध प्रश्नों पर क्या कहता है। दृष्टिकोण राष्ट्रीय है, स्थान स्थान पर संस्कृत उद्धरण दिये गये हैं।

राजनैतिक आन्दोलन; (ख) अन्यदेशीय—हर्ष का पिपय है कि भारतवासी अब अन्य देशों की राजनैतिक प्रगति को भी वड़ी सावधानी से देखने लगे हैं, और इस लिये विविध देशों के आन्दोलन से सम्बन्धित साहित्य भी क्रमशः बढ़ता जारहा है। यों तो ऐसा साहित्य राजनीति-प्रेमियों के लिये सदैव ही उपयोगी होता है, पर जब किसी देश की जनता स्वराज्य-प्राप्ति के आन्दो-लन में लगी हो, उस समय तो उसके लिये इस साहित्य का अध्ययन और मनन अनिवार्य ही होजाता है। इससे उसे बहुत शिक्षा मिलती है, और वह उससे बड़ा लाभ उठा सकती है।

१—अमरीका को स्वाधीनता का इतिहास—ले०-श्री० देवकी-नन्दन विभव एम. ए.। प्र० - उमाशंकर मेहता, काशी। संवत् १९८७। पृष्ठ २४०, मूल्य २)। पुस्तक कई अंगरेजी पुस्तकों के आधार पर लिखी गयी है। वर्तमान भारतीय समस्या तत्कालीन अमरीका की समस्या से बहुत कुछ मिलती हुई होने के कारण, पुस्तक भारतीय आन्दोलकों के लिये बहुत उपयोगी है। रक्तपात का अंग छोड़कर शेष सभी भाग शिक्षाप्रद हैं।

२—अमरीका की स्वाधीनता— एक अंगरेज़ी पुस्तक का संक्षिप्त अनुवाद। अनु०—श्री० प्रयागप्रसाद तिवारी। प्र०—राष्ट्र भाषा पुस्तक भंडार। पृष्ठ ६०, सं० १९८०। छपाई आदि मामूली, मूल्य ॥) आना।

३—संसार की क्रान्तियां—ले०-श्री० सुखसम्पतिराय भंडारी;

प्र०—राष्ट्रीय साहित्य भण्डार, अजमेर। पृष्ठ २३८, मूल्य १॥=), सन् १९२३ ई०। संसार का स्वातंत्र्य नाश, पीतांग का स्वातंत्र्य नाश, चीन की राज्य क्रान्ति, कोरिया का स्वातन्त्र्य युद्ध, मिश्र में नयी जागृति, अमरीका की राज्य क्रांति, श्याम की स्वाधीनता का नाश, और भारत में क्रान्ति वर्णित हैं। भाषा सजीव है।

४—फ्रांस की राज्य क्रांति—मराठी पुस्तक का अनुवाद, अनु०—बाबू प्यारेलाल गुप्त। सं० १९७८, द्वितीय संस्करण। मूल्य १=), पृष्ठ २२८। प्र०—तरुण भारत ग्रन्थावली, दारागञ्ज। पुस्तक में जहां तहां राजनैतिक कार्यकर्ताओं या नेताओं के कथनोपकथन या वार्तालाप के महत्व-पूर्ण अंशों का समावेश होने से विषय बहुत रोचक होगया है।

५—जापान की राजनैतिक प्रगति—यह एक खोज-पूर्ण प्रामाणिक ग्रन्थ का अनुवाद है; अनुवादक हैं, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे। प्र०—ज्ञानमण्डल, काशी। पृष्ठ ४१०। मूल्य ३॥=), सं० १९७८। सं० १९२४ से १९६६ तक की प्रगति का विवेचन है। आरम्भ में श्री० रामदासजी गौड़ ने जापान पर एक सरसरी निगाह जोड़दी है। पुस्तक में जापान के इतिहास का तिथिवार घटना-क्रम भी दिया गया है। जहां तहां प्रसंगानुसार सिद्धांतों का भी अच्छा विवेचन है। बहुत उपयोगी है।

६—आयर्लैंड की राज्य क्रान्ति अथवा शिनफिन रहस्य—प्र०—राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, इलाहाबाद। लेखक का नाम नहीं। मूल्य।-)

पुस्तक छोटी होने पर भी उपयोगी है। इसमें अयरिश देशभक्तों के स्वातन्त्र्य-आन्दोलन का संक्षिप्त इतिहास है।

७—एशिया का जागरण—ले०-श्री० लक्ष्मण नारायण गर्दे; प्र०—हिन्दी पुस्तक भवन, कलकत्ता। मूल्य १), पृष्ठ २७२, सम्वत् १६८१। इसमें चीन, जापान, और भारतवर्ष की राजनैतिक भावनाओं तथा कार्यों का वर्णन है। एशिया के विविध देशों की सांस्कृतिक एकता तथा स्वार्थैक्य को लक्ष्य में रखकर यह रचना की गयी है। पुस्तक में वहुत विचारपूर्ण सामग्री है।

८—दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह; दो भाग—ले०—महात्मा गान्धी, प्र०-सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर। मूल्य १।-)। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह संग्राम आठ वर्ष चला, वहीं 'सत्याग्रह' शब्द का आविष्कार और प्रयोग हुआ। महात्माजी उसके संचालक थे, अतः स्वभावतः इसके लिखने के आप सर्वश्रेष्ठ अधिकारी थे। महात्माजी ने पुस्तक के आरम्भ में यह भी वतादिया है कि भारतवर्ष में आन्दोलन कहां कहां इस रूप में हुआ। यह पुस्तक सत्याग्रह के सिद्धान्त का विकास जानने के लिये अत्युपयोगी है।

९—नरमेध—ले०—श्री० चन्द्रभाल जौहरी। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। मूल्य १।), पृष्ठ ४७६। इसमें हालैंड निवासियों के, स्वाधीनता की रक्षा में किये हुए आत्म वलिदान का चित्र है। यह अंगरेजी की एक सुप्रसिद्ध अमर कृति के आधार पर लिखी गयी है। श्री० जौहरी जी ने भाषा को वैसा ही

सजीव रखने का प्रयत्न किया है। पुस्तक स्वातन्त्र्य युद्ध के लिये सञ्जीवनी शक्ति प्रदान करने वाली है।

१०—चीन की आवाज़—मूल पुस्तक अंगरेज़ी में है। उसका गुजराती अनुवाद हुआ। हिन्दी भाषान्तरकार श्री० बैजनाथ महोदय बी० ए० हैं। गुजराती पाठकों के लिये श्री० काका कालेलकरजी ने जो प्रस्तावनात्मक परिचय लिखा था, वह तथा उनके गुजराती पुस्तक में समाविष्ट 'सहचार' नामक निबन्ध को इसमें ले लिया गया है। मूल लेखक से यह सहन न हुआ कि उसके देश की सरकार द्वारा चीन के प्रति अन्याय और अत्याचार हो; उसने अपने देशबन्धुओं के चेताने के लिये यह प्रभावोत्पादक पुस्तक इस ढङ्ग से लिखी है मानों चीन के एक नागरिक ने अंगरेजों को पत्र भेजे हैं। मूल्य ।–), पृष्ठ १३३।

११—रूस की राज्य क्रान्ति—इसमें रूस के आधुनिक काया-पलट का वर्णन है। निरंकुश शासकों के अत्याचारों से कैसे छुटकारा मिलता है, यह इसमें अच्छी तरह बताया गया है। कई चित्र हैं। प्र०—प्रकाश पुस्तकालय, कानपुर। मूल्य २॥)

१२—विश्व की भीषण क्रांतियां-सम्पादक 'वीरेन्द्र विद्यार्थी' प्र०—एस. एल. विन्दु। मूल्य १), पृष्ठ केवल १२०। आरम्भ में 'शान्ति और क्रान्ति' पर कुछ विचार करके विशेषतया भारत सम्बन्धी विषय ही लिया है, रूस और चीन के सम्बन्ध में बहुत थोड़ा विचार हुआ है। अन्य देशों के विषय में दूसरी पुस्तक में विचार करने की सूचना है।

१३—पराधीनों की विजय माला—ले०—मुन्शी नवजादिक-लाल श्रीवास्तव। प्र०—नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, चुनार। मूल्य २॥), पृष्ठ ४८८, सन् १६३४। इसमें संसार के भिन्न भिन्न छत्तीस पराधीन देशों के स्वतन्त्रता प्राप्ति सम्बन्धी किये गये उद्योगों का संक्षिप्त परन्तु रोचक और शिक्षाप्रद वर्णन है। पुस्तक अपने ढङ्ग की बहुत उत्तम है।

१४—अमरीका कैसे स्वाधीन हुआ?—प्र०—हिन्दी साहित्य कार्यालय, कलकत्ता। छोटा आकार, पृष्ठ १५८, सं० १६८०। मूल्य ॥)। भारतीय स्वाधीनता-प्रेमी शिक्षा लें, इस उद्देश्य से लिखी गयी है। असहयोग और वहिष्कार की नीति, तथा महिलाओं का योगदान विशेष विचारणीय हैं।

१५—आयर्लैण्ड में होमरूल—ले०—श्री० सुरेन्द्र नारायण तिवारी। प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। पृष्ठ १३०, मूल्य ॥–)। इसमें ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत आयर्लैंड ने किस प्रकार, किन कठिनाइयों को सहकर स्वाधीनता प्राप्त की, इसका भारतवासियों के लिये शिक्षाप्रद वर्णन है।

१६—इटली की स्वाधीनता—ले०--श्री० नंदकुमारदेव शर्म्मा। मू० ॥), पृष्ठ १०६, तरुण भारत ग्रंथावली, दारागंज। मेज़िनी, गेरिबाल्डी, और कावूर जैसे सुप्रसिद्ध देशभक्तों के नेतृत्व में इटली निवासियों ने किस प्रकार अनेक कष्ट सहते हुए अपनी मातृभूमि को स्वाधीन किया, इसका अच्छा वर्णन है।

१७—एशिया में प्रभात—मूल लेखक—फ्रांसीसी दार्शनिक श्री० पाल रिचर्ड। अनु०—ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत। प्र०—गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ। मूल्य ॥)। एशिया की एकता और भविष्य, जापान का संदेश, प्रजातंत्र, भावी मनुष्य, जातीय समानता संघ आदि विषयों पर सुन्दर विचार प्रकट किये गये हैं।

१८—चीन की राज्य क्रांति—ले०-श्री० सम्पूर्णानन्द वर्मा, प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर, मूल्य १॥), पृष्ठ लगभग २००। पुस्तक में चीन का प्राचीन इतिहास देते हुए बताया गया है कि वहां राज सत्ता का अन्त होकर, किस प्रकार प्रजातंत्र की स्थापना हुई। यह राजक्रांति वहां की सामाजिक अवस्था, एवं विदेशियों पर बड़ा प्रभाव डालने वाली थी।

१९—एशिया की क्रांति—ले०-श्री० सत्यनारायण पी-एच. डी.। प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। मूल्य १॥), पृष्ठ ४४४। लेखक ने योरुप की यात्रा की है, और समाज-शास्त्र आदि का खूब अध्ययन किया है। वह एशिया के, और उसके साथ संसार के, उज्वल भविष्य की दृढ़ आशा करता है। पुस्तक में रूस, चीन, जापान, भारत, फ़ारिस आदि की जागृति का विवेचन है।

२०—प्रेसीडैंट विलसन और संसार की स्वाधीनता—ले०-श्री० सुखसम्पत्तिराय भण्डारी। प्र०-मध्यभारत पुस्तक एजन्सी इन्दौर, मूल्य ॥), पृष्ठ ८८। गत योरपीय महाभारत के समय अमरीका के राष्ट्रपति विलसन का नाम संसार के कोने कोने में

फैल गया था। आपके विचारों में स्वाधीनता और समानता आदि के उच्च भाव हैं। पुस्तक में आपके परिचय के अतिरिक्त, आपके सात महत्व-पूर्ण भाषण हैं।

२१—बोलशेविक लाल क्रांति—ले०—श्री० रमाशंकर अवस्थी, कानपुर। पृष्ठ लगभग ३००। इसमें कई पुस्तकों के आधार पर रूस की राज्य क्रांति का विवेचन किया गया है, अंत में बोलशेविक समाज क़ानून, बोलशेविक समाज संगठन, और श्रमजीवियों के व्यवहार पर प्रकाश डाला गया है।

२२—मिश्र की स्वाधीनता—ले०— श्री० सम्पूर्णानन्द जी बी. एस-सी.। प्र०—सुलभ ग्रन्थ प्रचारक मण्डल, कलकत्ता। मूल्य २); पृष्ठ २१८। मिश्र का प्राचीन इतहास देने के बाद, स्वाधीनता-प्राप्ति के आन्दोलन, और बाधाओं आदि का वर्णन किया गया है। पुस्तक शिक्षाप्रद है।

२३—रूस में युगान्तर—ले०—श्री० विश्वम्भर नाथ जिज्जा, प्र०—एस. आर. बेरी एण्ड को०, कलकत्ता। मूल्य २), पृष्ठ २३६। इससें सन् १८६७ से लेकर रूस की आधुनिक महान् क्रांति तक का मनोरंजक वर्णन है। राजनीति के विविध दाव-पेंच, उथल-पुथल और और ऊंच-नीच का परिचय है।

२४—संसार व्यापी असहयोग—अंगरेज़ी पुस्तक का भावानुवाद। अनु०—श्री० शंकरराव जोशी। मू० ।।-), पृष्ठ ६८। प्र०—हिंदी राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, खंडवा। इसमें इस बात का अच्छा

शिक्षाप्रद विवेचन है कि भारतवर्ष के बाहर, कोरिया, हंगरी, आयर्लैंड आदि देशों में असहयोग कैसे चला, और उसे कहां तक सफलता मिली।

२५—स्वतंत्रता के प्रेमी या सिनफ़िनर—ले०—पं० पारस नाथ त्रिपाठी। प्र०—भारतीय पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मू० ।) पृष्ठ ४०। इसमें आयर्लैंड की स्वाधीनता का संक्षिप्त परिचय है।

२६—मिश्र की आज़ादी की जंग—ले० और प्र०—श्री० मानजीतसिंह राठौर बी. ए., देहरादून। मल्य ।), पृष्ठ ३६, बड़ा आकार। पुस्तक छोटी है, पर अच्छे ढंग से लिखी हुई तथा उपयोगी है। हां, यह सन् १९२२ की छपी है, और उसी समय तक के आन्दोलन का इस में विवेचन है। पूर्ण विचार वाले नये संस्करण की आवश्यकता है।

२७—आयर्लैंड का स्वातन्त्र्य युद्ध—यह सुप्रसिद्ध आयरिश क्रान्तिकारी श्री० डेलब्रीन की आत्म-कथा का भावानुवाद है। अनु०—श्री० बलवन्त, प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर। मूल्य ।≈), पृष्ठ ९९। आयरिश वीरों के त्यागमय जीवन का यह आकर्षक वर्णन बहुत शिक्षाप्रद और उत्साह-वर्द्धक है।

राजनैतिक संस्थाएं; (क) राष्ट्रीय—बहुत से पराधीन देशों में ग़ैर-सरकारी राष्ट्रीय संस्थाएं जागृति और उत्थान का कार्य करती रहती हैं, जैसे भारतवर्ष में कांग्रेस आदि करती हैं। स्वाधीन देशों में तो ये संस्थाएं ग़ैर-सरकारी के अति-

रिक्त, सरकारी भी होती हैं। ऐसी संस्थाओं के संबंध में हिन्दी में अत्यल्प साहित्य है।

१-कांग्रेस का इतिहास—ले०—सूर्यनारायण बी० ए०। मूल्य ॥-), पृष्ठ १२८, सन् १९१८। अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। भारतवर्ष की सर्वोपरि राष्ट्रीय संस्था सम्बन्धी इस पुस्तक की उपयोगिता स्पष्ट है। इसमें उसका सन् १९१६ तक का संक्षिप्त इतिहास है। अब इस का नया परिवर्द्धित संस्करण आवश्यक है।

कांग्रेस के सम्बन्ध में एक बड़ी ब्यौरेवार पुस्तक छपी थी, पर वह ज़ब्त होगयी है और हिन्दी संसार के सामने नहीं रही।

२—पार्लिमेंट—ले०—श्री० सुपार्श्वदास गुप्त बी. ए.। प्र०—राजपूताना हिन्दी साहित्य सभा, झालरापाटन। मू० ॥=), पृष्ठ २५६। सन् १९१७। यह अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है। आवश्यक परिशिष्ट, इतिहास सम्बन्धी पाद-टिप्पणियां 'फुटनोट' तथा पेरेग्राफों के शीर्षक आदि हिन्दी भाषान्तर की विशेषता हैं। अपने विषय की बहुत अच्छी पुस्तक है, और परिश्रम से लिखी गयी है।

राजनैतिक संस्थाएं; (ख) अन्तर्राष्ट्रीय—इस समय भिन्न भिन्न राष्ट्रों का पारस्परिक सम्बन्ध बढ़ता जा रहा है। कितनी ही राजनैतिक संस्थाओं का सम्बन्ध कई कई राष्ट्रों से है। राष्ट्र-संघ में कई दर्जन राष्ट्र सम्मिलित हैं। खेद है, ऐसी विशाल

क्षेत्र वाली राजनैतिक संस्थाओं के सम्बन्ध में हिन्दी में अच्छी उपयोगी पुस्तकों का एक दम अभाव है।

अन्तर्राष्ट्रीय विधान—जब कि देश पराधीन है, पाठकों को ऐसी सामग्री देना, जिसका सम्यग् उपयोग वे स्वतन्त्र होने पर, अन्य देशों से व्यवहार करते समय कर सकेंगे, लेखक तथा प्रकाशक के बड़े साहस और दूरदर्शिता का काम है। हिन्दी में इस विषय की एक मात्र पुस्तक 'अन्ताराष्ट्रीय विधान' है। ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द बी० एस-सी०, एल० टी०। प्र०—ज्ञान मंडल, काशी। सम्वत् १९८१। पृष्ट संख्या ४५६+७०। मूल्य ३।), पुस्तक विचारपूर्ण है। सन्धिकालीन विधान, युद्धकालीन विधान, ताटस्थ सम्बन्धी विधान, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, आदि विषयों पर खूब प्रकाश डाला गया है। पुस्तक उच्च श्रेणियों के विद्यार्थियों तथा जिज्ञासुओं के लिये बहुत उपयोगी है।

साम्राज्यवाद—साम्राज्यवाद बहुत समय तक मानव-जाति के लिये एक वरदान बताया जाता रहा। यद्यपि इस समय भी इसका गुणगान करने वालों की कमी नहीं, पर अनेक भू-भागों में दलित और अधीन प्रजा, यदि उच्च और स्पष्ट स्वर से नहीं, तो अपनी आहों से इसे एक अभिशाप सूचित कर रही है। साम्राज्य का अर्थ क्या है, इसका इतिहास कैसा रहा है, और भिन्न भिन्न देशों में इस का स्वरूप कैसा है, साम्राज्यों का उत्थान और क्षय क्यों होता है, इस सम्बन्ध में निम्न लिखित पुस्तकें हमारे देखने में आयी हैं:—

१—मौर्य साम्राज्य का इतिहास—ले०-श्री० सत्यकेतु विद्यालंकार, प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य ५), पृष्ठ ७१६। यह अपने विषय की, इस समय तक सर्वोत्तम पुस्तक है। अन्यान्य बातों में चन्द्रगुप्त कालीन शासन, स्थानीय स्वशासन, और न्याय व्यवस्था, तथा आर्थिक व्यवस्था, एवं सम्राट अशोक के शासन का अच्छा परिचय है। प्रारम्भ में 'साम्राज्य का विकास' और अन्त में 'मौर्य साम्राज्य का पतन' दर्शाया गया है।

२—एशिया निवासियों के प्रति यूरोपियनों का वर्ताव—ले०—ठाकुर छेदीलाल एम० ए०। प्र०-प्रताप पुस्तकालय, कानपुर। मूल्य ।=), पृष्ठ ६२; सन् १९२१। पुस्तक छोटी होने पर भी विचारपूर्ण है। पांच व्यंग्य चित्र भी हैं। इसमें मिश्र, ईरान, रूस, चीन, और भारत आदि पर किये गये श्वेतांगों के अत्याचारों का वर्णन है।

३—जातियों को सन्देश—सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी विद्वान पाल रिचर्ड की पुस्तक का अनुवाद। अनु०—ठाकुर कल्याणसिंह शेखावत। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। मूल्य ॥-), सम्वत् १९७९। पुस्तक में समस्त, और विशेषतया योरपीय जातियों को स्वार्थ-भाव त्याग कर पारस्परिक भ्रातृ भाव के साम्राज्य में रहने का सन्देश है। आरम्भ में श्री० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की विश्व-शांति विचार मूलक भूमिका है।

४—गोरों का प्रभुत्व—ले०—श्री० रामचन्द्र वर्मा। प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर। मूल्य ॥।=); संसार की सवर्ण

जातियां जागने और स्वतन्त्र होने लगी हैं, और वे अपने देशों से गोरों का प्रभुत्व हटाती जारही है, यही वर्णित विषय है।

५—साम्राज्यवाद—ले०—श्री० मुकन्दीलाल श्रीवास्तव। प्र०-ज्ञानमण्डल,काशी। पृष्ठ ४४६, मू० २॥), सं० १६६०। इसके प्रथम खण्ड 'साम्राज्यवाद क्या है?' में साम्राज्यवाद के सम्बन्ध में दार्शनिकों, ऐतिहासिकों तथा इस विषय के अन्य विचारकों का मत स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। दूसरे भाग में बताया गया है कि संसार के भिन्न भिन्न भागों में साम्राज्यवाद किस प्रकार फैला। वाणिज्य व्यवसाय पर बैंकों का प्रभाव, पूर्णाधिकारियों को स्थापना, पूँजीवादी राष्ट्रों की लूट खसोट, आदि अनेक बातों का वर्णन करके फ्रांस, ब्रिटेन, जापान आदि के राज्य विस्तार के कारणों पर विचार किया गया है। अपने विषय की एक मात्र पुस्तक है।

६—गोरा चाम, काले काम—ले०-श्री० बालमुकन्द बाजपेयी, प्र०—प्रताप कार्यालय,कानपुर। मूल्य १), पृष्ठ २२६, सन् १६२५। अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश भू-भाग पर योरुप की गोरी जातियों का कैसे, किन किन उपायों से अधिकार हुआ और वहां के काले मनुष्यों से गोरे देवों ने कैसा 'सुसभ्य' और 'ईसाई धर्म संगत' व्यवहार किया, यह इस पुस्तक में अच्छी तरह दिखाया गया है। आरम्भ में गुलामी का संक्षिप्त वर्णन है। पुस्तक ज्ञानवर्द्धक है।

७—हिन्दुस्तान गुलाम कैसे बना?—यह 'एम्पायर इन एशिया' का अनुवाद है। अनु०—ठाकुर लक्ष्मण सिंहजी। प्र०—प्रताप प्रेस कानपुर। सन् १९२५। मूल्य २।), पृष्ठ ५११। इसमें हिन्दुस्तान के गुलाम बनाये जाने की करुण कथा है। शासक और शासितों का पारस्परिक व्यवहार इस में चित्रित है। लेखक की निर्भीकता तथा निष्पक्षता पढ़ते ही बनती है।

८—ब्रिटिश राज रहस्य—यह अंगरेज़ लेखक सिली की पुस्तक के भारतवर्ष सम्बन्धी अंश का अनुवाद है। अनुवादक हैं, ठाकुर राजकिशोरसिंह बी. ए.। प्र०—भारतमित्र प्रेस, कलकत्ता। ब्रिटिश भारत का स्वरूप, अंगरेज़ों ने हिन्दुस्तान कैसे लिया, ब्रिटिश शासन रहस्य, भारत विजय की प्रेरणा, भारतेतर ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार, विषयों का वर्णन है। मूल पुस्तक ५० वर्ष पहले लिखी गयी थी, पर इस की अनेक बातें भारतीय पाठकों के लिये अब भी बहुत विचारणीय हैं। भूमिका और परिशिष्ट भी बड़े उपयोगी हैं।

९—भारत और इंगलैंड—यह पूर्वोक्त अंगरेज़ी पुस्तक के आधार पर है, और इसका विषय उपर्युक्त प्रकार का ही है। अनुवादक हैं श्री० मातासेवक पाठक, प्र०—साहित्याश्रम, कछवा, मिर्ज़ापुर। मूल्य १।।), पृष्ठ २०७।

१०—भारत में ब्रिटिश साम्राज्य—ले०—श्री० गंगाशंकर मिश्र एम. ए.। प्रकाशक हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी। मूल्य ४।।), पृष्ठ संख्या ५९९। यह पुस्तक अभी तक हमने देखी नहीं है।

११—मुग़ल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण—ले०—श्री० इन्द्र विद्या वाचस्पति। प्र०—हिन्दी ग्रंथरत्नाकर, बंबई। सन् १६२६। मूल्य ३), पृष्ठ ३६८। सचित्र। प्रस्तुत पुस्तक के दो भाग हैं। (अब शायद तीसरा, चौथा भी प्रकाशित होगया हो)। पहले में २४ और दूसरे में २८ विषय हैं। इनमें अकबर के राज्यारोहण से श्रीगणेश करके औरङ्गजेब के समय में राजपूत, जाट, सिक्ख और मराठों के उत्थान तक का विवेचन किया गया है। भाषा सजीव है। पुस्तक पढ़ने में खूब मन लगता है। प्रतिपादित विषय का चित्र सामने आजाता है। अपने विषय की एक मात्र इतनी सुन्दर और बढ़िया कृति है।

१२—रोम साम्राज्य—यह मराठी में प्रकाशित 'रोम साम्राज्य' की छाया है। छाया-लेखक हैं, श्री० शंकरराव जोशी। प्र०—ज्ञान मण्डल काशी, मूल्य २॥), पृष्ठ ३२३। भाषा में प्रवाह और रोचकता है। पुस्तक में विशेषतया इस बात का विवेचन है कि हज़ारों वर्षों से प्रजातंत्र शासन का उपभोग करने वाले रोम के लोगों ने राजसत्ता को किस प्रकार अपनाया, रोम का राज्य कैसे फैला और सामाजिक कुरीतियों, ऐशोआराम तथा दुराचार ने इस विशाल वृक्ष की जड़ मे कैसे घुन लगा दिया।

१३—साम्राज्य और उन का पतन (अप्रकाशित)—ले०—श्री० भगवानदास केला, वृन्दावन। इसमें संसार के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक साम्राज्यों के स्वरूप आदि के भेदों का

वर्णन है, तथा उनके पतन के विविध कारणों पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है। मानव समाज के संगठन में साम्राज्य के स्थान पर भी विचार किया गया है।

प्रवासी भारतीय—राष्ट्रीय जागृति से भारतीय जनता का ध्यान अपने प्रवासी बन्धुओं की ओर अधिकाधिक आकर्षित हुआ; साथ ही, प्रवासी बंधुओं के कष्टों ने राष्ट्रीय जागृति को प्रगति प्रदान की। अस्तु, इस विषय का निम्न लिखित साहित्य हमारे सामने है:—

१—फीजी की समस्या—ले० और प्र०—पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, सत्याग्रह आश्रम, साबरमति, अहमदाबाद। मूल्य १), पृष्ठ ३३६। लेखक ने बतलाया है कि फिजी प्रवासी भारतवासी किस प्रकार फिजी में आत्म-सम्मान-पूर्वक रहसकते हैं, और फिजी की उन्नति तथा और गौरव-वृद्धि के कारण हो सकते हैं। इस समस्या पर विचार करने के लिये फिजी प्रवासियों के गत ४० वर्ष के इतिहास का सम्यग्, यद्यपि संक्षिप्त, परिचय दिया गया है। पुस्तक सम्भवत: १९२१ में प्रकाशित हुई; पश्चात् दूसरा संस्करण देखने में नहीं आया।

२—मेरी फिजी यात्रा—मूल लेखक—श्री० गोविन्दसहाय शर्मा, अनु०—पं० बनारसीदास चतुर्वेदी। सन् १९२८। मू० ।–), पृष्ठ ६१। श्री० शर्माजी फिजी कमीशन के सदस्य नियुक्त हुए थे; सरकार ने उस कमीशन की रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की। पुस्तक में

तत्सम्बन्धी यात्रा का वर्णन है। श्री० शर्माजी को प्रवासी बन्धुओं के कष्टों की बड़ी चिन्ता रहा करती थी, मृत्यु शैय्या पर पड़े हुए भी आपको वही धुन थी। इससे पुस्तक की उपयोगिता स्पष्ट है।

३—केनिया में हिन्दुस्थानी—ले० और प्र०—श्री० बाबूराम मिश्र। मूल्य १॥), पृष्ठ २८८। सम्वत् १९८८। इसमें कुछ भौगोलिक और ऐतिहासिक वर्णन के बाद बतलाया गया है कि इस उपनिवेश में ब्रिटेन का अधिकार होने में हिन्दुस्थानियों ने कितना योग दिया, तिस पर भी इसे गोरा उपनिवेश बनाने की नीति से यहां हिन्दुस्थानियों पर नाना प्रकार के अत्याचार किये गये। उसके प्रतिकार, तथा रंग-भेद की समस्या का हल करने के उपाय-स्वरूप ब्रिटिश माल का बहिष्कार और असहयोग के अवलम्बन का आदेश किया गया है।

४—ट्रान्सवाल में भारतवासी—ले०—श्री० भवानीदयाल। प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ।≡), पृष्ठ ७१। लेखक ने अपने अनुभव से इस में ट्रांसवाल सरकार की अमानुषिकता के साथ, प्रवासी भारतीयों की निर्बलता का भी सम्यग् परिचय कराया है; और ट्रांसवाल के भूत वर्तमान और भविष्य का चित्र अंकित किया है।

५—दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव—ले०—श्री० भवानीदयाल, प्र०—चाँद कार्यालय, प्रयाग; मूल्य २॥) पृष्ठ ४१४। सन् १९२७। इसमें ३७ परिच्छेद हैं—कुछ के शीर्षक ये हैं—गौरांग नीति

का पहला अनुभव, गौरांग नीति का नग्न नृत्य, डरबन में कुछ दिन, सत्याग्रह और उसके विरोधी, हड़ताल का मङ्गलाचरण, कारागार में आत्मबोध, बन्दी जीवन और अनशन व्रत, ट्रांसवाल और नेटाल में हिन्दी प्रचार आदि। लेखक अपने विषय के पर्याप्त अनुभवी हैं और भाषा पर यथेष्ट अधिकार रखते हैं। पुस्तक प्रामाणिक और उपयोगी है।

६—फिजी में भारतीय प्रतिज्ञा-बद्ध कुली प्रथा—मूल अंगरेजी लेखक सी. एफ- एण्ड्रूज़ और डबल्यू . डबल्यू . पियर्सन। हिन्दी लेखक 'एक भारतीय हृदय'। मूल्य ।।।), पृष्ठ २४०। सन् १६१६। हिन्दी लेखक ने प्रारम्भ में एक सविस्तर भूमिका देकर इन प्रश्नों का उत्तर दिया है:-क्या भारतवासियों की उपेक्षा नीति से भविष्य में काम चल सकेगा, प्रवासी भारतवासियों का क्या कर्तव्य है और कब किन उपायों से प्रवासी भारतीयों का उद्धार हो सकता है। पुस्तक में प्रामाणिकता और स्पष्टवादिता है।

७—प्रवासी भारतवासी—ले०—'एक भारती हृदय', प्र०—सरस्वती सदन, इन्दौर। मूल्य ४।), पृष्ठ ७२८, सन् १६१८। यह अपने विषय का सबसे व्यापक और महत्व-पूर्ण ग्रन्थ है। इसमें प्राचीन तथा आधुनिक काल के भारतीय प्रवास का ऐतिहासिक परिचय दिया गया है, दासत्व प्रथा और उसके पुनर्जन्म (प्रतिज्ञावद्ध कुली प्रथा) पर विचार किया गया है। ब्रिटिश साम्राज्य के विविध स्थानों में भारतीयों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार का वर्णन किया गया है, तथा भारत सरकार, ब्रिटिश

सरकार और भारतवासियों के कर्तव्यों का निर्देश किया गया है। आवश्यक परिशिष्टों और तथ्यांकों से पूरित है।

८—फ़िजी द्वीप में मेरे २१ वर्ष—ले०—पं० तोताराम सनाढ्य। प्र०—भारती भवन, फ़िरोज़ाबाद। मूल्य ।≈), पृष्ठ १५२ सं० १९७२। लेखक को फ़िजी प्रवासी भारतीयों के विषय की अनूठी लगन थी, उसने इसके लिये अनेक कष्ट सहे, त्याग किया और अपने अन्त समय तक उस धुन को न छोड़ा। पुस्तक का गुजराती, मराठी, उर्दू और अंगरेज़ी आदि में भाषान्तर हो चुका है। इसकी उपयोगिता और सर्वप्रियता स्पष्ट है।

९—प्रवासी भारतीयों की वर्तमान समस्याएं—ले०-श्री० प्रेम नारायण अग्रवाल बी. ए., प्रधान मंत्री, भारतीय औपनिवेशिक संघ। मूल्य १); प्र०—व्यवस्थापक, मानसरोवर साहित्य निकेतन, मुरादाबाद। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है।

वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति—भिन्न भिन्न देशों की वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति का परिचायक साहित्य कितना उपयोगी होता है, यह बताने की कुछ आवश्यकता नहीं। हिन्दी में इस विषय का साहित्य विशेषतया भारतवर्ष सम्बन्धी ही है। अन्य देशों की वर्तमान परिस्थिति को दर्शाने वाले ग्रन्थों का तो एक दम अभाव-सा है। रूस के सम्बन्ध में कुछ पुस्तकें हैं, उनमें से जिनका विषय अधिकतर आर्थिक है, उनका उल्लेख पहिले किया जा चुका है।

१—वर्तमान भारत—श्री० पामीदत्त की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०-'यश'। प्र०—नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स, लाहौर। मूल्य १॥), पृष्ठ २०७। साम्राज्यवाद की नींव, भूमि पर अनुचित दबाव, उद्योग धन्धों के मार्ग में असुविधा, भारत का औद्योगिक विकास, साम्प्रदायिक समस्या, मजदूर दल का संगठन, भारत और अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर दल, भारत और ब्रिटिश मज़दूर आदि विषयों का वर्णन हैं। अन्यान्य बातों में इससे यह भी मालूम होजाता है कि इंगलैंड के मजदूर दल का भारतीय परिस्थिति के प्रति क्या दृष्टिकोण है।

२—भारतीय नरेश—ले०—श्री० जगदीशसिंह गहलौत, जोधपुर। पृष्ठ बड़े आकार के १३८, मूल्य १।), सं० १९८०। इसमें देशी नरेशों की वर्तमान स्थिति और अंगरेजी सरकार के साथ की हुई संधियों के परिचय के अतिरिक्त, देशी राज्यों की नामावली, राजविस्तार, जनसंख्या और आय आदि की प्रान्तवार तालिका है। अधिकांश भाग तालिका का ही है, जो इस विषय की अच्छी पुस्तक के लिये परिशिष्ट का काम दे सकती है। इस नाम के उपयुक्त एक महत्वपूर्ण ग्रंथ की आवश्यकता है।

३—राजस्थान—ले०—श्री० श्रीगोविन्द हयारण। प्र०—साहित्य मण्डल, दिल्ली। मूल्य ३)। लेखक को देशी राज्यों का अच्छा अनुभव था और वे मरते दम तक इस पुस्तक के सम्पादन आदि में लगे रहे, यह हमें ज्ञात है। पर उनकी यह पुस्तक हमने अभी तक देखी नहीं।

४—आधुनिक भारत—ले०—श्री० प्यारेलाल गांगराडे। प्र०—हिंदी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मूल्य ॥=)। सं० १९८०। पृष्ट ११४। इसमें बताया गया है कि ईष्ट इंडिया कम्पनी के शासनकाल में तथा उसके बाद भारत की, व्यापार व्यवसाय आदि में, घोर अवनति हुई,और अब हम ब्रिटिश सरकार के हृदय में, एवं उसकी शासन प्रणाली में परिवर्तन चाहते हैं।

५—भारत में ब्रिटिश राज्य (अथवा इक्कीस बनाम तीस)—ले०—आचार्य चतुर्सेन शास्त्री। प्र०—बलिदान बुकडिपो, देहली, पृष्ट ३२३, मूल्य १॥)। पुस्तक में विषय सूची नहीं दीगयी है। कुछ अध्यायों के शीर्षक ये हैं:—भारत का ध्येय, जवाहरलाल नेहरू, गांधी का बल, देश का वातावरण; अपने और पराये, भविष्य भारत, भारत से ब्रिटिश गवर्नमेंट को आमदनी, अंगरेज़ों की शासन पद्धति के दोष, एशिया की बेचैनी, भावी महायुद्ध, आदि। लेखनी में ओज है, भावों में प्रखरता है। पुस्तक प्रभावोत्पादक है।

६—हमारा देश—ले०—श्री० किशनचन्द 'जेवा'। अनु०—ठाकुर राजबहादुरसिंह; प्र०—लाजपतराय साहनी, लाहौर। मूल्य ॥।), पृष्ट संख्या १३६। इसमें प्रो० टी. एल. वासवानी के लेखों का संग्रह है। लेखों में देश भक्ति, स्वदेश प्रेम, सत्याग्रह, अहिंसा, सभ्यता, स्वराज्य, स्वदेशी, अस्पृश्यता आदि पर विचार है। उन में धार्मिक या आध्यात्मिक पुट है। स्थान स्थान पर राष्ट्रीय कविताएं भी हैं।

७—भारत दर्शन—इसमें भारत का संक्षिप्त परिचय देने के बाद, ब्रिटिश कालीन भारतीय इतिहास—आर्थिक तथा राजनैतिक—दिया गया है। राष्ट्रीय आन्दोलन की चर्चा विशेष है। पृष्ठ ३५२।

८—'मदर इंडिया' का जवाब—ले०—श्रीमति चन्द्रावती लखनपाल, एम. ए.; प्र०—गंगा पुस्तकमाला, लखनऊ। मूल्य १=), पृष्ठ १६६। इसमें मिस मेयो की घृणोत्पादक तथा विद्वेष-प्रचारक मिथ्या बातों का जवाब देकर, योरुप अमरीका के सामाजिक अधःपतन का चित्र खैंचा गया है। लेखिका ने पाठकों से अपील की है कि अपना वास्तविक सुधार करके मिस मेयो को यथेष्ट उत्तर दें।

९—फ़ादर इंडिया—ले०-श्री० सी. एस. रंगा ऐयर। अनु०-बाबू सूर्यदेव सिंह; प्र०-श्री० नारायणदास वर्मन, सलकिया, हवड़ा। द्वितीय बार, सम्वत् १९८५। मूल्य २॥)। यह भी मिस मेयो की 'मदर इंडिया' का मुँहतोड़ जवाब है, युक्ति-पूर्ण खण्डन है। पुस्तकान्त में नेताओं तथा सुप्रसिद्ध पुरुषों की आलोचनाएं भी दी गयी हैं।

१०—दुखी भारत—ले०—लाला लाजपराय, प्र०—इंडियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य ५), पृष्ठ ४७७। यह भी मिस मेयो की 'मदर इण्डिया' का जवाब है। पुस्तक विश्वस्त प्रमाणों के आधार पर लिखी गयी है; अंगरेजी राज्य पर स्वयं अंगरेजों की भी सम्मतियां दी गयी हैं। लेखक को प्रसंगवश परन्तु दुख-पूर्वक अम-

रीका के जीवन की निम्नता-द्योतक घटनाओं का भी उल्लेख करना पड़ा है। पुस्तक बहुत संयम और विवेक से लिखी गयी है।

११ - देश का दुखी अङ्ग—ले०—श्री० रामनरेश त्रिपाठी। प्र०—सस्ती हिन्दी पुस्तकमाला, कानपुर। मूल्य ≡), पृष्ठ ८०। इस में किसानों के दुख दूर करने के उपायों पर विचार करते हुए सरकार, ज़मींदार, पुलिस, पटवारी, अदालत और वकीलों के सम्बन्ध में छोटे छोटे लेख दिये गये हैं। अन्त में बताया गया है कि किसान वेज़ा हकूमत को न मानें, और सत्याग्रह और असहयोग से काम लें।

१२—देवता इन्द्र और नमक की ख़ान—ले०—बाबू मोहन-लाल भटनागर, नवजीवन पुस्तकालय, लाहौर। मूल्य ॥=), पृष्ठ ६१। इसका दूसरा नाम है, 'भारतवर्ष पर ब्रिटिश शासन का चित्र'। पुस्तक रोचक है और दृष्टान्त तथा लोकोक्तियों एवं अलं-कारों से परिपूर्ण है।

१३ - मेरी रूस यात्रा—श्री० शौक़त उसमानी ने असहयोग काल में भारतवर्ष से 'हिजरत' करके विदेश-गमन किया था। इस पुस्तक में उस वीरोचित यात्रा के वर्णन के साथ, लेखक की आंखों देखी क़ाबुल, बुखारा, और रूस की आन्तरिक अवस्था का रोचक वर्णन है। प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर। मूल्य ।=),

१४—आज का रूस-मूल अंगरेज़ी लेखक श्री० नित्यनारायण बेनर्जी; अनु०-श्री० ब्रजमोहन वर्मा; प्र०-विशाल भारत बुकडिपो, कलकत्ता। मूल्य ३), पृष्ठ २४०। यह पुस्तक हमने देखी नहीं है।

१५—आधुनिक रूस—ले०—श्री०प्रभूदयाल महरोत्रा एम.ए.; पृष्ट २१६, मूल्य १।); यह पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी। इस का प्रकाशक नरेन्द्र पब्लिशिङ्ग हाउस, चुनार, है।

१६—वर्तमान एशिया—श्री० हर्बर्ट एडम्स गिबन्स की अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—बाबू रामचन्द्र वर्मा। प्र०—हिन्दी ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय, बम्बई। पृष्ट ३८२। मूल्य २), इसमें एशिया पर विभिन्न पाश्चात्य राष्ट्रों के आधिपत्य और अत्याचार का, तथा भारत, श्याम, टर्की, फारिस, जापान, कोरिया, चीन, आदि की जागृति का वर्णन है। भारतीय प्रश्न एशिया-व्यापी प्रश्न का अंग है, अतः यह पुस्तक भारतीय पाठकों के लिये बहुत विचारणीय है।

राजनैतिक सन्धियां—भारतवर्ष इस समय दूसरे देशों से सम्बन्ध और सन्धियां करने में स्वाधीन नहीं है, फिर भी भारत सरकार की अन्य देशों से संधियां तो हैं ही। नवीन शासन विधान के निर्माण के अवसर पर यहां के देशी राज्य संधियों के बल पर अपने विविध अधिकारों की बात उपस्थित करते हैं। इससे स्पष्ट है कि संधियों का प्रश्न बड़े महत्व का है। अनेक बार संधियों में जनता की सतर्कता या अनुराग न रहने से देश को चिरकाल तक बड़ी हानि उठानी पड़ती है। हमें केवल यही जानने की आवश्यकता नहीं है कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों की परस्पर में, अथवा इस देश की दूसरे देशों से, सन्धियां

कैसी हैं, वरन् यह भी जानना चाहिये कि अन्य देशों की एक दूसरे से कैसी संधियां हैं, या होती जारही हैं। खेद है कि इस विषय में हमारा साहित्य भंडार शून्य ही है। केवल एक उल्लेखनीय पुस्तक हमारे सामने है।

भारत के देशी राष्ट्र—ले०—श्री० सम्पूर्णानन्द बी. एस-सी.। प्र०-प्रताप कार्यालय कानपुर। सन् १६१८। मल्य ।।।), पृष्ठ २३४, इस में बताया गया है कि भारतवर्ष में अंगरेज़ों के साथ विविध लड़ाइयों के परिणाम-स्वरूप कैसी संधियां हुई और किस प्रकार देशी राज्यों के अधिकार क्रमशः परिमित होते गये। पुस्तक अपने ढंग की अकेली, और बहुत गवेषणापूर्ण है। हां, गतवर्षों में हुए परिवर्तनों को लक्ष्य में रखकर, यदि नये संस्करण में आवश्यक बातों का समावेश और होजाय तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ सकती है।

विविध तथा मिश्रित—अब हम कुछ ऐसी पुस्तकों की चर्चा करेंगे जो हमारे निर्धारित उपर्युक्त भागों में से किसी में नहीं आतीं, या जिनका विषय एक मात्र विशुद्ध राजनैतिक नहीं है। यहां पर यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि हम उन पुस्तकों का परिचय न देंगे जिनके विषय का साहित्य में स्वतंत्र स्थान है, चाहे वे राजनीति से कुछ कुछ सम्बन्धित ही हों। उदाहरणवत, हम यह स्वीकार करते हैं कि कितने ही काव्य, नाटक और उपन्यास राजनैतिक हैं। बहुत से, विशेषतया शासकों, मंत्रियों, सेना-

पतियों, या राष्ट्र-नेताओं के जीवनचरित्र में भी राजनीति की अच्छी सामग्री रहती है। इतिहास से भी राजनैतिक प्रश्नों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। परन्तु ये हमारा आलोच्य विषय नहीं हैं। हां, इतिहास आदि की कुछ ऐसी पुस्तकों के परिचय का यथा-स्थान समावेश किया गया है, जो राजनीति से विशेष सम्बन्धित हैं।

१—प्राचीन भारतवर्ष की सभ्यता का इतिहास—मूल लेखक श्री० रमेशचन्द्र दत्त; अनु०—श्री० गोपालदास। प्र०—इतिहास प्रकाशक समिति, काशी। सन् १६०६। चार भाग, पृष्ट १६० + २१२ + १३२ + २६०। पुस्तक बड़ी योग्यता और परिश्रम का फल है। इसमें अन्यान्य बातों में प्राचीन कालीन राजनीति और कानून आदि के विषय में भी विचार किया गया है; हां, नूतन शोधों के आधार पर इसमें अब कई बातों में संशोधन होने की आवश्यकता है।

२—महाभारत मीमांसा—यह राय बहादुर श्री० चिन्तामणि विनायक वैद्य एम. ए. की श्रीमन्महाभारत के उपसंहार नामक मराठी ग्रंथ का अनुवाद है; अनु०—पं० माधवराव सप्रे; प्र०—बालकृष्ण पांडुरंग ठकार ग० वि० चिपलूणकर मंडलीक स्वामी, पूना। सन् १६२०। राजनीति और अर्थशास्त्र प्रेमियों के लिये इसके राजकीय परिस्थिति, सेना और युद्ध, व्यवहार और उद्योग धन्धे, प्रकरण विशेष विचारणीय हैं। पुस्तक बड़े परिश्रम और अन्वेशन से लिखी गयी है, यह बात और है कि कुछ विचारकों का किन्हीं विषयों में मत भेद हो; शैली गवेषणात्मक है।

३—राज शिक्षा—ले० और प्र०—पण्डित व्रजवल्लभ मिश्र, अलीगढ़। पृष्ठ १३६, मूल्य लिखा नहीं। इसका प्रथम भाग छपा, वह भी पूरा नहीं। इसमें राजकुमारों के जीवन सम्बन्धी बातों का वर्णन करने के पश्चात् राज्य के सिद्धान्त, पुलिस और सेना, न्याय, सेवा, वेतन, और ब्रिटिश सरकार से सम्बन्ध आदि का विचार किया गया है।

४—कालेपानी की कारावास कहानी—ले०—श्री० भाई परमानन्द एम. ए.। प्र०—लाजपतराय पृथ्वीराज साहनी, लाहौर। द्वितीय वार, सं० १६७६। पृष्ठ २३८। मूल्य १॥) इसमें हवालात, ज़िला जेल, सेंट्रल जेल, और कालेपानी के जीवन का, एक प्रत्यक्षदर्शी तथा भोक्ता का करुणाजनक अनुभव अंकित है। जातीय उत्थान, स्वाधीनता का मार्ग, देश और जातीयता, प्राच्य और पाश्चात्य आदि शीर्षकों के अन्तर्गत कुछ अन्य विषयों पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है।

५—बाल राजनीति—ले०—राजकुमार मानसिंह। प्र०—राजकीय पुस्तक प्रकाशन विभाग, राज बनेडा। सं० १६८७। पृष्ठ ८४; छोटा आकार। बिना मूल्य। इसमें राजनीति के सिद्धान्तों की चर्चा बहुत थोड़े में है। यह राजकुमारों के लिये नैतिक शिक्षा की पुस्तक है। मालूम हुआ है कि लेखक ने इसका संशोधन और परिवर्द्धन कर लिया है। अब तक उपर्युक्त प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित अन्य एक भी पुस्तक हमारे देखने में नहीं आयी, क्या वह इसका संशोधित संस्करण छपायेगा?

६—भारतवर्ष में सरकारी नौकरियां—ले०— पं० हृदयनाथ कुँजरू बी. ए.; अनु०—पं० माधवप्रसाद सप्रे। मूल्य ।।।), पृष्ठ २००, बड़ा आकार। सन् १६१६। इसमें बताया गया है कि उच्च सरकारी पदों पर नियुक्त किये जाने के लिये भारतवासियों ने क्या क्या प्रयत्न किये, और बड़ी बड़ी नौकरियों के सम्बन्ध में उनकी क्या स्थिति है; सरकार ने अपने वायदे किस प्रकार भङ्ग किये हैं। सन् १६१२ में नियुक्त रायल कमीशन की रिपोर्ट की सविस्तर और युक्तिपूर्ण आलोचना है।

७—भारत की वर्ण-व्यवस्था और स्वराज्य—ले० और प्र०—श्री० देवीदत्तजी 'टेम्प्रेंस प्रीचर'। मूल्य ।≈), पृष्ठ ८०। पुस्तक का उद्देश्य यह है कि पाठक मत मतांतर, जाति पांति, और छुआछूत को मिटाकर देश और जाति को स्वाधीन करने में वीरों की भांति अग्रसर हों।

८—राज्य प्रबन्ध शिक्षा—श्री० सर टी. माधवराव की अंगरेज़ी पुस्तक का अनुवाद। अनु०—पं० रामचन्द्र शुक्ल, प्र०—इण्डियन प्रेस, प्रयाग। मूल्य ।।।), पृष्ठ १६५। यह महाराजा साहब श्री सयाजीराव, बड़ौदा, की नाबालिग़ी के समय, उनको शिक्षा के हेतु लिखी गयी थी। राजाओं तथा राजकुमारों के लिये बहुत उपयोगी है। इसमें, प्रजा में सुख समृद्धि बढ़ाने वाले विविध अनुभव अंकित हैं।

९—अन्दमान की गूँज—इसमें वीर-श्रेष्ठ श्री० सावरकर जी

के कालेपानी से भेजे हुए, उनके भाई के नाम के पत्र हैं। नजरबन्द क़ैदी, प्रान्तीयता, वैयक्तिक मत, महायुद्ध का कालेपानी पर प्रभाव, मातृऋण, शासन सुधार, सेना आदि का विचार है। अनुवादक हैं, श्री० सिद्धनाथ माधव लौंढे बी. ए.; प्र०—प्रणवीर कार्यालय, नागपुर, पृष्ठ १०८, मूल्य ॥=)।

१०—जेल में चार मास—ले०—श्री० लक्ष्मणनारायण गर्दे, सम्पादक 'भारतमित्र', सम्वत् १९७९, मूल्य ।=)। इस पुस्तक से अन्य साधारण बातों के अतिरिक्त, बंगाल के जेलों की परिस्थिति का अच्छा ज्ञान होता है। लेखक ने अपने देश-प्रेमी क़ैदी साथियों का भी परिचय दिया है।

११—पश्चिमी सभ्यता का दिवाला—मूल लेखक—ई. एस. स्टोक्स। अनु०—श्री० जगदीशनारायण तिवारी। प्र०—हिन्दी पुस्तक एजन्सी, कलकत्ता। मूल्य ।=), पृष्ठ ४५। विचारणीय रचना है। मूल लेखक की योग्यता सुप्रसिद्ध है।

१२—बीसवीं शताब्दी में महाभारत—मूल लेखक—श्री० विनयकुमार सरकार एम. ए.। अनु०—श्री मुरारीदास अग्रवाल। मूल्य ॥।), पृष्ठ १३०, प्र०—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग। योरपीय महायुद्ध के विविध कारणों, घटनाओं और परिणामों पर व्यापक विचार किया गया है।

१३—भारत माता का सन्देश-ले०-भाई परमानन्द एम. ए.। प्र०—सरस्वती आश्रम, लाहौर। मूल्य ॥), पृष्ठ ८८। पुस्तक के

कुछ ही लेख राजनैतिक हैं, यथा धर्म और राजनीति, ब्रिटिश पालिसी, सहयोग आदि।

१४—भारी भ्रम—यह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विचारक श्री० नार्मन एञ्जल की सुप्रसिद्ध पुस्तक का अनुवाद है। अनु०—श्री० रामदास गौड़। प्र०—व्यासाश्रम पुस्तकालय, मद्रास। पृष्ट ३२५, मूल्य १।) । इसमें राष्ट्रीय सुविधा से सैन्यबल का सम्बन्ध और उसके समझने में लोगों की भूल दर्शायी गयी है। यह समझाया गया है कि युद्ध में भाग लेना प्रत्येक दृष्टि से हानिकर है।

१५—मेरे जेल के अनुभव—ले०-म०गांधी । प्र०—प्रताप प्रेस, कानपुर। मूल्य ।=) । इसमें महात्माजी के दक्षिण अफ्रीका में तीन बार की जेल यात्रा के अनुभव हैं। महात्माजी का जीवन हर दशा में शिक्षाप्रद होता है। यह पुस्तक विशेषतया सत्याग्रहियों के लिये मननीय है।

१६—बेलजियन झण्डा—ले०—श्री० हरिदास माणिक, काशी। मूल्य ॥), पृष्ट १५१। इसमें योरुपोय महायुद्ध सम्बन्धी घटनाओं के आधार पर उत्साह वर्द्धक मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद बातों का समावेश है।

१७—कारावास की रामकहानी; १९२१-२२—ले०-पं० नरदेव शास्त्री। प्र०—भारतीय प्रेस, देहरादून। पृष्ट २००। भाषा खूब मनोरंजक है। जेल की बहुत सी बातों की उपयोगी जानकारी है।

१८—नवीन भारत—सर हैनरी काटन की पुस्तक का अनु·

वाद; प्रकाशित सन् १९०५ । लेखक ने अपने जाति भाइयों (अंगरेज़ों) को यह समझाने का उद्योग किया है कि भारतवासी अब बहुत योग्य होगये हैं, उन्हें उचित स्वत्व दिये जाने चाहिये। अनु०—गणेशनारायण सोमाणी बी. ए., जयपुर, मूल्य १॥।), पृष्ठ बड़े आकार के २७८।

१९—हिन्दुस्थान—ले०—श्री० दयाचन्द्र गोयलीय बी. ए.। प्र०—नागरी प्रचारिणी सभा, काशी। दो खंड, प्रत्येक का मूल्य १।), पृष्ठ २२७ + २१२। पहले खण्ड में वर्णन और इतिहास है। दूसरे में शासन और आर्थिक स्थिति का परिचय है। पुस्तक सरल और सुन्दर ढंग से लिखी गयी है। हां, हमारे सामने सन् १९१७ में प्रकाशित प्रथम संस्करण है, जिसमें अब काफी परिवर्तन की आवश्यकता है।

२०—भारतीय जागृति—ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र०-भारतीय ग्रंथमाला, वृन्दावन। दूसरा संस्करण सन् १९३५। पृष्ठ २२५ + ८ + १२। इसमें जागृति के सिद्धांतों का विवेचन करके, भारतवर्ष की गत सौ वर्षों की धर्म, समाज, उद्योग धन्धे, कृषि, शिक्षा, साहित्य, विज्ञान और राजनीति सम्बन्धी जागृति का अच्छा परिचय दिया गया है। आधुनिक व्यापक इतिहास के प्रेमियों के बड़े काम की चीज़ है।

२१—स्वराज्य की महिमा—ले० और प्र०—श्री० दामोदर सातवलेकर, औंध। इसमें निम्न लिखित निबन्ध हैं :—स्वराज्य

की महिमा, मातृ-भूमि की उपासना, प्रजापति की दुहिता (राष्ट्र सभा), सच्चे राजा के लक्षण, सबों का प्रभुत्व, दास भाव को दूर कीजिये, आत्मज्ञान का परिणाम,राजा प्रजा और उनके भेद। मूल्य ॥), पृष्ठ १०८। वैदिक उद्धरणों से पूर्ण है।

२२—स्वाधीनता के पुजारी—ले०—श्री० भूदेव विद्यालंकार। प्र०—प्रताप कार्यालय, कानपुर। सन् १९२५। मूल्य १।), पृष्ठ २२६। इसमें रूस के दस तपस्वी, त्यागवीर और वीरांगनाओं का परिचय है। इसे हमने देखा नहीं है।

२३—हमारी कारावास कहानी—ले०—श्री० भवानीदयाल। प्र०—सरस्वतीसदन, इन्दौर। सन् १९१८। मूल्य ॥), पृष्ठ ८६। लेखक १९१२ में दक्षिण अफ्रीका गये, और उन्होंने १९१३ के सत्याग्रह में भाग लिया, इसी प्रसंग में आपने जेलवास किया। उसका पुस्तक में रोचक वर्णन है।

२४—भारतीय चिन्तन—ले०—श्री० भगवानदास केला, प्र० भारतीय ग्रन्थमाला, वृन्दावन। मूल्य ॥।=), पृष्ठ १२६। इस में विविध सामयिक लेखों का संग्रह है। इसके छः खण्डों में एक आर्थिक, एक राजनैतिक, तथा एक अन्तर्राष्ट्रीय है। अन्य खंडों में प्रेम का शासन, प्रेम की विजय, धर्मयुद्ध, खद्दर का पहिनाव, विजय दशमी का संदेश, आदि विचारणीय हैं।

२५—समाज विज्ञान—ले०—श्री० चन्द्रराज भंडारी, प्र०—सस्ता साहित्य मण्डल, अजमेर। मूल्य १॥), पृष्ठ २०+५३५।

यह एक व्यापक विषय की पुस्तक है। इस में राजनैतिक और आर्थिक विषय के अतिरिक्त समाज रचना, धर्म, साहित्य आदि का भी विवेचन है। राजनैतिक विषय सम्बन्धी एक खंड में सत्ता, राज्य, व्यक्तिवाद, अराजकवाद और बोलशेविज्म, न्याय और क़ानून, तथा दंड विधान का विचार है। एक दूसरे खंड में अन्यान्य प्रकार की स्वाधीनता में राजनैतिक स्वाधीनता पर भी अच्छा प्रकाश डाला गया है। पुस्तक बहुत उत्तम और उपयोगी है; अपने विषय की एक ही है।

२६—भारतीय समाज शास्त्र— ले०—श्री० धर्मदेव सिद्धान्तालंकार। प्र०—आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर। मूल्य १), पृष्ठ २५१। भारतीय समाज शास्त्र की आधार शिला वर्ण-व्यवस्था है, इसी के अनुसार समाज के विविध अंगों का स्थान, कर्तव्य आदि निर्धारित हैं, और चाहे विकृत रूप में ही क्यों न हो, इस समय भी बात-बात में उसका विचार किया जाता है। अतएव लेखक ने इस विषय पर धार्मिक, ऐतिहासिक तथा तुलनात्मक दृष्टि से विचार किया है। भारतीय और योरुपीय सभ्यता पर आलोचनात्मक दृष्टिपात भी किया है।

२७—अपराध चिकित्सा (अप्रकाशित)— ले०—श्री० भगवानदास केला। अपराध शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का नितान्त अभाव देखकर इसकी रचना कीगयी है। इस में पहिले जेल, कालापानी, फांसी आदि वर्तमान अपराध चिकित्सा की आलोचना करते हुए इनकी असफलता वतायी गयी है। दूसरे खण्ड में

अपराधों की उत्पत्ति के भिन्न भिन्न बहुविध कारणों का विचार किया गया है। तीसरे खंड में अपराध-निवारण के लिये घर का कार्य, शिक्षा का प्रभाव, तथा समाज और राज्य का कर्तव्य दर्शाया गया है। अन्तिम खंड में वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति है। आशा है, प्रकाशित होने पर यह अपने विषय की बहुत उत्तम कृति प्रमाणित होगी।

२८—स्वतन्त्रता की ओर—ले०—श्री० हरिभाऊ उपाध्याय; प्र०—सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर। पृष्ठ ३६०, मूल्य १।।), यह पुस्तक हमनें देखी नहीं है।

२९—स्वाधीनता के पुजारी— (पहला भाग) ले०— श्री० देवीदत्त शुक्ल। पृष्ठ १३१; मूल्य १), प्रकाशक—नरेन्द्र पब्लिशिंग हाउस, चुनार। इस में विभिन्न देशों के १२ प्रमुख नेताओं के जीवनचरित्र है। यह अभी हमारे देखने में नहीं आयी है। (इसी नाम की एक अन्य पुस्तक का उल्लेख पहिले होचुका है)।

३०—इटली के विधायक महात्मागण—सम्पादक-श्री० रामदास गौड़ एम. ए.; प्र०-ज्ञानमंडल, काशी। मूल्य २।), पृष्ठ २४५, सचित्र तथा सजिल्द। यह एक अंगरेजी पुस्तक का अनुवाद है। सम्पादकजी ने प्रस्तावना में इटली के भूगोल और इतिहास की आवश्यक बातें बतलादी हैं। पुस्तक में उन आठ महापुरुषों का संक्षिप्त जीवनचरित्र है, जिन्हों ने अनेक आपदाओं को सहन करते हुए भी इटली को संगठित और स्वाधीन किया। इस में योरुप की राजनैतिक चालों का विशद विवेचन है।

छोटी पुस्तकें (ट्रेक्ट)—प्रचार कार्य के लिये छोटी और सस्ती पुस्तकें बहुत उपयोगी होती हैं। राजनैतिक जागृति में ऐसा साहित्य खूब बढ़ता है। हिन्दी भाषा के समस्त राजनैतिक ट्रेक्टों का परिचय देना तो क्या, नामोल्लेख करना भी कठिन है। कांग्रेस आदि राजनैतिक सभाओं में होने वाले भाषणों के ही ट्रेक्ट बहुत से हैं। हम यहां कुछ अन्य ट्रेक्टों का नामोल्लेख मात्र करते हैं, इस से पाठकों को साहित्य के इस भाग की दिशा का कुछ बोध होने में सहायता मिलेगी।

१—भारतीय समाज का स्वराज्य।
२—राष्ट्रपति (विलसन) को पत्र।
३—माडरेटों की पोल।
४—राजशिक्षा सोपान।
५—राष्ट्रीय मंत्र।
६—राजनीति शतक।
७—राष्ट्रों की उन्नति।
८—स्वराज्य और प्रजावाद।
९—स्वदेशाभिमान।
१०—स्वराज्य के फ़ायदे।
११—स्वराज्यवादी को क्या जानना चाहिये ?
१२—स्वराज्य तत्व मीमांसा।
१३—राष्ट्रीयता के मूलमंत्र।
१४—स्वराज्य की पात्रता और इंगलैंड के स्वराज्य का इतिहास।

१५--हम गुलाम क्यों ?

१६—पार्वती देवी की जेल कहानी।

१७—राष्ट्र निर्म्माण।

१८—स्वराज्य।

१९—स्वराज्यवाद।

२०—स्वराज्य की आवश्यकता।

२१—धर्म और राजनीति।

२२—स्वराज्य की कसौटी।

२३—स्वराज्य का संदेश।

२४—स्वराज्य की व्याख्या।

२५—स्थानिक स्वराज्य।

२६—स्वराज्य संगीत।

२७—स्वराज्य का मूलमंत्र।

२८—हम स्वराज्य क्यों चाहते हैं ?

२९—देवी वसन्त का संदेश।

३०—हिन्दुस्तान की मांग।

३१—हमारा जातीय भाव।

३२—नवयुवकों से दो बातें।

३३—अंगरेजी राज्य के सौ साल।

३४—प्रजा-द्रोही राजा वेणु।

३५—नमक कर।

३६—राजस्व और हमारी दरिद्रता।

३७—सर्वोदय।

३८—असहयोग या तर्क-तअल्लुक।

३९—किसानों का अधिकार।

४०—खादी और स्वराज्य।

४१—कांग्रेस।

४२—गुलामी से छूटने का उपाय।

४३—तरुण भारत का भविष्य।

४४—देश-भक्ति से दोनों लोक।

४५—देशी राज्य।

४६—धन-सत्ता का नाश और विश्व-शान्ति।

४७—पूर्ण स्वाधीनता का दावा।

४८—बीकानेर में नादिरशाही।

४९—हिन्दू-मुसलिम एकता का प्रश्न।

५०—चुनाव।

५१—स्थानिक स्वराज्य संस्थाओं के सम्बन्ध में सरकार की नीति।

५२—होमरूल।

५३—किधर भारत?

५४—कांग्रेस का जन्म और विकास।

५५—अदालतों का इन्द्रजाल।

५६—स्वराज्य की शंखध्वनि।

५७—फ़ौज में भारतवासी।

पत्र पत्रिका—अन्य भाषाओं के पत्र पत्रिकाओं की भांति

हिन्दी भाषा के पत्र पत्रिकाओं को भी राजनीति में प्रवेश करके राज्य की ओर से आने वाले विविध संकटों का सामना करना पड़ता है, फिर भी कितने ही पत्र दृढ़ता और गम्भीरता पूर्वक इस कंटकाकीर्ण मार्ग में चलते रहे हैं। जब से राष्ट्रीय आन्दोलन की वृद्धि हुई तब से जनता की सेवा करने वाले अथवा लोक-प्रिय होने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक साप्ताहिक या दैनिक पत्र को तो राजनैतिक विषयों की चर्चा को अच्छा स्थान देना ही पड़ता है। इस समय धार्मिक संस्थाओं की ओर से निकलने वाले पत्रों को भी जनता के लिये थोड़ी बहुत राजनैतिक सामग्री देनी होती है। मासिक पत्र किसी विषय विशेष के सुगमता-पूर्वक हो सकते हैं, परन्तु अधिकांश ऐसे न होकर पंचमेल मिठाई का हिसाब रखते हैं, और विविध-विषय-विभूषित होने का आदर्श रखते हैं। गत वर्षों में कुछ मासिक पत्रों ने अपने लिये विशेष क्षेत्र चुन कर मार्ग-प्रदर्शन किया है। परन्तु खेद है कि एकमात्र राजनीति (तथा अर्थशास्त्र) का कोई पत्र या पत्रिका चिरकाल तक टिकने नहीं पायी। किसी को राज्य की ओर से संकट रहा, तो किसी को ग्राहकों की कमी ने अस्त कर दिया। आवश्यकता है कि एकमात्र राजनीति की नहीं, तो उसके साथ अर्थशास्त्र, इतिहास और समाज शास्त्र को मिलाकर एक अच्छी बढ़िया सामग्री वाली पत्रिका निकाली जाय, जो आरम्भ में त्रैमासिक या द्वैमासिक हो। कुछ समय से हमारे सामने इसकी योजना विद्यमान है। कई सुलेखकों के सहयोग का आश्वासन भी मिला, परन्तु आवश्यक आर्थिक व्यवस्था नहीं हुई।

राजनैतिक शब्द कोष की आवश्यकता—राजनैतिक साहित्य की पूर्ति तथा वृद्धि करने में एक विशेष वाधा पारिभाषिक शब्दों सम्बन्धी है। विविध साहित्य-सेवियों और सम्पादकों तथा हिन्दी का माध्यम रख कर शिक्षा देने वाली संस्थाओं ने नये नये शब्द गढ़ने और उन्हें प्रचलित करने में बहुत योग दिया है। यदि कहीं सरकार भी इस ओर उचित ध्यान देती, तो अब तक इस दिशा में बहुत प्रगति होचुकी होती। परन्तु यहां सरकार का शिक्षा सम्बन्धी तथा अन्य कार्य विदेशी भाषा में होते रहने के कारण, उसके द्वारा न जनता को शासन सम्बन्धी विषयों का यथेष्ट ज्ञान होने में सहायता मिली, और न राजनैतिक शब्द-भंडार की ही कुछ पूर्ति हुई। सार्वजनिक संस्थाओं में नागरी प्रचारणी सभा, काशी, के कोष का उल्लेख पहले किया जा चुका है। उसमें राजनीति का कोई पृथक् भाग नहीं है। आजकल उस कोष का संशोधन होकर उसके विविध भाग पृथक् पृथक् पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो रहे हैं,परन्तु सभा राजनीति-साहित्य-प्रेमियों को कृतार्थ करती हुई मालूम नहीं होती। इस समय इस विषय की केवल दो पुस्तकें हमारे सामने हैं:—

(१) बड़ौदा राज्य ने 'श्री सयाजी शासन शब्द कल्पतरु' एक समिति द्वारा सम्पादित कराकर प्रकाशित की है। इसमें बड़ौदा राज्य में प्रयुक्त होने वाले शासन सम्बन्धी अंगरेज़ी के पारिभाषिक शब्दों के गुजराती, संस्कृत, बंगला, मराठी, उर्दू, फारसी, अर्बी, और हिन्दी पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं। इस

कोष का कार्य व्यय-साध्य तथा प्रशंसनीय होते हुए भी इसका क्षेत्र परिमित रहना स्पष्ट है; साथ ही, विशेषतया इसके हिन्दी विभाग में बहुत सुधार और संशोधन होने की आवश्यकता है।

(२) श्री० केलाजी ने, आठ वर्ष हुए, बहुत ही संकोच से एक अधूरी-सी 'राजनीति शब्दावली' पाठकों के सामने प्रस्तुत की थी। यथेष्ठ साधन न होते हुए भी आप इस दिशा में बहुत कार्य करते रहे हैं, और सर्वश्री० दुबेजी, सत्येन्द्रजी, और गदाधरप्रसाद अम्बष्ट आदि मित्रों का सहयोग प्राप्त कर सके हैं। विचार-विनिमय का कार्य अभी कुछ शेष है। आप यथा-सम्भव शीघ्र संशोधित और परिवर्द्धित शब्दावली को प्रकाशित करने का विचार करते हैं।

आधुनिक प्रकाशक—गत वर्षों में हिन्दी साहित्य के अन्यान्य अंगों में राजनैतिक अंग की भी अपेक्षाकृत अच्छी वृद्धि हुई है। हिन्दी पुस्तक एजन्सी, हिन्दी पुस्तक भण्डार, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्य्यालय, गांधी पुस्तक भण्डार, साहित्य-भवन, हिन्दी साहित्य मन्दिर, गंगा पुस्तकमाला (गंगा ग्रंथागार), मनोरञ्जन पुस्तकमाला आदि सभी बड़े बड़े प्रकाशकों ने समय-समय पर राजनैतिक साहित्य की भी कुछ अच्छी कृतियां भेंट की हैं। कई ग्रंथमालाओं का तो उद्देश्य ही प्रधानतया राजनैतिक (और आर्थिक) साहित्य की वृद्धि करना रहा है, इसके उदाहरण-स्वरूप राजनीति रत्नमाला, राष्ट्रीय ग्रन्थमाला, आदित्य ग्रंथमाला, प्रताप पुस्तकमाला, भारतीय ग्रन्थमाला, सस्ता साहित्य मण्डल, ज्ञान मण्डल पुस्तक भण्डार आदि का उल्लेख किया जा सकता

हैं। खेद है कि इनमें से अधिकतर, बहुत समय तक सेवा न कर, अल्प काल में ही अस्त होगयीं और जो इस समय विद्यमान है, उनका भी प्रकाशन कार्य कुछ अच्छी स्थिति में नहीं। इस का बहुत-कुछ उत्तरदायित्व हिन्दी पाठकों पर है। उन्हें अभी तक सरस, जल्दी हज़म होने वाला मनोरंजक साहित्य ही विशेष भाता है। गम्भीर, ठोस रचनाओं का वे यथेष्ट स्वागत नहीं करते। यही मुख्य कारण है कि प्रकाशकों को उपन्यास, नाटक, गल्प, कथा, कहानियां आदि प्रकाशित करने की प्रवृत्ति होती है। बहुत हुआ तो वे कभी कुछ जीवनचरित्र या इतिहास की पुस्तकें प्रकाशित कर देते हैं। राजनैतिक (और आर्थिक) साहित्य की उच्चकोटि की रचनाएं लिखवाने और प्रकाशित करने में बहुत खर्च पड़ता है, बहुधा सरकारी कोप की भी चिन्ता रहती है। फिर, यदि उसके ग्राहक भी काफ़ी न मिलें तो इस झंझट में, व्यापारिक दृष्टि रखने वाले प्रकाशक क्यों पड़ें? वे अपनी सस्ती जल्दी बिकनेवाली पंचमेल मिठाई से ग्राहकों को मुग्ध करते रहते हैं?

राजनीति-साहित्य-प्रधान ग्रन्थमालाएं—ऐसी स्थिति में जो प्रकाशक राजनीति (और अर्थशास्त्र) साहित्य की चिन्ता करते हैं, वे धन्य हैं। अन्यान्य संस्थाओं में सस्ता साहित्य मंडल, अजमेर (अब देहली), और ज्ञान मंडल, काशी, ने राष्ट्रीय साहित्य-प्रकाशन में काफ़ी पूँजी लगाई और कितनी ही अच्छी पुस्तकें प्रकाशित कीं। सस्ता साहित्य मण्डल ने उपयोगी साहित्य की

क़ीमत कम रखने में आदर्श कार्य किया । भारतीय ग्रंथमाला, वृन्दावन,की आर्थिक स्थिति आरम्भ से ही बहुत साधारण रही है, पर इसके संचालक अपनी धुन के धनी रहे हैं,और कुछ मित्रों और सुहृदों के सहारे वे अपने सुनिश्चित पथ में क्रमशः आगे बढ़ते गये हैं । यही कारण है कि यद्यपि बीस वर्ष के लम्बे समय में, इस माला में पूरी बीस भी नहीं, केवल १६ ही पुस्तकें प्रकाशित हो सकी हैं, तथापि उनमें से दो-एक को छोड़कर शेष सभी राजनीति और अर्थशास्त्र की हैं , अथवा इन विषयों से सम्बन्धित हैं । प्रताप प्रेस, कानपुर, ने भी प्रशंसनीय कार्य किया है । यद्यपि उसकी अधिकांश शक्ति दैनिक और साप्ताहिक 'प्रताप' में, तथा कुछ समय तक अस्तंगत 'प्रभा' में लगी है (जो 'मर्यादा' की भांति चिरस्मरणीय है), यह हर्ष का विषय है कि उसकी प्रकाशित पुस्तकों में अधिकतर राजनीति की रही हैं । यदि बड़े बड़े प्रकाशक अपनी प्रकाशित पुस्तकों में दस पन्द्रह फ़ी सदी भाग राजनीति और अर्थशास्त्र का रखें तो बड़ा काम हो जाय ।

शिक्षा संस्थाओं में राजनीति शिक्षा—इस सम्बन्ध में लिखते हुए पहले सरकारी संस्थाओं का विचार करते हैं । भारतवर्ष में उच्च शिक्षा का माध्यम अभी तक अधिकांश में अंगरेज़ी ही है, अतः हिंदी पुस्तकों की पहुंच बहुधा हाईस्कूलों तक ही हो पाती है । पुनः विदेशी सरकारों की प्रायः यह इच्छा रहा करती है कि जनता को राजनैतिक विषयों का ज्ञान या अनुराग न हो, उसके सन्मुख सरकार के कार्यों का केवल प्रकाशमय पक्ष

ही आवे, जिससे उनकी, सरकार से पूर्ण सहानुभूति बनी रहे; उनमें कभी आलोचना करने का भाव जागृत न हो। भारत सरकार भी इस विषय में कोई अपवाद नहीं है। रेल, तार, डाक आदि आमदरफ्त या यातायात के साधन, स्कूल, कालिज, अस्पताल, नहर, पुल आदि निर्माण कार्य, सेना, पुलिस आदि के सुप्रबन्ध के गीत गाने या गवाने का वह कोई अवसर हाथ से नहीं जाने देती। इस लिये उसने स्कूलों में ली वारनर की 'सिटीज़न आफ़ इंडिया' और टी. एस. सुबरामेनिया ऐयर की 'ऐलीमेंटस आफ़ सीविक्स' तथा कालिजों में सर जान स्ट्रेचे की 'इण्डिया' जैसी पुस्तकें पाठ्यक्रम में रखीं। इन में शासन-पद्धति सम्बन्धी बातों की चर्चा तो गौण रूप से थी, मुख्य विषय यह था कि ब्रिटिश शासकों ने देश में सुख शान्ति, और सुव्यवस्था के विविध साधन उपस्थित किये हैं, और जनता की तरह तरह से उन्नति की है।

इस समय भी अधिकांश सरकारी संस्थाओं के लिये कुछ ख़ास ढंग की पुस्तकों की स्वीकृति होती है। भिन्न भिन्न प्रान्तों का शिक्षा क्रम कुछ भिन्न भिन्न है। संयुक्त प्रान्त के केवल नार्मल या ट्रेनिंग स्कूलों में ही इस विषय को कुछ स्वतंत्र स्थान दिया गया, है; माध्यमिक कक्षाओं के वास्ते इतिहास की पुस्तक में ही इसका समावेश पर्याप्त समझा जाता है। बिहार में तो, जहां तक हमें मालूम है, केवल अपर प्राइमरी वर्ग में एक पुस्तक पढ़ायी जाती है, जो बहुत छोटी है, और छोटी ही हो सकती है। इस विषय की

शिक्षा विशेषतया मध्यप्रान्त में दीजाती है, वहां मिड्ल की तीनों क्लासों—छटी सातवीं और आठवीं—में, तथा नार्मल स्कूलों में, इस विषय को पाठ्यक्रम में रखा है। वहां के शिक्षा क्रम के अनुसार लिखी हुई पुस्तकों में से सरल राज्य शासन (प्रथम भाग, प्रथम संस्करण, सन् १९२६) को देखने से हमें ऐसा मालूम हुआ कि मानों विद्यार्थियों को इस विषय की शिक्षा देने का अभिप्राय शासन-पद्धति की जानकारी कराने की अपेक्षा, उन्हें प्रचलित राज्य व्यवस्था का पूर्ण भक्त बनाना है। यदि वास्तव में, इस प्रान्त में (एवं अन्यत्र) अधिकारियों को यही अभीष्ट है तो हम उन्हें पाठ्य क्रम में इस विषय को रखने के लिये वधाई नहीं देसकते। हां, यह कहा जासकता है कि उक्त पुस्तक के लेखक महाशय ने अधिकारियों का वास्तविक उद्देश्य न समझा हो, और केवल इस अनुमान से कि अमुक अमुक बातों का समावेश होने से उनकी पुस्तक पाठ्य पुस्तक के रूप में स्वीकृत हो जायगी, उन बातों को अपनी रचना में जहां तहां स्थान दे दिया। अस्तु, यह विषय टेक्स्टवुक कमेटियों के विचारने योग्य है।

यह तो हुई सरकारी शिक्षा संस्थाओं की बात; अब गैर-सरकारी का विचार करना है। काशी विद्यापीठ, तिलक स्कूल-आफ़-पोलिटिक्स, लाहौर, प्रेममहाविद्यालय वृन्दावन (यह इस समय बन्द है), गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल गुजरांवाला महिला विद्यापीठ, प्रयाग आदि में राजनीति शिक्षा की व्यवस्था है; हाल में हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी, ने भी इस ओर ध्यान दिय है। गत वर्षों में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं का प्रचा

उत्तरोत्तर बढ़ता गया है । इन परीक्षाओं में राजनीति भी एक वैकल्पिक विषय है। इससे राजनीति के उच्च कोटि के गम्भीर साहित्य की मांग बढ़ने में सहायता मिली। हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी, ने अन्यान्य विषयों में राजनीति की भी पुस्तकें प्रकाशित कराने का आयोजन किया है।

हमारे साहित्य के अभाव—गत वर्षों की राजनैतिक साहित्य-वृद्धि हर्ष-सूचक होने पर भी यथेष्ट सन्तोषप्रद कदापि नहीं है। हमें सोचना चाहिये कि राजनैतिक साहित्य के कितने अंग अपूर्ण हैं, और उनकी पूर्ति के लिये क्या किया जाना चाहिये। उच्च परीक्षाओं के पाठ्य क्रम के योग्य, प्राचीन और माध्यमिक राजनैतिक सिद्धान्त की पुस्तकें कितनी हैं? आधुनिक राजनैतिक सिद्धान्त, राजनैतिक संस्थाओं, और प्राचीन भारतीय राजनैतिक विचार तथा संस्थाओं, एवं आधुनिक शासन व्यवस्थाओं के लिये भी हिन्दी की पुस्तकें सर्वथा अपर्याप्त हैं। और तो क्या, भारतीय शासन पद्धति पर भी उत्तमा परीक्षा के योग्य, अथवा विशेष जिज्ञासु पाठकों के लिये, पर्याप्त साहित्य का अभाव है। कई वर्ष से श्री० केलाजी की यह इच्छा रही है कि 'भारतीय शासन' विषयक एक अच्छा बृहद् ग्रन्थ हिन्दी में प्रस्तुत किया जाय, परन्तु अपनी परिस्थिति तथा अधिकांश हिंदी पाठकों की मनोवृत्ति का विचार करते हुए आप यह कहने का साहस नहीं कर सकते कि यह कार्य कब पूरा होगा।

भारतवर्ष के क्षेत्रफल का एक-तिहाई से अधिक तथा भारतीय जनता का पञ्चमांश से अधिक भाग देशी रियासतों का है, जिनका अवशिष्ट (ब्रिटिश) भारत से चोली-दामन का साथ है। कई वर्षों से देशी राज्यों की समस्याओं की ओर अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है और भावी शासन विधान का स्वरूप संघ शासन होने वाला है, जिसमें देशी राज्यों का महत्व-पूर्ण भाग होगा। यह होते हुए भी भारतीय राष्ट्र भाषा हिंदी में इन राज्यों की शासन प्रणाली सम्बन्धी साहित्य कितना कम है। करोड़ों नर नारियों के उत्थान और पतन का प्रश्न है, और उससे सम्बन्धित राजनैतिक साहित्य के प्रति ऐसी उपेक्षा! तीन चार वर्ष पहिले श्री० केलाजी ने देशी राज्यों का शासन-प्रबन्ध लिखने का विचार किया था, कार्य आरम्भ करने पर उसकी गुरुता और कठिनाइयां सामने आयीं, पर्याप्त साधन और सुविधाएं न मिलीं, समय बीतता गया, यहां तक कि नवीन शासन विधान का स्वरूप निश्चित हो जाने की प्रतिक्षा में, उस रचना का विचार स्थगित ही कर देना पड़ा। अभी भी आपको उसकी विस्मृति नहीं हुई है। ऐसे काम हैं, वास्तव में बहुत साधन-सम्पन्न संस्थाओं के करने के; पर वे ध्यान दें, तब न!

यह सोचने पर हमारी वेदना का कुछ अन्त नहीं रहता कि जिस सेना पर दरिद्र भारत अपनी गाढ़ी कमाई के पचास पचपन करोड़ रुपये प्रति वर्ष खर्च करता है, उसके सम्बन्ध में हिन्दी में एक भी पुस्तक नहीं है। 'स्थानीय स्वराज्य' को आरम्भ हुए

पचास वर्ष हो गये, और अब देश उस समय से कहीं आगे बढ़ा हुआ है, पर म्युनिसिपैलिटियों और ज़िला बोर्डों के सम्बन्ध में हमारे पास नाम लेने को भी एक एक अच्छी पुस्तक नहीं है।

जागृति की लहर अब देश के भीतरी भागों में—ग्रामों में—पहुंच रही है। कितने ही राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता अब ग्रामोद्धार के विविध क्षेत्रों में सेवा करने के लिये देहाती जनता से हिल-मिल कर रहने और उनके मध्य में ही अपने आश्रम बनाने लगे हैं। परन्तु उन अल्प शिक्षित ग्रामवासियों को देने के लिये हमारे पास क्या आर्थिक और राजनैतिक साहित्य है, जो हमारी पुस्तकों की 'पंडिताऊ' भाषा समझने में असमर्थ है, जिन्हें हमारे अर्थ-शास्त्र या राजनीति शास्त्र की सिद्धान्तिक बातों या गूढ़ वाद-विवादों में पड़ने की न क्षमता है और न अवकाश ही। सरल सीधी भाषा में कुछ मोटी मोटी बातों का ज्ञान देने वाली अनेक अल्प-मूल्य छोटी छोटी पुस्तकों की अविलम्ब आवश्यकता है। अस्तु, ऐसे शोचनीय हैं, हमारे अभाव! अब, उनकी पूर्ति के लिये कार्य-पद्धति का विचार करें।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन और राजनैतिक साहित्य— सम्मेलन की परीक्षाओं द्वारा अन्यान्य विषयों के साहित्य में राजनैतिक साहित्य को भी कुछ प्रोत्साहन मिला है, इसका उल्लेख पहिले किया जा चुका है। तथापि यह स्वीकार करना होगा कि इस अखिल भारतीय संस्था से इस दिशा में जितना कार्य होना चाहिये था वह नहीं हुआ। वास्तव में बात यह है कि उसने रचना-

कार्य की ओर ध्यान ही नहीं दिया। उसके वार्षिक तथा अन्य अधिवेशनों में हमारे साहित्य-महारथियों को क्या सर्वसाधारणोपयोगी राजनैतिक तथा आर्थिक साहित्य-वृद्धि का विचार नहीं करना चाहिये? महापुरुष लेनिन के शब्दों में 'जिस समय सर्व साधारण रोटी के लिये तरस रहे हों, क्या हम कुछ आदमियों के लिये सुवासित मिठाई का प्रबन्ध करने में लगेंगे?'

कुछ समय से सम्मेलन के अधिवेशन के साथ-साथ कुछ विषयों की परिषदें होरहीं हैं, पर वे होती हैं, केवल साहित्य, विज्ञान, दर्शन और इतिहास की। पुरष्कार भी इन्हीं विषयों के लिये निर्धारित है। राजनीति और अर्थशास्त्र तो 'अस्पृश्य' ही रहे। क्या अभी तक वह समय नहीं आया कि इन विषयों का समुचित महत्व समझा जाय और उन्हें एक स्वतंत्र परिषद में विचार योग्य और पुरष्कार योग्य मानकर, उसकी सम्यग् व्यवस्था की जाय?

विशेष वक्तव्य--निर्धन और पराधीन जनता के लिये साहित्य की एक प्रधान आवश्यकता आर्थिक और राजनैतिक अंगों की होती है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा राष्ट्र-प्रेमी अन्य साहित्यिक तथा शिक्षा सम्बन्धी संस्थाओं को चाहिये कि इन की पूर्ति के लिये भरसक प्रयत्न करें; कुछ योग्य और धुन के पक्के साहित्य सेवी-व्रति असमर्थ लेखकों को उनके निर्वाहार्थ ५०) से लेकर ७५) रु० तक की आवश्यक मासिक वृत्ति देकर अच्छी अच्छी पुस्तकें लिखाएं, और समर्थ सुयोग्य लेखकों से इन विषयों

की रचनाएं प्रस्तुत करने के लिये आग्रह-पूर्वक निवेदन करें। देशी और विदेशी भाषाओं में इन विषयों का जो उपयोगी साहित्य-प्रकाशित हो, उसकी सूची तैयार करते हुए, उसके हिन्दी भाषान्तर का, या छाया या संक्षिप्त अनुवाद कराने का, प्रबन्ध करें। आशा है, प्रयत्न करने पर अन्य संस्थाएं तथा व्यक्ति भी इस कार्य में सहानुभूति दर्शाएंगे और यथा सम्भव सहयोग प्रदान करेंगे। अस्तु, जब कि देश में चहुं ओर स्वराज्य-प्राप्ति की चर्चा तथा आन्दोलन चल रहा है, हमें साहित्य के इन विषयों में स्वावलम्बी होने का भरसक प्रयत्न करना चाहिये।